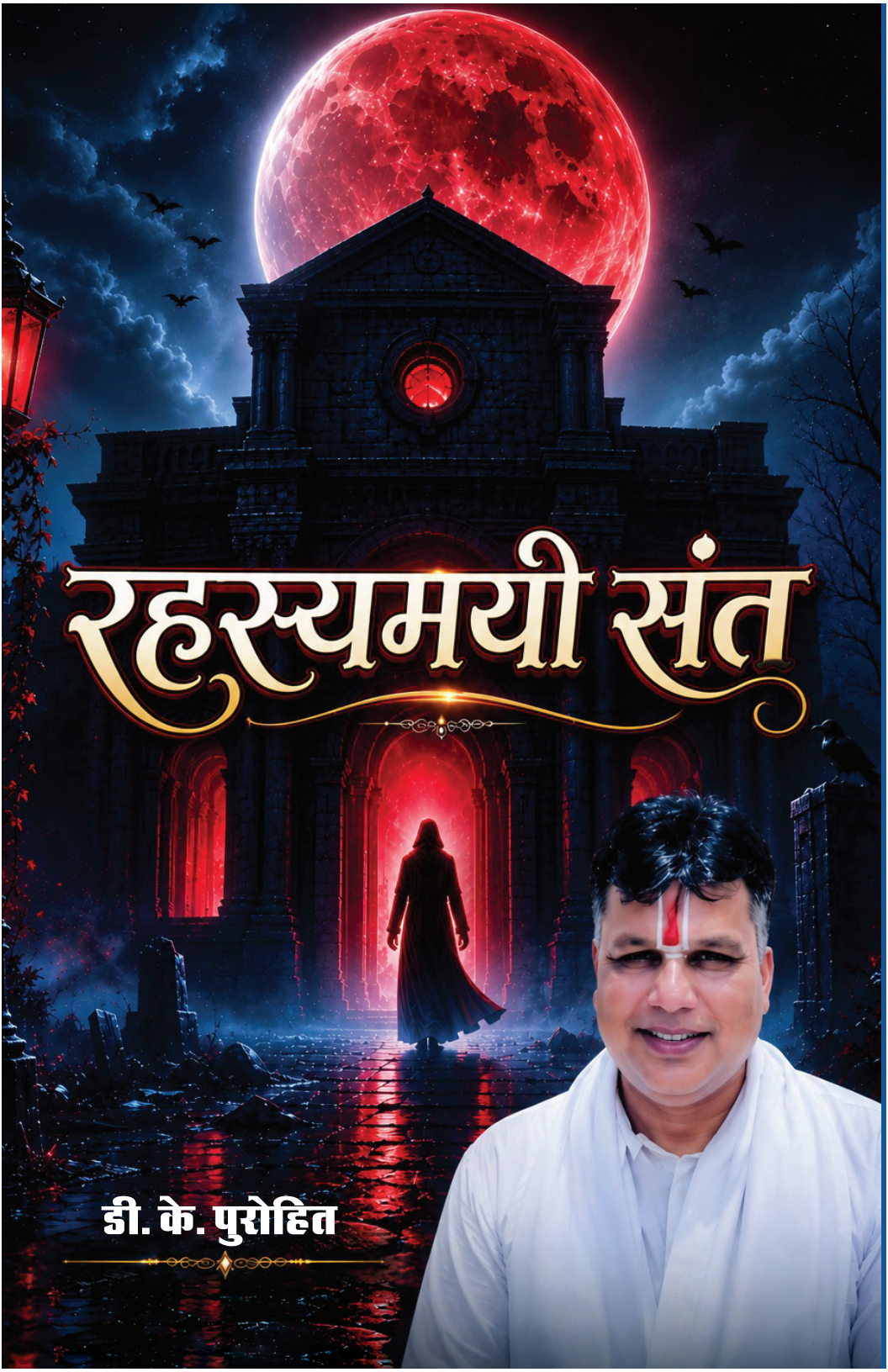




रहस्यमयी संत

डी. के. पुरोहित



आध्यात्मिकता एक अत्यंत व्यक्तिगत यात्रा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ ऐसे अनुभवों से गुजरता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना सरल नहीं होता। ये अनुभव मन, आत्मा और ईश्वर के बीच स्थापित उस सूक्ष्म संवाद का हिस्सा होते हैं, जिन्हें अक्सर व्यक्ति अपने भीतर ही संजोकर रखता है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपने इन अंतरंग अनुभवों को साहसपूर्वक शब्दों का रूप देकर समाज के साथ साझा करते हैं।

दिलीप पुरोहित की पुस्तक 'रहस्यमयी संत' इसी साहस और संवेदनशीलता का सुंदर उदाहरण है। यह केवल किसी संत के जीवन या घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि लेखक के आध्यात्मिक अनुभवों, भावनाओं और विश्वासों की अभिव्यक्ति है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की आस्था और आध्यात्मिक मान्यताएँ भिन्न हो सकती हैं, इसलिए इस प्रकार का लेखन एक विशेष संवेदनशीलता और आत्मविश्वास की मांग करता है।

अंशु हर्ष,
वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका

रहस्यमयी संत

स्वामी पंकजप्रभु

रहस्यमयी संत

स्वामी पंकजप्रभु

डी. के. पुरोहित

ग्रुप एडिटर, उदित भास्कर डॉट कॉम और राइजिंग भास्कर डॉट कॉम



लोटस ब्लूम पब्लिकेशन

4 स 21 प्रताप नगर, जोधपुर, राजस्थान, भारत

email: lotusbloompublication@gmail.com |

+ 971505872314 (दुबई)

+ 917568333120 (भारत)

शीर्षक :
रहस्यमयी संत
लेखक :
डी.के. पुरोहित
प्रकाशक :
लोटस ब्लूम पब्लिकेशन
प्रकाशन का पता :
लोटस ब्लूम पब्लिकेशन
4 स 21 प्रताप नगर, जोधपुर, राजस्थान, भारत
email: lotusbloompublication@gmail.com |
+ 971505872314 (दुबई)
+ 917568333120(भारत)
संस्करण :
प्रथम जून 2026
मुद्रक :
अमन बुक प्रिंट, दिल्ली
आईएसबीएन:
978-81-688054-0-8
सर्वाधिकार
डी.के. पुरोहित
मूल्य :
तीन सौ निन्यानवे रुपये (₹ 399.00)

Disclaimer

While every effort has been made to avoid any error or omission in this publication. In spite of this, being human errors may creep. Any mistake, error or discrepancy noted might be brought to our notice, which shall be taken care in the next edition. This responsible for any damage of any kind, in any manner their form all disputes are subject to jodhpur jurisdiction only.

RAHASHYMAI SANT
Written By: **D. K. Purohit**



मेरी बात

25 मई 2023 अचानक इस पुस्तक के लेखक और राइजिंग भास्कर और उदित भास्कर के ग्रुप एडिटर दिलीप कुमार पुरोहित यानी डीके पुरोहित से एक रहस्यमयी संत मानसिक तरंगों के जरिए संपर्क करते हैं। वे कहते हैं कि उनका नाम स्वामी पंकजप्रभु हैं। वे जैन संत हैं। मेरी आंखों के सामने एक तस्वीर प्रकट होती है। यह वही तस्वीर होती है जो सीनियर आईपीएस अधिकारी पंकज चौधरी की जिन्होंने अपनी किसी तीर्थयात्रा से संबंधित मेरे साथ शेयर की थी। थोड़ी ही देर में मेरी आंखों के आगे से वो तस्वीर ओझल हो जाती है।

स्वामी पंकजप्रभु की आवाजें मेरे कानों में आती है। मैं पंकजप्रभु बोल रहा हूं। मेरा जन्म कहां हुआ कोई नहीं जानता। मेरे गुरु कौन है कोई नहीं जानता। मेरा आश्रम कहां है किसी को नहीं पता। मैं सिर्फ मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देता हूं। इस धरती पर एक विचित्र लीला शुरू होने वाली है और एक महान कार्य के लिए आपका चयन किया गया है।

जो तस्वीर मैं आपको बता चुका हूं इसे तुम उपयोग में लो और किसी से कुछ न कहो। मेरा रूप क्या है? अभी किसी को पता नहीं चलेगा। समय आने पर मैं दुनिया के सामने प्रकट होऊंगा। तब तक पंकजप्रभु के रूप में इसी तस्वीर का उपयोग करो। किसी से कोई सवाल जवाब मत करो। जैसा मैं कहता हूं करते जाओ। और पंकजप्रभु के मानसिक तरंगों के जरिए लिखवाए प्रवचन की पहली कड़ी उदित भास्कर डॉट कॉम पर पहली बार प्रकाशित हुई 25 मई 2023 को। 26 मई 2023 को भी प्रवचनों की दूसरी कड़ी प्रकाशित हुई। उसके बाद उदित भास्कर डॉट कॉम किसी ने हैक कर लिया और हमारा पंकजप्रभु से मानसिक तरंगों के रूप में संपर्क भी टूट गया। काफी समय तक उदित

भास्कर डॉट कॉम हैक रहा। फिर हमने नया न्यूज पोर्टल बनाया राइजिंग भास्कर डॉट कॉम। इस पोर्टल पर 21 फरवरी 2024 को सुबह 6:41 बजे हमने एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी- समय संक्रमण काल का, दुनिया में खूब उथलपुथल होगा : भारत का नव अभ्युदय होगा यह बात भी पंकजप्रभु ने कही थी। इसके बाद 19 मई 2024 को सुबह 3:46 बजे हमने एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी- राम फिर भारत भूमि पर अवतरित हो चुके हैं, इस बार उनके हाथ में कलम है यह प्रवचन भी पंकजप्रभु ने मानसिक तरंगों के जरिए लिखवाए थे। इसके बाद 11 जुलाई 2024 को स्वामी पंकजप्रभु ने हमसे फिर मानसिक तरंगों के जरिए संपर्क किया और कहा कि 17 जुलाई से चातुर्मास शुरू हो रहे हैं और वे अपने आश्रम में चातुर्मास करेंगे और प्रतिदिन मानसिक तरंगों के जरिए चार माह तक प्रवचन लिखवाएंगे। इस तरह 17 जुलाई से 2 अगस्त तक पंकजप्रभु ने राइजिंग भास्कर डॉट कॉम पर अपने प्रवचन मानसिक तरंगों के जरिए लिखवाए।

इस बीच राइजिंग भास्कर में तकनीकी प्रॉब्लम आने के कारण 23 जुलाई को प्रवचन उदित भास्कर डॉट कॉम पर प्रकाशित किए गए। 3 अगस्त से 26 अगस्त तक स्वामी पंकजप्रभु 24 तीर्थकरों की साधना करने के लिए चले गए और 24 दिन तक प्रवचन नहीं दिए। फिर 27 अगस्त को उन्होंने संपर्क किया और प्रवचन दिए। उनके अंतिम प्रवचन 28 अगस्त को हुए और उन्होंने कहा कि अब उनके लिए मानसिक तरंगों के रूप से संपर्क करना संभव नहीं रहा क्योंकि ब्रह्मांड के एटमासफियर में कुछ व्यवधान आ गया है और स्वामी पंकजप्रभु अनिश्चितकाल के लिए मौन में चले गए। उन्होंने कहा कि जरूरत पड़ेगी तो अपने आप फिर से संपर्क कर लेंगे। गौरतलब है कि www.uditbhaskar.com और risingbhaskar.com नाम से दो न्यूज पोर्टल मैं अपनी धर्मपत्नी राखी पुरोहित के नाम से चलाता हूं। वो इन न्यूज पोर्टल की एडिटर इन चीफ और मैं ग्रुप एडिटर हूं। तो इस पुस्तक में स्वामी पंकजप्रभु ने मानसिक तरंगों के जरिए जो प्रवचन लिखवाए हैं उसमें बिना कोई संशोधन किए उसे उसी रूप में किताब के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।

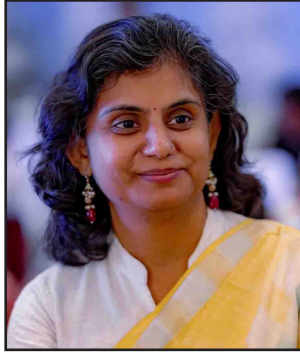
(डीके पुरोहित)

ग्रुप एडिटर उदित भास्कर डॉट कॉम और राइजिंग भास्कर डॉट कॉम

2 ग 16 मधुबन हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर 342005

मोबाइल 9783414079, 9340931517

ईमेल : diliprakhai@gmail.com



भूमिका

आध्यात्मिकता एक अत्यंत व्यक्तिगत यात्रा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ ऐसे अनुभवों से गुजरता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना सरल नहीं होता। ये अनुभव मन, आत्मा और ईश्वर के बीच स्थापित उस सूक्ष्म संवाद का हिस्सा होते हैं, जिन्हें अक्सर व्यक्ति अपने भीतर ही संजोकर रखता है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपने इन अंतरंग अनुभवों को साहसपूर्वक शब्दों का रूप देकर समाज के साथ साझा करते हैं।

दिलीप पुरोहित की पुस्तक “रहस्यमयी संत” इसी साहस और संवेदनशीलता का सुंदर उदाहरण है। यह केवल किसी संत के जीवन या घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि लेखक के आध्यात्मिक अनुभवों, भावनाओं और विश्वासों की अभिव्यक्ति है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की आस्था और आध्यात्मिक मान्यताएँ भिन्न हो सकती हैं, इसलिए इस प्रकार का लेखन एक विशेष संवेदनशीलता और आत्मविश्वास की मांग करता है।

यह पुस्तक लेखक के लिए एक भावनात्मक और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है, वहीं पाठकों के लिए आत्मचिंतन, अनुभूति और आध्यात्मिक रहस्यों को समझने का एक रोचक अनुभव बन सकती है।

अंशु हर्ष,

वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका, जयपुर।

मोबाइल : 9413401555



मेरे मन की बात

श्री डी.के. पुरोहित की पुस्तक “रहस्यमयी संत” अपने शीर्षक से ही पाठक के मन में जिज्ञासा, कौतूहल और आकर्षण उत्पन्न करती है। “रहस्य” और “संत”—ये दोनों शब्द भारतीय मानस में गहरे बसे हुए हैं। एक ओर संत परंपरा आस्था, साधना, करुणा और लोककल्याण से जुड़ी रही है, वहीं दूसरी ओर रहस्य का तत्व पाठक को अनदेखे, अनजाने और अदृश्य संसार की ओर खींचता है।

यह कृति केवल किसी संत या रहस्यमयी घटना का वर्णन मात्र नहीं लगती, बल्कि मनुष्य के विश्वास, जिज्ञासा और सत्य की खोज को भी स्पर्श करती प्रतीत होती है।

श्री पुरोहित लंबे समय तक पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं, इसलिए उनकी लेखनी में खोजी दृष्टि, सामाजिक अनुभव और यथार्थपरक अवलोकन स्वाभाविक रूप से दिखाई देता है। “रहस्यमयी संत” जैसी पुस्तक में पत्रकार की तथ्यपरक दृष्टि और साहित्यकार की कल्पनाशीलता दोनों का मेल पाठक को एक विशिष्ट अनुभव दे सकता है।

इस संदर्भ में प्रख्यात चिंतक प्रोफेसर हिम्मत सिंह सिन्हा का मत भी उल्लेखनीय है। उनका विचार था कि ईश्वर कोई बाहरी सत्ता नहीं होता, बल्कि मनुष्य की आंतरिक चेतना, विवेक, कर्म और नैतिकता ही जीवन को दिशा देते हैं। उनके इस दृष्टिकोण को पुस्तक के संदर्भ में जोड़कर देखा जाए तो “रहस्यमयी संत” केवल अंधविश्वास या चमत्कार की कथा न होकर आस्था और तर्क, विश्वास और विवेक, रहस्य और यथार्थ के बीच संवाद स्थापित करने वाली रचना के रूप में भी देखी जा सकती है।

संत का अर्थ केवल चमत्कार करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि वह मनुष्य भी हो

सकता है जो अपने आचरण, विचार और कर्म से समाज को नई दिशा दे। इसी प्रकार रहस्य का अर्थ केवल अलौकिक घटना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी हुई चेतना, संवेदना और नैतिक शक्ति भी हो सकती है।

इस प्रकार “रहस्यमयी संत” को एक ऐसी कृति माना जा सकता है, जिसमें रहस्य, आध्यात्म मानवीय संवेदना और विचारों की गहराई का संगम है। यह पुस्तक पाठक को केवल रोमांचित नहीं करती, बल्कि उसे यह सोचने के लिए भी प्रेरित करती है कि सच्चा संतत्व बाहरी चमत्कारों में है या मनुष्य के भीतर जागृत करुणा, सत्य और विवेक में है।

पुस्तक में यह भाव प्रमुखता से उभरता है कि मानवीय तरंगों के माध्यम से श्री पुरोहित को ये संदेश प्राप्त होते हैं जो मनुष्य की आंतरिक संवेदना, चेतना और सूक्ष्म अनुभूति की ओर संकेत करता है। इस प्रकार यह कृति पाठक को बाहरी रहस्यों के साथ-साथ अपने भीतर छिपे रहस्यलोक को भी समझने के लिए प्रेरित करती है।

श्री डी.के. पुरोहित की यह रचना उनके साहित्यिक सफर में एक महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हो। उनकी लेखनी इसी प्रकार सत्य, संवेदना और कल्पना के नए आयाम स्पर्श करती रहे और वे पत्रकारिता और साहित्य दोनों क्षेत्रों में निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करें यही कामना है।

के बी व्यास

सी ई ओ, लोटस ब्लूम पब्लिकेशंस

फ़ोन : +917568333120 (भारत)

+971505872314 (दुबई)

अनुक्रम

1.	उद्घोषणा	13
2.	ईश्वर	15
3.	आकाश	19
4.	पृथ्वी	23
5.	अग्नि	28
6.	वायु	32
7.	जल	36
8.	सुख-दुख	41
9.	सत्य	47
10.	शक्ति	52
11.	पुरुषार्थ	57
12.	आनंद	63
13.	अहंकार	68
14.	युग	73
15.	ध्यान	79
16.	पागल	84
17.	गुरु	90
18.	अंधकार	95
19.	24 दिन ब्रेक	101
20.	साधना	102
21.	जिंदगी-मौत	107



11 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

उद्घोषणा

प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकज प्रभु महाराज का चातुर्मास 17 से, मानसिक तरंगों से देंगे चार माह तक प्रवचन

अद्भुत संत की अनसुलझी गुत्थी, पर विश्वास तो करना ही पड़ेगा,
क्योंकि संतों के पास ही सिद्धियां होती हैं

प्रख्यात जैन संत परम पूज्य पंकज प्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से अपने आश्रम में शुरू होगा। वे हमें मानसिक तरंगों के जरिए चार माह तक प्रवचन देंगे।

गौरतलब है कि हमने साल भर पहले विख्यात जैन संत परम पूज्य स्वामी पंकज प्रभु महाराज के प्रवचनों की श्रृंखला शुरू की थी। दो प्रवचनों की कड़ी हमने उदित भास्कर डॉट कॉम पर प्रकाशित की थी। बाद में हमारा पोर्टल किसी ने हैक कर दिया था। हमारा स्वामीजी से कॉन्टैक्ट भी टूट गया था। स्वामीजी का जन्म कहां हुआ किसी को नहीं पता। उनके गुरु कौन हैं? उनका आश्रम कहां है? ये सब बातें किसी को नहीं पता है। वे सिर्फ मानसिक संदेशों के जरिए अपनी बात लोगों तक पहुंचाते हैं। स्वामीजी से पिछली बार हमारा संपर्क 19 मई को हुआ था। अब स्वामीजी ने एक बार फिर हमसे संपर्क किया है और बताया है कि वे 17 जुलाई से अपने आश्रम में चातुर्मास शुरू करने जा रहे हैं। उनका आश्रम कहां है, इसकी किसी को जानकारी नहीं है। स्वामीजी के बारे में हमें अधिक जानकारी भी नहीं है। उनका वास्तविक स्वरूप किसी ने नहीं देखा है। उन्होंने पहली बार हमसे संपर्क किया तब एक तस्वीर सामने आई थी उसी का हम बार-

बार उपयोग कर रहे हैं। इस तस्वीर में स्वामीजी के तिलक लगा हुआ है और स्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं। बैकग्राउंड में किसी तीर्थ स्थल सा नजारा है। लेकिन हम इस फोटो पर विश्वास करते हुए पाठकों के लिए जारी कर रहे हैं। चूंकि स्वामीजी के वास्तविक स्वरूप को किसी ने नहीं देखा है इसलिए इस तस्वीर में उनकी झलक देखी जा रही है। हालांकि जैन संत तिलक वगैरह नहीं लगाते हैं मगर इस फोटो में उनके तिलक लगा हुआ है। भविष्य में स्वामीजी किस रूप में सामने आते हैं या आते भी नहीं है, कह नहीं सकते। पर स्वामीजी के मानसिक रूप से संपर्क करने और उनकी बातों पर हम भरोसा करते हैं। क्योंकि संतों के पास अद्भुत सिद्धियां होती हैं। इन अद्भुत संत की अनसुलझी गुथी भविष्य में कैसे सुलझेगी फिलहाल इस पर बहस नहीं कर रहे। हां, स्वामीजी राइजिंग भास्कर के पाठकों के लिए चार माह तक प्रतिदिन प्रवचन देंगे। ये प्रवचन हमें मानसिक संदेश के जरिए भेजे जाएंगे जिसे हम पाठकों के सम्मुख रखेंगे। स्वामीजी ने कहा है कि वे प्रतिदिन किसी शब्द पर अपने प्रवचन केंद्रित रखेंगे और पहले दिन 'ईश्वर' शब्द पर प्रवचन देंगे।





17 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

ईश्वर

आदिनाथ से लेकर महावीर तक जिनके अंश हैं, जो न हिंदू है, न मुसलमान है,
न ईसाई है, जो धर्म-जात से परे संपूर्ण शाश्वत हैं, ऐसे श्रीकृष्ण ही

संपूर्ण ईश्वर हैं : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास बुधवार से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकज प्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं, जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं।

वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं हैं। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई

सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि पहला प्रवचन वे 'ईश्वर' शब्द पर देंगे। वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। प्रवचनों की पहली कड़ी में पेश है 'ईश्वर' शब्द पर उनके प्रवचन।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

हे मानव ! ईश्वर के बारे में ईश्वर ही कुछ बता सकता है। ईश्वर की जब किसी पर विशेष कृपा होती है तभी ईश्वर को कोई जान सकता है। जब महाभारत का युद्ध शुरू होता है और कुरुक्षेत्र में अर्जुन हथियार नहीं उठा पाते तब जो स्वरूप अर्जुन को दिखाया गया- दरअसल वही ईश्वर का असली स्वरूप है। ईसा मसीह, मुहम्मद साहब, नानक, बुद्ध और चाहे कोई ईश्वरीय स्वरूप रहे हों, वे ईश्वर नहीं उनके स्वरूप हैं। श्रीकृष्ण ही असली ईश्वर हैं। संपूर्ण ईश्वर हैं। इस जगत में समय-समय पर कई अवतार हुए। आज उन्हें दुनिया अलग अलग धर्मों में अलग अलग रूप में पूजती है। आराधना करती है। इबादत करती है। मगर ईश्वर का असली स्वरूप केवल अर्जुन ने अपनी आंखों से देखा है। या फिर श्रीकृष्ण ने दूत कार्य के दौरान अपना विराट स्वरूप दिखाया है। श्रीकृष्ण प्रेम के देवता है। श्रीकृष्ण राजनीति के ज्ञाता हैं। श्रीकृष्ण मायावी है। श्रीकृष्ण त्रिकालदर्शी हैं। श्रीकृष्ण छलिया हैं। श्रीकृष्ण के वे सभी स्वरूप है जो शिशुपाल ने गाली रूप में ही सही उनके बारे में कहे हैं, मगर ये श्रीकृष्ण खुद तय करते हैं कि किसको क्या सजा देनी है। वे हर बात का न्याय अपने ढंग से करते हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण के सामने जितने भी लोग हैं उनकी कहानियां श्रीकृष्ण उनके जन्म के साथ ही लिख देते हैं। कंस की कहानी उसके जन्म के साथ श्रीकृष्ण ने लिख दी थी। कौरवों का संहार कैसे होना है, इसकी कहानी श्रीकृष्ण ने उनके जन्म के समय ही लिख दी थी। श्रीकृष्ण ऐसे देवता हैं जो हर क्षण जागृत रहते हैं। वे मन की बात जान लेते हैं। उनके स्वरूप को सामान्य आंखों से नहीं देखा जा सकता। श्रीकृष्ण ही ईश्वर का पूर्ण स्वरूप हैं। श्रीकृष्ण का देवत्व स्वरूप में नहीं बंधा है। जो हम टेलीविजन पर श्रीकृष्ण की छवि बनाए हुए हैं, दरअसल वे श्रीकृष्ण नहीं हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण का स्वरूप कोई देख नहीं पाया है। उसे केवल अर्जुन ही देख पाया है। मगर इस स्वरूप को जानना है तो गीता का सार समझना होगा। वाकई गीता श्रीकृष्ण का

स्वरूप है। जब यह जगत नहीं रहेगा तब भी श्रीकृष्ण का स्वरूप रहेगा। 24 तीर्थकरों का वास भी श्रीकृष्ण में है। आदिनाथ से लेकर महावीर तक श्रीकृष्ण के ही अंश हैं। हे मानव मैं तुम्हें इस गूढ़ रहस्य से अवगत करवा रहा हूँ कि ईश्वर और कोई नहीं साक्षात् श्रीकृष्ण ही है।

वैसे देखा जाए तो श्रीकृष्ण शून्य हैं। शून्य ही परमशक्तिमान सत्ता है। इस शून्य में पूरा ब्रह्मांड समाया हुआ है। यह शून्य दरअसल चैतन शक्ति है। चेतन शक्ति ही श्रीकृष्ण है। श्रीकृष्ण चेतन स्वरूप में भी है और अवचेतन स्वरूप में भी। श्रीकृष्ण पदार्थ के हर रूप में है और पदार्थ से परे भी हैं। पदार्थ होता है तो नष्ट होना उसका गुण होता है, मगर श्रीकृष्ण पदार्थ होते हुए भी पदार्थ नहीं है, इसलिए वे नष्ट नहीं हो सकते। मगर श्रीकृष्ण जब चाहे पदार्थ का रूप धारण कर सकते हैं। श्रीकृष्ण की व्याख्या तो स्वयं श्रीकृष्ण ही कर सकते हैं। हमें साधना से जो कुछ अर्जित हुआ है वही हम ज्ञान आप तक पहुंचा रहे हैं। हमने हमेशा श्रीकृष्ण की साधना की है। श्रीकृष्ण को ही हमने संपूर्ण ईश्वर के पूर्ण स्वरूप में देखा है। इसलिए हे मानव अगर किसी को पूजना है तो ईश्वर को पूजो। ईश्वर की साधना करो- श्रीकृष्ण की साधना करो। श्रीकृष्ण ही इस जगत के पालक हैं। सारा जगत श्रीकृष्ण के इशारों पर चलता है। इस सृष्टि का संचालनकर्ता श्रीकृष्ण ही हैं। श्रीकृष्ण हिंदू है? श्रीकृष्ण धर्म-जात से परे हैं। श्रीकृष्ण किसी धर्म विशेष से बंधे नहीं हैं। श्रीकृष्ण तो ऐसी शक्ति है जो समय-समय पर हर धर्म में अवतार लेती रही। इसलिए हे मानव हम जिस श्रीकृष्ण की बात कर रहे हैं वो ना तो हिंदू है, ना मुसलमान है, ना ईसाई है, ना सिख है और ना ही बौद्ध है। श्रीकृष्ण तो संपूर्ण मानवता के संरक्षक है। श्रीकृष्ण को समझना है तो दूध में मलाई, छाछ में मक्खन को समझना होगा। ईश्वर हमेशा अदृश्य रहते हैं। मगर उन्हें दूध की तरह गर्म करके मलाई रूप में देखा जा सकता है। उन्हें छाछ को मथकर मक्खन की तरह देखा जा सकता है। सूरदास ने श्रीकृष्ण को अंधी आंखों से देखा है। रसखान ने उन्हें करीब से देखा है। रसखान मुसलमान थे, लेकिन उन्होंने श्रीकृष्ण की साधना की। वास्तव में श्रीकृष्ण किसी धर्म से बंधे नहीं है। सारे धर्म श्रीकृष्ण से शुरू होते हैं और श्रीकृष्ण में आकर समाहित हो जाते हैं। हम जो बात आपको श्रीकृष्ण के बारे में बता रहे हैं वो प्रायोजित नहीं है। हम ना ही झूठ बोल रहे हैं। हमने श्रीकृष्ण को देखा है। हमने उस पदार्थ को देखा है जो पदार्थ नहीं है और पदार्थ हैं भी। क्योंकि श्रीकृष्ण ही चेतन्य शक्ति है जो पदार्थ के सभी गुण रखते हुए भी पदार्थ से परे हैं। जब-जब धरती पर संकट आएगा श्रीकृष्ण फिर से अवतार लेंगे। वे किसी भी रूप में आ सकते हैं। श्रीकृष्ण ऐसा शक्ति पुंज है जिसमें असंख्य सूरज से ज्यादा आग है। श्रीकृष्ण ऐसा शक्तिपुंज है जिसमें करोड़ों परमाणु से ज्यादा ताकत है। श्रीकृष्ण ही ब्रह्मांड को अपने

भीतर समाहित किए हुए हैं। जब-जब इस जगत की कहानी लिखी जाएगी, श्रीकृष्ण की कहानी जीवंत होगी। क्योंकि यह जगत मिथ्या हो सकता है श्रीकृष्ण नहीं। जगत का नाश हो सकता है श्रीकृष्ण का नहीं। इस जगत के जगदीश्वर केवल श्रीकृष्ण हैं।

हे मानव, आज इस परम सत्य को जान लो कि श्रीकृष्ण ही ईश्वर है। हो सकता है मुस्लिम धर्म के लोग श्रीकृष्ण को ईश्वर नहीं मानते हो। ईसाई धर्म के लोग श्रीकृष्ण को ईश्वर ना मानते हो। मगर इससे सत्य मिथ्या नहीं हो जाता। आदिनाथ से लेकर महावीर तक सभी 24 तीर्थंकर श्रीकृष्ण का अंश हैं। श्रीकृष्ण इस ब्रह्मांड के रचयिता है। श्रीकृष्ण में ही दुनिया की सारी शक्तियां समाहित है। श्रीकृष्ण में ही प्रलय है। श्रीकृष्ण में ही लय है। श्रीकृष्ण में रंग है। श्रीकृष्ण में ही गंध है। श्रीकृष्ण में ही सुर है। श्रीकृष्ण में शब्द है। श्रीकृष्ण में शस्त्र हैं। श्रीकृष्ण में ही शास्त्र हैं। श्रीकृष्ण ही आरंभ है। श्रीकृष्ण ही अंत है। श्रीकृष्ण अंत के बाद अनंत भी है। श्रीकृष्ण का सफर कभी खत्म नहीं होता। श्रीकृष्ण को जानना संभव नहीं है। श्रीकृष्ण बांसुरी में है। श्रीकृष्ण गौधन में है। श्रीकृष्ण गोवर्धन में है। श्रीकृष्ण राधा में है। श्रीकृष्ण गोप-गोपियों में हैं। श्रीकृष्ण रुक्मणि में है। श्रीकृष्ण जेल में है। श्रीकृष्ण में ही जेल है। श्रीकृष्ण बंधन है। श्रीकृष्ण बंधन से परे है। श्रीकृष्ण चक्रधारी है। श्रीकृष्ण सर्पधारी है। श्रीकृष्ण ही साक्षात् ब्रह्मा है। श्रीकृष्ण एक हैं, मगर सारे स्वरूप श्रीकृष्ण के स्वरूप ही है। इसलिए हे मानव ! श्रीकृष्ण के स्वरूप को नमन करो। श्रीकृष्ण की अगुवानी करो। श्रीकृष्ण की भक्ति करो। श्रीकृष्ण का ध्यान करो। श्रीकृष्ण को ही अपने भीतर धारण करो। श्रीकृष्ण से ही जन्म है। श्रीकृष्ण से ही अंत है। श्रीकृष्ण की तृष्णा अगर मन में रखोगे तो कभी प्यासे नहीं रहोगे। जगत की प्यास कभी नहीं बुझती, मगर श्रीकृष्ण नाम का रसपान करने के बाद कभी प्यास लगती नहीं। हे मानव ! मैं ऐसे श्रीकृष्ण को अपने हृदय में धारण करते हुए आज उन्हें प्रणाम करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। जयश्री कृष्ण।





18 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

आकाश

**आकाश की तरह लिखो जीवन की कहानी, यह परमतत्व कभी नष्ट नहीं होता,
इसके बगैर सृष्टि का निर्माण संभव ही नहीं था : पंकजप्रभु**

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन हैं? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते

आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। जैसा कि यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल। तो आज आकाश तत्व पर स्वामीजी के प्रवचन केंद्रित हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

आकाश। आकार में जो अनंत है। जिसका कोई छोर नहीं है। आकाश तत्व के बगैर सृष्टि का निर्माण संभव नहीं था। आकाश तत्व के बगैर शरीर का निर्माण भी संभव नहीं था। आकाश जो शरीर में सूक्ष्म तत्व में समाहित रहता है। मनुष्य शरीर ही नहीं जीव मात्र में आकाश तत्व की प्रधानता है। आकाश अपने आगोश में प्रश्रय देता है- इस जगत को। बाकी के सारे तत्व आकाश तत्व में विचरण करते हैं। आकाश तत्व ही मूल तत्व है और शेष तत्व पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी आकाश तत्व के अंश है। यह कह सकते हैं आकाश सत्ता है और शेष तत्व उसकी शाखाएं। ये पांचों तत्व मिलकर शरीर का निर्माण करते हैं। इसे ही जगत पंचभूत कहता है। शास्त्रों में जिसे शरीर निर्माण के पंच तत्व कहा गया है। आकाश को मापना संभव नहीं है। आकाश असीमित है। अनंत है। आकाश चांद, तारों और सूर्य का प्रश्रय दाता है। ग्रह नक्षत्र जहां रमण करते हैं। आकाश पिता है। आकाश संरक्षकदाता है। आकाश तत्व जब हम अपने गुणों में धारण करते हैं तो देवत्व जाग उठता है। दरअसल देवताओं में आकाश का गुण होता है। आकाश का विचार जब शरीर में स्वभाव के रूप में प्रवेश कर जाता है तो मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ने लगता है। हर देवता आकाश है। मगर आकाश देवता नहीं है। क्योंकि देवता जिसे ईश्वर कहें आकाश से परे सत्ता है। आकाश के पार जो देख सकता है वही ईश्वर है। वही परमसत्ता है।

आकाश हमें जीवन का मकसद देता है। आकाश हमें उड़ान का विकल्प देता है। आकाश हमें स्वतंत्रता देता है। आकाश हमें हौसला देता है। आकाश हमें शक्ति देता है। आकाश हमें भक्ति देता है। आकाश हमें विरक्ति देता है। आकाश हमें साधना देता है। आकाश हमें साधन देता है। आकाश हमें चिंतन देता है। आकाश हमें चरित्र देता है। आकाश हमें उद्देश्य देता है। आकाश हमें परिदृश्य देता है। आकाश हमें अवकाश देता है। आकाश हमें गतिशीलता देता है। आकाश हमें निरंतरता देता है। आकाश हमें आकार

देता है। आकाश हमें उदारता देता है। आकाश हमें विस्तार देता है। आकाश देता ही देता है। आकाश का गुण आकाश में ही समाहित है। आकाश कभी कभी भ्रम लगता है। क्योंकि आकाश के विस्तार को, आकाश की अनंतता को हम देख नहीं पाते। कहते हैं आशा पर आकाश टिका है। यही आशा आकाश है। मगर आकाश भ्रम क्यों लगता है? भ्रम वो है जो हम देख नहीं पाते या जिसके बारे में हम अंदाजा नहीं लगा सकते। लेकिन जिसका अंदाजा हम लगा नहीं पाते वो हमारी कमजोरी है, जरूरी नहीं कि जिसका हम अंदाजा नहीं लगा पाते वो भ्रम हो। इसलिए आकाश को भ्रम नहीं कह सकते। आकाश भ्रम लगता जरूर है। मगर आकाश तत्त्व अनंत है। बगैर आकाश के इस ब्रह्मांड और इस जगत का निर्माण संभव नहीं था। आकाश तत्त्व अपने आप में संपूर्ण ब्रह्मांड नहीं है। लेकिन आकाश तत्त्व इस ब्रह्मांड का एक पार्ट है। अक्सर आकाश को ही ब्रह्मांड कह दिया जाता है। जबकि ब्रह्मांड एक ऐसा तत्त्व है जो पंच महाभूत के साथ-साथ समूची सृष्टि को अपने में समाहित किए हुए है। मगर यही ब्रह्मांड ईश्वर में समाहित होता है। ब्रह्मांड जिसमें रमण करता है वही ईश्वर है। इसलिए आकाश, ब्रह्मांड और ईश्वर को समझना जरूरी है। बगैर आकाश के शरीर और ब्रह्मांड का निर्माण संभव नहीं था। मगर ईश्वर के बगैर आकाश और ब्रह्मांड का निर्माण संभव नहीं था।

आकाश हमेशा ऊंचाई की ओर हो यह जरूरी नहीं। हमारे आसपास भी आकाश है। आकाश हमारे भीतर है। यह शरीर आकाश तत्त्व को अपने भीतर धारण किए हुए होता है। आकाश कभी नष्ट नहीं होता। आकाश तत्त्व होते हुए भी इसमें नष्ट होने के गुण नहीं होते। क्योंकि आकाश तत्त्व में भी अत्यंत सूक्ष्म तत्त्व होता जिसे परमतत्त्व कह सकते हैं। और परमतत्त्व कभी नष्ट नहीं होता। इसलिए आकाश कभी नष्ट नहीं होगा। जब जगत नहीं रहेगा तब भी आकाश रहेगा। एक शून्य की तरह। कहते हैं जब सृष्टि का निर्माण नहीं हुआ था तो आकाश भी नहीं था। पानी, हवा, अग्नि, पृथ्वी कुछ नहीं था। लेकिन हम कहते हैं कि आकाश हर समय विद्यमान रहा है। आकाश आरंभ से ही रहा है। क्योंकि आकाश परमतत्त्व में से एक है। आकाश परफेक्ट है। आकाश अकेला तत्त्व होते हुए भी सभी तत्वों का प्रश्रयदाता है। इसलिए यह कहना कि सृष्टि के निर्माण से पहले आकाश नहीं था, गलत है, क्योंकि आकाश शुरू से ही था। किस रूप में था उसे परिभाषित करें तो कह सकते हैं कि आज के स्वरूप में बेशक ना हो क्योंकि तब प्रकाश नहीं था। इसलिए आकाश को देखना संभव नहीं था। मगर आकाश शुरू से ही था। आकाश के बाद ही सृष्टि ने आकार लिया। अगर आकाश नहीं होता तो इस जगत का और इस सृष्टि का निर्माण संभव नहीं था।

दरअसल आकाश विश्वास है। आकाश का विश्वास न होता तो सृजन की पौष अंकुरित नहीं होती। अब जब बात चली है तो बता दें कि इस सृष्टि का निर्माण बिंग बैंग थ्योरी से नहीं हुआ है। साइंस कहता है कि सूर्य में विस्फोट हुआ और जीवन का निर्माण हुआ। सृष्टि का निर्माण हुआ। हम यह कहते हैं कि सृष्टि का निर्माण बिंगबैंग थ्योरी से नहीं अंकुरण से हुआ है। बीज हमेशा अंकुरित होता है। मां हमेशा अपनी संतान को जन्म विस्फोट से नहीं देती। बीज ही अंकुरित होता है और संतान का जन्म होता है। इसलिए आकाश तत्व को जितना जानना जरूरी है उतना ही चलते-चलते यह भी जानना जरूरी है कि इस जगत में जीवन की शुरुआत विस्फोट से नहीं अंकुरण से हुई है। बीज हमेशा अंकुरित होता है। विस्फोट से कभी सृजन नहीं होता। सृजन के लिए हमेशा अंकुरण जरूरी है। इसलिए हम आज सारी साइंस की थ्योरी को चुनौती देते हैं और स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जीवन की शुरुआत सूर्य में विस्फोट से नहीं हुई बल्कि बीज के अंकुरण से हुई है। विस्फोट से तत्वों का बिखराव तो हो सकता है, मगर सृजन नहीं हो सकता। जीवन के लिए बीज तत्व का होना जरूरी है। इसी बीज तत्व में पांचों पंचभूत विद्यमान होते हैं। बीज तत्व में भी आकाश तत्व समाहित होता है। इसलिए बगैर आकाश के जीवन का निर्माण संभव ही नहीं था।

आकाश की कहानी आज हमने जानी। यही आकाश है तो हमारे जीवन में छत है। जीवन का विस्तार भी आकाश है और जीवन का विश्वास भी आकाश है। आकाश ने पंछियों को उड़ान दी है। आकाश ने हवाई जहाज को उड़ने का बहाना दिया है। आकाश ने साइंस को जीने का मकसद दिया है। आज की सारी साइंस की प्रगति आकाश के बगैर संभव ही नहीं थी। साइंस का सारा कचरा इसी आकाश में छुपा है और साइंस का सारा खजाना भी इसी आकाश में छिपा है। इसलिए आकाश जब चाहे साइंस को खत्म कर देगा, मगर साइंस कभी आकाश को खत्म नहीं कर पाएगा। इसलिए हे मनुष्य आकाश तत्व बनो। आकाश की गरिमा समझो। आकाश को अपने भीतर महसूस करो। आकाश ही हमारा हौसला है। आकाश है तो हमें रास्ता मिलता रहेगा। जब-जब संकट में आओ तो आकाश से हौसला प्राप्त कर आगे बढ़ो। आकाश की कभी उपेक्षा मत करो। आकाश हमारी आशाओं का सवेरा है। आकाश ही हमारी जिंदगी की सांझ है। जीवन की रात में भी आकाश हमारे आसपास है। आकाश के बारे में आज इतना ही।





19 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

पृथ्वी

जिस दिन पाप अपने चरम पर होंगे तब पृथ्वी समूची मानव जाति को निगल लेगी,
पृथ्वी में इतनी क्षमता है कि वह समूचे कालखंड को अपने भीतर

जमींदोज कर दे : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से धिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। जैसा कि यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल। आकाश तत्व पर स्वामीजी के प्रवचन हो चुके हैं। आज पृथ्वी तत्व पर स्वामीजी प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

पृथ्वी। जो हमें धारण किए हुए है। साइंस की नजर में पृथ्वी एक ग्रह से अधिक कुछ भी नहीं। मगर हम पृथ्वी को मां कहते हैं। इस शरीर की रचना में एक अंश पृथ्वी का भी है। पृथ्वी के जन्म की शास्त्रोक्त कहानी राजा पृथु की आपने सुन ही रखी है। पृथ्वी जिसे अचला भी कहते हैं। साइंस कहता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। मगर पृथ्वी के लिए हमारे शास्त्रों ने अचला यानी जो चलायमान नहीं है, शब्द इस्तेमाल किया है। अचला यानी पृथ्वी चलायमान नहीं है। फिर वैज्ञानिक किस आधार पर कहते हैं कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। साइंस अपनी जगह सही है और हमारे शास्त्र अपनी जगह। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपने अक्ष पर घूमती है, यही कारण है कि हमें इसका अहसास नहीं होता और नजर नहीं आती। इस तरह पृथ्वी अचला है और गतिशील भी। पृथ्वी अचला जरूर है मगर गति उसका स्वभाव है। पृथ्वी हमारी मां है इसलिए अचला नहीं हो सकती। क्योंकि मां अचला कैसे हो सकती है? अब सवाल है कि अचला नाम पृथ्वी का कैसे पड़ा? आदि काल में एक ऋषि थे- चलानंद प्रभुवे दुनिया के पहले जैन ऋषि थे। वे समुद्र पर चला करते थे। जब समुद्र की लहरों ने चलानंद प्रभु की साधना भंग की तो उन्होंने श्राप दे दिया कि आज से तुम अचला हो जाओ (यानी चलना बंद हो जाओ) तब समुद्र ने ऋषि के सामने दया की भीख मांगी और कहा कि ऐसा श्राप ना दें क्योंकि यह समुद्र की नैसर्गिक हत्या हो जाएगी। लहरें समुद्र का प्राण है और अगर लहरें ही अचला हो जाएगी तो समुद्र कहां जाएगा? आखिर ऋषि को दया आ जाती है और वह कहते हैं कि मैं अचला से विवाह करूंगा और उन्हें अपना साधना स्थली बनाऊंगा। कहते हैं उस दिन समुद्र से पृथ्वी बाहर आई और उसका दूसरा जन्म हुआ और तब से इस पृथ्वी को अचला कहा जाता है। दुनिया के किसी भी शास्त्र या ग्रंथ में हे मानव तुम्हें यह कहानी नहीं मिलेगी, क्योंकि यह कहानी सिर्फ और सिर्फ मुझे पता

है। इस कहानी को मैंने अपने साधना चक्षुओं से देखा है। तब चलानंद प्रभु और अचला ने मिलकर अपना परिवार बढ़ाया और तब से धरती पर ऋषि की संतान पत्नी-बढ़ी और आज जैन धर्म का वट वृक्ष इतना समृद्ध हो सका। जैन धर्म की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी यह धरती यानी अचला पुरानी है। धरती के जन्म से पहले भी जैन ऋषि का अस्तित्व विद्यमान था।

हे मानव पृथ्वी की कहानी तुमने सुनीं। अलग-अलग धर्मों में, अलग-अलग शास्त्रों में पृथ्वी के जन्म की कहानी तुम्हें अलग-अलग मिलेगी। दरअसल पृथ्वी हमारे लिए साक्षात् जीवंत तत्व है। तत्व है तो निश्चित रूप से जीवंत ही होगा। हमारे यहां पृथ्वी को देवी का स्वरूप माना गया है। जब माता सीता को पृथ्वी ने अपनी आगोश में पनाह दी तो राम ने इस धरती को चेतावनी दी कि या तो उनकी सीता को लौटा दे नहीं तो परिणाम भुगतने को तैयार रहे। तब ऋषियों ने अपने तर्कों और समझदारी से पृथ्वी को बचा लिया। दरअसल पृथ्वी एक ऐसी सत्ता है जो अपने भीतर प्रलय की क्षमता रखती है। इसका परिणाम हम भूकंप के रूप में देखते हैं। जब-जब भूकंप आते हैं तो धरती पर प्रलय आता है। भूकंप से समुद्रों में सुनामी आती है। भूकंप से मानव जाति नष्ट भी हो सकती है। जिस दिन पाप अपने चरम पर होंगे तब पृथ्वी समूची मानव जाति को निगल लेगी। पृथ्वी में इतनी क्षमता है कि वह समूचे कालखंड की मानव जाति और मानव जाति के विकास को अपने भीतर जर्मीदोज कर दे।

इसलिए हे मानव, पृथ्वी से डरें। पृथ्वी के अस्तित्व से खिलवाड़ करना छोड़ दें। पृथ्वी को पृथ्वी की तरह ही रहने दें। पृथ्वी की संपदा के साथ खिलवाड़ ना करें। यह पेड़-पौधे, नदियां, तालाब, खेत-खलिहान, पहाड़-पठार और प्रकृति का श्रृंगार श्रृंगार ही रहने दें। इन वनों पर आरी चलाना बंद करें। पृथ्वी को हमारे शास्त्रों में माता का दर्जा है। लेकिन आज हम अपनी ही मां के दुश्मन बन गए हैं। हमने पृथ्वी की संपदा को नष्ट करना शुरू कर दिया है। ध्यान रहे पृथ्वी इसकी भरपाई करना खुद जानती है। जब अति होगी तो मनुष्य को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

इसलिए हे मनुष्य, पृथ्वी को विवश मत करो कि वह अपने ही पुत्रों की बली ले। पृथ्वी ऐसा स्थान है जहां देवता भी जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं। पृथ्वी पर ही समस्त लीलाएं होती हैं। पृथ्वी पर ही समस्त धर्मों का जन्म स्थान है। पृथ्वी पर स्वर्ग है। जिस स्वर्ग को हम ऊपर ढूंढ़ते हैं, दरअसल वह स्वर्ग तो पृथ्वी पर ही है। पृथ्वी को अपना काम करने दो और हमें पृथ्वी के नैसर्गिक राह में रुकावट नहीं डालनी चाहिए। क्योंकि जिस दिन पृथ्वी को गुस्सा आ गया उस दिन अनर्थ हो जाएगा।

पृथ्वी पर जीवन की कहानी है वैसे ही साइंस कहता है कि हमारी गैलेक्सी में ऐसी और कई पृथ्वियां हो सकती हैं और वहां भी जन्म हो सकता है। साइंस ने जो बात कही है वही हमारे शास्त्रों ने भी कही है। पृथ्वी एक ग्रह मात्र नहीं है। हमारे यहां धारयती यानी धारण करने वाली को पृथ्वी कहा गया है। पृथ्वी हम सबको धारण किए हुए हैं। पृथ्वी पर जब पाप बहुत बढ़ गए तो भगीरथ आकाश से गंगा लाया। आज पृथ्वी पर गंगा जैसी नदियां हैं। हमने गंगा के अस्तित्व को भी खतरे में डाल दिया। याद रखो मानव गंगा और तमाम नदियों के साथ खिलवाड़ कर हम पृथ्वी और अपने अस्तित्व के साथ खिलवाड़ कर रहा हैं। पृथ्वी के संकट हरना हम पृथ्वी पुत्रों का कर्तव्य है। हमें अपने पुत्र होने का धर्म भी निभाना है।

जब ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण करना शुरू किया तब कहा था- एको अहं बहुस्याममैं एक हूं अनेक हो जाऊं और ब्रह्माजी का सृष्टि का यज्ञ शुरू हुआ। यह यज्ञ आज भी जारी है। ब्रह्माजी की सृष्टि का यज्ञ कभी रुकता नहीं है। हम यह अपनी चेतन आंखों से नहीं देख पाते। लेकिन सृष्टि के निर्माण का यज्ञ आज भी जारी है। पृथ्वी पर आने वाले समय में इसके संकेत अभी से दिखाई दे रहे हैं। हे मानव सृष्टि का यज्ञ कभी रुकता नहीं है। यह परंपरा ना जाने कब से चली आ रही है और पृथ्वी अपने सीने में सृष्टि के किरदारों को पनाह देती रहती है।

इसलिए हे मानव, जब तुम नहीं रहोगे तब भी पृथ्वी पर कोई और रूप में सृष्टि दस्तक दे सकती है। इसलिए पृथ्वी का आदर करो। पृथ्वी का सम्मान करो। पृथ्वी को तंग करना छोड़ दो। पृथ्वी के लिए संकटमोचक बनो उसके लिए संकट का कारण मत बनो। अगर तुम पृथ्वी के लिए संकट का कारण बनोगे तो पृथ्वी तुम्हें माफ नहीं करेगी। हालांकि पृथ्वी का स्वभाव माफ करना है। मां कभी अपने पुत्रों का बुरा नहीं चाहती। लेकिन जब मां का दिल छलनी होता है। जब मां की हाय लगती है तो सबकुछ नष्ट हो जाता है।

इसलिए हे मानव, इस धरती मां को समझो। उसके नैसर्गिक स्वरूप से खिलवाड़ मत करो। धरती ने, इस पृथ्वी ने कब से सृष्टि को अपने आगोश में पनाह दी है। तुम हो कि पृथ्वी को नष्ट करने पर तुले हो। ऐसा करके तुम अपना खुद का ही अहित करने जा रहे हो। इसलिए हे मानव पृथ्वी को मान दो। पृथ्वी को उसके खुद के जीने का अधिकार दो। पृथ्वी को पृथ्वी बनी रहने दो। पृथ्वी ही नहीं रही तो तुम्हारा जीवन भी नहीं रहेगा। लेकिन तुम इस शाश्वत सत्य को भी नहीं समझ रहे। तुम विकास की अंधी दौड़ में खुद अपने अस्तित्व की अनदेखी कर रहे हो।

इसलिए हे मानव आज मैं तुमसे इस पृथ्वी के लिए प्रार्थना करता हूँ। इस पृथ्वी को अपने से पृथक् मत समझो। पृथ्वी तुमसे पृथक् नहीं है। तुमसे अलग रहकर पृथ्वी भी खुश नहीं रह सकती। मगर यदि तुमने पृथ्वी को प्रलय के लिए विवश किया तो वह दिन तुम्हारे लिए विनाश का संकेत लेकर आएगा। इसलिए पृथ्वी और पृथ्वी पुत्रों के लिए कल्याण की बात यही होगी कि धर्म को धारण करने वाली पृथ्वी को अपने भीतर महसूस करो और पृथ्वी को अपनी मां की तरह मान दो। आज इतना ही।





20 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

अग्नि

**अग्नि सुपर पॉवर है, जब-जब पॉवर का दुरुपयोग किया जाएगा,
मानवता पर खतरा मंडराता रहेगा : पंकजप्रभु**

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं।

उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख

के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप है। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। जैसा कि यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल। आकाश और पृथ्वी तत्व पर स्वामीजी के प्रवचन हो चुके हैं। आज अग्नि तत्व पर स्वामीजी प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

अग्नि। आग। हमारे शरीर में एक अंश अग्नि तत्व का भी समाहित है। अग्नि को देव कहा गया है। अब प्रश्न उठता है- अग्नि की उत्पत्ति कैसे हुई? तो सुनो हे मानव। ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण करने का निर्णय लिया। उन्होंने ध्यान लगाया। उन्हें अंतर्चेतना से ज्ञान प्राप्त हुआ कि यदि सृष्टि का निर्माण करना है तो सृष्टा यज्ञ करना होगा। ब्रह्माजी ने इसके बाद सृष्टा यज्ञ करने का निर्णय लिया। यज्ञ के लिए अग्नि की जरूरत महसूस हुई। अब अग्नि कहां से लाई जाए? ब्रह्माजी अग्नि शब्द से परिचित नहीं थे। ना ही उन्हें पता था कि अग्नि क्या होती है? उन्होंने फिर से ध्यान लगाया और ध्यानस्थ अवस्था में उन्हें इसका समाधान मिला। दरअसल उन्हीं दिनों देवताओं में एक अग्नि नाम के एक देवता भी थे। वे बहुत ही गुस्सैल स्वभाव के थे। उन्हें बात-बात पर गुस्सा आ जाता था। इसी गुस्से में आकर उन्होंने एक दिन ऋषि शांतेश्वर महाराज को अपशब्द कह दिए और उनका अपमान कर दिया।

शांतेश्वर महाराज स्वभाव से शांत रहा करते थे। लेकिन जब ऋषि सत्ता पर चोट की गई तो वे सहन नहीं कर सके और उन्होंने अग्नि देव को श्राप दे दिया कि आज से तुम्हारा काम जलना होगा। तुम्हे जो इतना गुस्सा आता है अब तुम जलते रहो। जलना ही तुम्हारा स्वभाव होगा। तुम जिसे छुओगे वह जल जाएगा। शांतेश्वर महाराज के श्राप की वजह से अग्नि देव का स्वभाव जलना हो गया। और इस तरह शांतेश्वर महाराज के श्राप की वजह से अग्नि की उत्पत्ति हुई। बस ब्रह्माजी का काम आसान हो गया। बाद में ब्रह्माजी ने यज्ञ की तैयारी शुरू की। उन्होंने अग्नि देव का आह्वान किया। अग्नि देव ने यज्ञ कुंड को प्रज्वलित किया। और इस तरह ब्रह्माजी का सृष्टा यज्ञ शुरू हुआ। और इस तरह सृष्टि के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। जब ब्रह्माजी सृष्टि का निर्माण करने लगे और तो उन्होंने अग्नि देव से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि जीव मात्र में आज से

अग्नि देव का भी कुछ अंश होगा। ब्रह्माजी ने कहा कि यज्ञ की अग्नि में जो आहुतियां दी जाएंगी उसका एक भाग देवताओं को भी मिलेगा। इस तरह बाद में ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की।

हे मानव, तुमने अग्नि की उत्पत्ति की कहानी सुनी। दरअसल अग्नि सुपर पॉवर है। सूर्य भी अग्नि का स्वरूप है। मगर सूर्य और अग्नि में फर्क है। सूर्य को भी देवता कहा गया है। अग्नि को भी देव कहा गया है। अग्नि आदि देव हैं और सूर्य उनके सहायक देव हैं। सूर्य देव अग्नि देव के अंश है। हे मानव तुम सोचते होंगे मुझे यह सब कैसे पता है? यह सबकुछ मैंने साधना से अर्जित किया है। मुझे अंतर्चेतना से जो ज्ञान मिल रहा है वह मैं तुम्हें बांट रहा हूं। कल मैं नहीं रहूंगा मगर मेरा ज्ञान किसी माध्यम से मानव तुम तक और तुम्हारे माध्यम से तुम्हारी पीढ़ियों तक इतिहास बनकर पहुंचता रहेगा। हे मानव शास्त्रों में लिखा सत्य होता है। मगर शास्त्रों से परे भी सत्य होता है। शास्त्र जो कहते हैं उस पर सभी विश्वास करते हैं। लेकिन जो ऋषि कहता है उस पर भी विश्वास करना चाहिए। महर्षि वाल्मीकि ने जब राम को कहा कि लव-कुश तुम्हारी संतान है तो सबने ऋषि की बात पर विश्वास किया। क्योंकि ऋषि कभी झूठ नहीं बोलता। इसलिए हे मानव अग्नि की उत्पत्ति की कहानी भी तुम्हारे लिए नई हो सकती है। मगर यही सत्य है।

अब बताते हैं कि अग्नि सुपर पॉवर कैसे है? अग्नि नाम की मिसाइल भी बन चुकी है। अग्नि कई प्रकार की होती है। एक अग्नि गुस्से की होती है। एक अग्नि ईर्ष्या की होती है। एक अग्नि कामाग्नि होती है। अगर आप क्रांति का पथ चुनते हैं तो उसके लिए जिस आग की जरूरत है वह क्रांति भी अग्नि ही होती है। अगर आप साहित्यकार हैं या कवि हैं और आपके शब्दों में आग है तो वो भी अग्नि ही है। एक अग्नि वो होती है जिसका स्वभाव जलना होता है। इस अग्नि से विनाश होता है। मगर अग्नि हमेशा विनाश की आहट लेकर आए जरूरी नहीं। अग्नि से ही भोजन पचता है। अग्नि से ही ऊर्जा उत्पन्न होती है। ऊर्जा से संसार चलता है। इसलिए हे मानव अग्नि की जरूरत हर युग में रहेगी। साइंस अग्नि को अलग ही रूप में देखता है। साइंस कहता है कि पाषाण युग में मनुष्य ने पत्थरों को रगड़ा और अग्नि उत्पन्न हुई। ये साइंस की थ्योरी है। मगर साइंस की थ्योरी पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि साइंस जहां से शुरुआत करता है अध्यात्म उससे हजारों गुणा पहले पहुंच चुका होता है। अगर साइंस कहता है कि पत्थरों को रगड़ने से अग्नि उत्पन्न हुई तो वह गलत नहीं है। मगर हम कहते हैं कि अग्नि तो पहले से विद्यमान थी। यानी पत्थरों के रगड़ने से अग्नि नहीं उत्पन्न हुई। अग्नि का अस्तित्व पहले से था। अगर अग्नि का अस्तित्व नहीं होता तो वो पत्थरों को रगड़ने से भी उत्पन्न नहीं होती।

इसलिए हे मानव तुम जिस साइंस के दावानल पर बैठे हो वो ही साइंस एक दिन तुम्हें तुम्हारी ही अग्नि में जला देगी। इसलिए साइंस पर अहंकार मत करो। साइंस इस जगत में एक उबासी से अधिक कुछ नहीं है। जब श्रीकृष्ण करवट बदलते हैं तो साइंस की सारी प्रगति विध्वंस को प्राप्त हो जाती है। अग्नि आज भी सुपर पॉवर है। अग्नि की उपेक्षा मत करो। अग्नि जीवन से पहले और जीवन के बाद भी जरूरी है। शिशु के जन्म से लेकर व्यक्ति के शव को जलाने तक की प्रक्रिया में अग्नि जरूरी है। अग्नि के बगैर हिंदू धर्म में कोई संस्कार नहीं होते। विवाह से लेकर मृत्यु तक सारे संस्कारों में अग्नि का महत्व है। ये संस्कार ढोंग नहीं है। ये संस्कार हमारी जीवन पद्धति है। इन संस्कारों से ही सृजन होता है। इन संस्कारों से ही जीवन अनुशासित होता है। इसलिए अग्नि की कहानी हे मानव तुमने जानी है तो यह भी जान लो कि अग्नि ही भूत-वर्तमान और भविष्य है। तीनों काल में अग्नि विद्यमान रहेगी।

अग्नि का रिश्ता हमारी आत्मा से जुड़ा है। आत्मा भी अग्नि की तरह सुपर पॉवर है। पर आत्मा अग्नि नहीं है। आत्मा अग्नि से भी कहीं अधिक सुपर पॉवर है। आत्मा और अग्नि की परिभाषा अलग अलग है। आत्मा ऐसी शक्ति है जो पांच तत्वों से परे है। पांच तत्वों से तो शरीर बनता है। मगर पांच तत्वों में भी जो तत्व विद्यमान रहता है वह आत्मा है। आत्मा तत्व से भी परे परम तत्व है। परमात्मा और आत्मा में भी अंतर है। जब आत्मा परम तत्व को प्राप्त कर लेती है तो वह परमात्मा बन जाती है। जहां तक बात अग्नि की है तो शरीर का पार्ट है। मगर आत्मा शरीर से परे है। वह शरीर में रहकर भी शरीर के बंधन से मुक्त है और जब जी चाहे शरीर को छोड़ देती है। आत्मा और अग्नि का मेल जरूर है वे एक दूसरे की सहायक जरूर है। मगर आत्मा अग्नि से भी अधिक सुपर पॉवर है। हे मानव आज तुम्हें अग्नि के बारे में कुछ बातें बताईं। आज अग्नि के बारे में इतना ही। बाकी फिर कभी।





21 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

वायु

साइंस जिसे आज खोज रहा है अध्यात्म ने उसे बहुत पहले खोज लिया था, वायु की धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति के संयोग से कई प्रकार के तत्वों की

उत्पत्ति की जा सकती है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से धिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप है। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। जैसा कि यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल। आकाश, पृथ्वी और अग्नि तत्व पर स्वामीजी के प्रवचन हो चुके हैं। आज वायु तत्व पर स्वामीजी प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

वायु। पवन। हवा। मारूत। सभी नाम एक दूसरे के पर्याय हैं। वायु भी शरीर में एक अंश के रूप में विद्यमान रहती है। शरीर में तीन दोष आयुर्वेद के अनुसार होते हैं- वात, पित्त और कफ। तीनों का संतुलन होता है तभी शरीर निरोगी रहता है। इसमें से किसी का घटना-बढ़ना शरीर को बीमार कर देता है। वायु यानी पवन को भी देवता कहा गया है। हनुमान इन्हीं पवन के पुत्र हैं। इसीलिए उन्हें पवन पुत्र कहा गया है। पवन की ताकत का अंदाजा लगाना मुश्किल है। पवन में प्रलयकारी ताकत होती है। पल भर में पवन तबाही ला देता है। आज के साइंस की सारी भौतिक प्रगति पवन के विकराल रूप के आगे कीड़े-मकोड़ों की तरह है। पवन जब विनाशकारी रूप धारण करता है तो दिशाओं का मौन टूट जाता है। वायु को प्राण भी कहा गया है। क्योंकि वायु को प्राण वायु के रूप में ग्रहण भी करते हैं। भोजन के बगैर और पानी के बगैर तो शायद काफी देर तक जीवित रह सकते हैं, मगर प्राण वायु के बगैर चंद सैकंड तक भी जीवित रहना मुश्किल है।

अब प्रश्न उठता है कि पवन की उत्पत्ति कैसे हुई? वायु का जन्म कैसे हुआ? इसका उत्तर सुनो हे मानव। तब ब्रह्मांड एक सूक्ष्म गुब्बारे की तरह था। यह गुब्बारा फूला हुआ नहीं था। फिर कैसा था? हे मानव, सुनो गुब्बारा एक चेतना रूपी आकार में था। चेतना को हम आकार में अभिव्यक्त नहीं कर सकते। मगर चेतना आकार लेने की स्थिति में आने लगी थी। चेतना धीरे-धीरे गुब्बारे के आकार में आने लगी। तभी चेतना से एक और दिव्य चेतना प्रस्फुटित हुई और वह गुब्बारे में प्रविष्ट हुई। धीरे-धीरे गुब्बारा फूलने लगा और ब्रह्मांड के आकार में आ गया। अचानक गुब्बारा फूट पड़ा और चारों तरफ प्रलयकारी तूफान आ गया। यही पवन देव थे। इस तरह पवन देव का जन्म हुआ। जब पवन देव का जन्म हुआ तो अग्नि देव के साथ मिलकर गर्म हो गई और ठंडी होकर

जल के रूप में बरस पड़ी। इस तरह एक साथ पवन के बाद जल का भी जन्म हो गया। मगर आज हम मानव तुम्हें पवन की कहानी ही सुनाएंगे।

जब पवन का जन्म हुआ तो उसमें विशिष्ट गुण थे। वह अत्यंत सूक्ष्म रूप में थी। उसे देखना संभव नहीं था। वह हर स्थान पर व्याप्त रहती। उसे वरदान था कि वह कहीं भी आ जा सकती थी। उसमें अपार क्षमता थी। पवन के वेग को रोकना किसी के वश में नहीं था। पवन से ही पवन पुत्र का जन्म हुआ जिसे दुनिया बजरंग बली के रूप में भी जानती है। तो मानव पवन के वेग को समझना मुश्किल है। पवन की गति को समझना संभव नहीं है। पवन में अपार क्षमता होती है। पवन जब काल रूप में आती है तो विनाश की लीला शुरू हो जाती है। पवन के बगैर जीवन असंभव है। पवन हमारे शरीर में विद्यमान रहता है। पवन यानी प्राण वायु को हम सांसों में ग्रहण करते हैं। साइंस वायु को गैस के रूप में परिभाषित करता है और उसे भी अलग-अलग रूप में अभिव्यक्त करता है। जिसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और तरह-तरह के नाम दे रखे हैं। मगर अध्यात्म में वायु को सिर्फ वायु कहते हैं। वायु का अध्यात्म विभाजन नहीं करता। अब साइंस सवाल करेगा कि अगर अध्यात्म वायु का विभाजन नहीं करता तो ऑक्सीजन ही ग्रहण क्यों करता है? तो इसका सीधा सादा उत्तर है कि हम वायु को ही ग्रहण करते हैं और वायु को ही छोड़ते हैं। जिस तरह दो शक्तियां होती हैं धनात्मक और ऋणात्मक, उसी तरह वायु भी दो तरह की होती है शुद्ध वायु और दूषित वायु। यानी प्राण वायु और निष्प्राण वायु। हम प्राण वायु को ग्रहण करते हैं और निष्प्राण वायु को छोड़ते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो शुद्ध वायु को ग्रहण करते हैं और दूषित वायु को छोड़ते हैं। लेकिन साइंस कहता है कि वायु में नाइट्रोजन 78 प्रतिशत, ऑक्सीजन, 21 प्रतिशत, आर्गन 0.93 प्रतिशत, कार्बन डाई ऑक्साइड 0.03 प्रतिशत तथा हाइड्रोजन, हीलियम, ओज़ोन, निऑन, जेनान, आदि अल्प मात्रा में उपस्थित रहती हैं। नम वायुमण्डल में जल वाष्प की मात्रा 5 प्रतिशत तक होती है। अध्यात्म कभी साइंस की तरह वायु का विभाजन नहीं करता। लेकिन अध्यात्म और साइंस हमेशा विरोधाभासी हो यह जरूरी नहीं। जब तक अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे की अंगुली पकड़ कर चलेंगे तब तक संतुलन बना रहेगा। लेकिन जिस दिन साइंस ने अध्यात्म की अनदेखी की उसे इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। अब सवाल खड़ा होता है कि अध्यात्म वायु का विभाजन नहीं करता तो क्या उपरोक्त विभाजन का खंडन करता है? हे मानव, तुमने तरक्की तो कर ली मगर भौतिक तरक्की की है। तुमने हर बात को सूत्रों में तोला। तुमने पानी का सूत्र बनाया हाइड्रोजन प्लस ऑक्सीजन यानी पानी। मगर हमारा अध्यात्म तुम्हारी बात को बहुत पहले साबित कर चुका है। हमने पानी यानी जल की उत्पत्ति का सूत्र बताया था वायु प्लस अग्नि यानी पानी। प्रोपेन,

हाइड्रोजन, ब्यूटेन, मीथेन, एथिलीन, एसिटिलीन, अमोनिया, इथेन और सिलेन नाम की गैसों भी साइंस बताता है। अध्यात्म कहता है कि प्रोपेन, हाइड्रोजन, ब्यूटेन, मीथेन, एथिलीन, एसिटिलीन, अमोनिया, इथेन और सिलेन सभी गैसों से वायु पानी और तमाम तरह के तत्वों की उत्पत्ति कर सकता है। क्योंकि वायु में धनात्मक और ऋणात्मक दोनों शक्तियाँ होती हैं। तुम्हारे साइंस को हम अध्यात्म के रास्ते आगे बढ़ाएं तो साफ है कि वायु की धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति के संयोग से कई प्रकार के तत्वों की उत्पत्ति की जा सकती है। हे मानव तुम्हारी साइंस की बातें अध्यात्म ने बहुत पहले खोज ली हैं। जिस चीजों की तुम आज खोज कर रहे हो, वो पहले से ही खोजी जा चुकी है। अब बात चली है तो तुम्हें बता दें तुम्हारा विज्ञान अभी अधूरा है। उसे अध्यात्म तक पहुंचने में बहुत वक्त लगेगा। साइंस कहता है कि पदार्थ नष्ट होता है। लेकिन अध्यात्म कहता है कि पदार्थ नष्ट होता जरूर है मगर उसे फिर से उसी रूप में प्राप्त किया जा सकता है। अध्यात्म में इतनी ताकत है कि वह भूत और भविष्य में भी जा सकता है। अध्यात्म किसी भी पदार्थ को कभी भी वापस उसी रूप में हासिल कर सकता है। अध्यात्म और विज्ञान का टकराव हमेशा चलता आया है। मगर अध्यात्म को हराना असंभव है। अध्यात्म की ताकत का साइंस को अंदाजा नहीं है। अध्यात्म ही ऋतुओं का संचालन करता है। देवता ही अध्यात्म है। ईश्वर ही अध्यात्म है। ईश्वर से बड़ा साइंस कभी नहीं हो सकता। जब-जब साइंस को अहंकार होगा, अध्यात्म उसे मिटा देगा। लेकिन यदि साइंस और अध्यात्म मिलकर रहे तो मानवता का भला हो सकता है। हे मानव दुनिया में साइंस ने भौतिक प्रगति तो खूब कर ली लेकिन अध्यात्म को भुला दिया। बस यहीं से संकट खड़ा हो गया। अब बात पवन की तुम समझ गए होंगे मानव। पवन देव की उत्पत्ति और पवन की असीम क्षमताओं को तुम समझ गए होंगे। तुम्हारा साइंस जिस वायु का वर्गीकरण करता है, उस तरह अध्यात्म वर्गीकरण नहीं करता। अध्यात्म सिर्फ यही कहता है कि वायु धनात्मक और ऋणात्मक दो तरह की होती है। शुद्ध और अशुद्ध दो प्रकार की होती है। प्राण और निष्प्राण दो प्रकार की होती है। लेकिन यह दो प्रकार की वायु भी अपने अपार ताकत रखती है। वायु के बारे में बहुत सी बातें हुईं। आज इतना ही।





22 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

जल

आंखों का पानी कब का बह चुका, तुम्हें गरीब की आंख का पानी भी नजर नहीं आता, पैसों की प्यास बढ़ती ही जा रही है, पानी तो बांटने की चीज है मगर तुमने इसे बोतलों में बंद कर दिया, भला जल पर किसका अधिकार है?

जल तो सबका है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका

आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। जैसा कि यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल। आकाश, पृथ्वी, अग्नि और वायु तत्व पर स्वामीजी के प्रवचन हो चुके हैं। आज जल तत्व पर स्वामीजी प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

आज हम जल तत्व की चर्चा करेंगे। इस शरीर की रचना में जल तत्व का भी पार्ट है। दरअसल इस पृथ्वी पर तीन चौथाई भाग जल है। करीब करीब इतना ही पानी हमारे शरीर में होता है। साइंस की भाषा में कहें तो जल हमारे शरीर के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। पूरे एक महीने हम बिना खाने के रह सकते हैं, लेकिन पानी के बिना हम एक सप्ताह भी नहीं रह सकते। पानी मनुष्य शरीर के लिए बहुत ही ज्यादा जरूरी होता है, इसी तरह कुछ समुद्री जीवों में 90% तक पानी होता है। मनुष्य का शरीर 70% पानी से बना होता है। मस्तिष्क में 85% जल होता है, रक्त में 79% जल होता है तथा फेफड़ों में लगभग 80% जल होता है। इस तरह कह सकते हैं जल ही जीवन है। जल है तो कल है। जल है तो आज भी है। जल है तो कल भी था। इसलिए कह सकते हैं जल भूत है, जल वर्तमान है और जल ही भविष्य है। हे मनुष्य, आज तुम जल के लिए ही लड़ रहे हो। दुनिया में सारी लड़ाई जल के लिए है। दुनिया में अगर अगला वर्ल्डवार हुआ तो भी जल के लिए हो सकता है। जल जितना जरूरी है उससे ज्यादा पृथ्वी पर मौजूद है। मगर काम का पूरा का पूरा नहीं है। पृथ्वी की सतह पर जो पानी है उसमें से 97 प्रतिशत सागरों और महासागरों में है जो नमकीन है और पीने के काम नहीं आ सकता, केवल तीन प्रतिशत पानी पीने योग्य है, जिसमें से 2.4 प्रतिशत ग्लेशियरों और उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में जमा हुआ है और केवल 0.6 प्रतिशत पानी नदियों, झीलों और तालाबों में है जिसे इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिए हे मानव तुम पानी का मोल अब भी नहीं समझ रहे। पानी को बर्बाद कर रहे हो। अमृत जल यूँ ही नहीं कहा जाता। पानी ही अमृत है। और तुम पानी को यूँ बर्बाद कर रहे हो।

जल के बारे में रहीम जी ने ठीक ही कहा है- रहिमान पानी राखिए, बिन पानी सब

सून, पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चूनरहीमजी दूरदृष्टा थे। वे ऋषि सत्ता थे। पानी का अर्थ केवल जल ही नहीं होता। पानी हमारी आंखों में भी होना चाहिए। जिसे हम शर्म-हया कहते हैं, पानी उसी का नाम है। आज यह पानी हम मनुष्यों में कम होता जा रहा है। शर्म रूपी पानी हमसे दूर होता जा रहा है। लज्जा रूपी पानी हम कब का गिरा चुके हैं। पानी की प्यास आज पैसों की प्यास में बदल गई है। पानी अब बोतलों में बंद हो गया है। तुम्हारे अखबारों में जो रिपोर्ट छपती है उस पर गौर करें तो 2021 में वैश्विक बोतलबंद पानी की बिक्री 350 बिलियन लीटर तक पहुंच गई और इसका अनुमानित मूल्य 270 बिलियन डॉलर था, यह आंकड़ा 2030 तक 500 बिलियन डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद है। हम तो ऋषि हैं। हम पानी को जीवनदायी मानते हैं और उतना ही ग्रहण करते हैं जितनी हमारी जरूरत होती है। मगर तुम मनुष्य ने पानी को व्यापार बना दिया है। पानी के बिजनेस से तुमने पैसे तो अर्जित कर लिए मगर मानवता पीछे छूट गई। जब तुमने पानी को बिजनेस बना दिया तो आंखों का पानी कब का बह चुका। तुम्हें गरीब की आंख का पानी भी नजर नहीं आता और तुम्हारी पैसों की प्यास बढ़ती ही जा रही है। पानी तो बांटने की चीज है मगर तुमने इसे बोतलों में बंद कर दिया। भला जल पर किसका अधिकार है? जल तो सबका है। आज राज्यों का झगड़ा जल को लेकर होता है। राज्य जिद्द कर बैठते हैं हम तुम्हें तुम्हारे हिस्से का पानी नहीं देंगे। भला प्यास भी कोई हिस्सा देखती है। पानी का भी भला कोई बंटवारा होता है। हमारे ऋषियों ने कहा है प्यासे को पानी पिलाओ। भूखे को भोजन दो। यही धर्म है, मगर हे मानव तुमने धर्म को व्यापार बना दिया। तुम्हारे यहां बाबा लोग कथाएं करते हैं तो लाखों-करोड़ों रुपए लेते हैं। बड़े शर्म की बात है कि आज तुमने धर्म को भी व्यापार बना दिया है। हम धर्म शब्द इस्तेमाल कर रहे हैं। यहां हम अध्यात्म शब्द का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। क्योंकि धर्म और अध्यात्म अलग-अलग चीज है। धर्म वो है जिसे तुम धारण किए हुए हैं। जिसे तुमने अपने माथे से लगा रखा है। जिसे तुम जीवन का हिस्सा मान बैठे हो। अध्यात्म वो है जिसे हम ऋषि सत्ता मानते हैं। धर्म और अध्यात्म के रास्ते अलग-अलग हैं। धर्म अध्यात्म से निकला जरूर है लेकिन हे मानव तुमने धर्म को भी व्यापार बना दिया। आज सबके अपने अपने धर्म हैं। बात जल की कर रहे थे। जल अपने आप में देवता है। इसे वरुण देव कहते हैं। वरुण देव की ताकत तुमने बारिश में देखी होगी। जल जब अपने पर आ जाता है तो प्रलय आ जाता है। देखना मानव एक दिन धरती पर तीन चौथाई पानी एक चौथाई धरती को निगल जाएगा। हे धरती पुत्रों धरती पर प्रलय ऐसे ही आएगा। प्रलय की कहानी विधाता ने लिख रखी है। इस धरती की उम्र निर्धारित है। लेकिन विधाता कभी प्री प्लान नहीं करता। उसे लगा तो वह निर्धारित समय से पहले ही धरती की माया समेट लेगा। उसे लगा तो धरती की आयु

और लंबी कर देगा। ईश्वर सर्वसत्ता है। उसे समझना आसान नहीं है। जल के देवता को नमन करो। जल से हमेशा डरो। जल को कारोबार का हिस्सा मत बनाओ। इस धरती पर जल अगर रूठ गया और नदियां सूख गईं तो तुम वैसे ही पानी पानी करते मर जाओगे। समुद्र का पानी तुम पी नहीं सकते। सोचो उस काल की उस समय की कल्पना करो जब तुम पानी पानी करोगे और तुम्हारे पास पीने को पानी नहीं होगा। तब जो आज पानी की बंद बोतलें बेचते हो तब एक-एक पानी की बोतल इतनी अधिक महंगी हो जाएगी कि आम गरीब के लिए खरीदना उसके वश में नहीं होगा। हे मनुष्य अब भी वक्त है। पानी का कारोबार बंद करो। पानी सबको दो। सबके लिए पानी सुलभ करो। पानी पर एकाधिकार बंद करो। प्यासे के लिए पानी पर सबका अधिकार है। प्यास मुल्क और देश की सीमा से परे है। प्यास का धर्म और जात से कोई संबंध नहीं है। प्यासे को अगर पानी नहीं मिला तो उस मुल्क में क्रांति होगी। उस मुल्क में ही नहीं वैश्विक क्रांति होगी। पानी झगड़े का बहुत बड़ा कारण है। पानी का तुमने मुल्कों की सीमा की तरह बंटवारा कर दिया है। पानी में भी तुमने सीमाएं बना डाली हैं। जब इस धरती पर आदमी खुद पानी का बुलबुला है तो भला सीमाओं का विभाजन कितना सही है। सबे भूमि गोपाल की। सब भूमि भगवान की है। मगर तुम भूमि पर अतिक्रमण करते हो। मुल्कों की जमीन पर आक्रमण करते हो। शुरुआत गांव से होती है। घर से होती है। एक घर में एक भाई अपने भाई की जमीन पर कब्जा कर लेता है। गांव में खाली जमीन पर कोई ताकतवर कब्जा कर लेता है। ठीक वैसे ही एक ताकतवर मुल्क कमजोर मुल्क की जमीन पर कब्जा कर लेता है। यह मुल्कों की लड़ाई अब पानी की लड़ाई हो गई है। आज भी गांवों में कुओं के पानी पर ताला लगाया जाता है। सार्वजनिक नल पर हर जाति के लोग पानी नहीं भर सकते। पानी की लड़ाई आज भी कायम है। पुराने समय में अछूत के हाथ का पानी नहीं पीते थे। अपने को बड़े कहने वाले गरीब को पानी नहीं पिलाते थे। परिस्थितियां आज भी कायम हैं। अब परिदृश्य और बड़ा हो गया है। पानी की यानी जल की लड़ाई वैश्विक हो गई है। समुद्री सीमाओं पर कब्जा हो रहा है। समुद्रों में जहाजों के बेड़े उतर गए हैं। पानी पर पहरा है। हे मानव तुम्हारे विज्ञान ने जितनी तरक्की की है तुमने अपना खुद का सुख चैन छिन लिया है। भला वो तरक्की किस काम की जिसके लिए शांति और सुकून छिन जाए। कुसूर तुम्हारा नहीं है। यह आज की लड़ाई नहीं है। झगड़ा युगों-युगों से चला आ रहा है। पर मानव संभलो। हर निशा का अंत होता है। हर रात के बाद सुबह आती है। मगर तुम ऐसी रात को आमंत्रण देते जा रहे हो जिसकी सुबह कभी होती नजर नहीं आ रही। अभी भी वक्त है मानव संभल जाओ। पानी की बात करते करते मैं खुद पानी पानी हो रहा हूं तुम्हारी करतूतों को देख देख कर।

हे मानव, चातुर्मास के चार महीनों में मैं तुम्हें जो बताने की कोशिश करूंगा उसे तुम कितना स्वीकार करोगे मैं नहीं जानता। मैं यह भी नहीं जानता कि तुम मुझे किस रूप में ग्रहण करोगे। लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि ज्ञान चाहे कहीं से आए उसे ग्रहण करना चाहिए। जब मरा मरा कहने से राम शब्द का उच्चारण हो सकता है तो ज्ञान की सीधी बातों के तो सीधे अर्थ ही होते हैं। मगर हे मानव आज तुम स्वार्थ के इतने वशीभूत हो गए हो कि तुम्हें हर बात ढोंग नजर आती है। या फिर तुम जीवन में कभी सीरियस होते ही नहीं हो। जितना तुम पैसा कमाने और पॉवर कमाने के लिए सीरियस हो उतना ही अगर अध्यात्म को लेकर सीरियस हो जाओ तो सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। जल की कहानी उतनी ही सामान्य है जितनी जिंदगी की। लेकिन जल को तुमना उतना ही जटिल बना दिया है जितना तुमने अपने जीवन को जटिल बना दिया है। जल ही जीवन है। जीवन ही जल है। इस बात को तुमने कोटेशन रूप में स्वीकार जरूर किया है लेकिन क्रिएशन रूप में नहीं। जल, जंगल, जमीन, जोरू के लिए तुम झगड़ते रहते हो। तुम्हें क्या कहें मानव। तुम्हें समझाना कभी कभी बहुत मुश्किल हो जाता है। लेकिन ऋषि का धर्म होता है कि वह भटके हुए आदमी को राह दिखाए। चलना नहीं चलना तुम्हें तय करना है। हे मानव आज तुम्हें जल की कहानी बताई। जल सबके लिए समान रूप से बहता है। नदियां जब बहती हैं तो रास्ते में सबको पानी लुटाती हैं जितनी उसकी क्षमता होती है। इसलिए हे मानव तुम्हारी जितनी क्षमता है उसके अनुसार जल की तरह बहो। जल की तरह सबकी प्यास बुझाओ। जल के लिए झगड़ा मत करो। जल के लिए जल-जल कर मरोगे तो विनाश तुम्हारा ही होगा। जल तो जल है। जल का जलजला एक दिन तुम्हें ले डूबेगा। इसलिए जल को नमन करो। जल के बारे में आज इतना ही।





23 जुलाई 2024 को उदित भास्कर में प्रकाशित

सुख-दुख

अध्यात्म सुख और चाहत दुख है, शरीर दुख और मोक्ष सुख है,
सुख और दुख की यही परिभाषा : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते

आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी सुख-दुख शब्द पर प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

सुख-दुख। हे मानव कहने को ये दो अलग-अलग शब्द हैं। लेकिन दोनों एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इसलिए दो शब्दों की बात एक ही साथ करने जा रहे हैं। हे मानव मैथिलीशरण गुप्त के नाम के कवि की कुछ पंक्तियां पहले सुनो-

देखी मैंने आज जरा!

हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा?

हाय! मिलेगा मिट्टी में यह वर्ण-सुवर्ण खरा?

सूख जाएगा मेरा उपवन जो है आज हरा?

सौ-सौ रोग खड़े हो सन्मुख पशु ज्यों बांध परा,

धिक! जो मेरे रहते, मेरा चेतन जाय चरा!

रिक्त मात्र है क्या सब भीतर, बाहर भरा-भरा?

कुछ न किया, यह सूना भव भी यदि मैंने न तरा !

मैथिलीशरण गुप्त को हिन्दुस्तान में राष्ट्र कवि होने का दर्जा प्राप्त है। उनकी ये प्रसिद्ध पंक्तियां गौतम बुद्ध से संबंधित हैं। राजकुमारी यशोधरा कोलीय वंश के राजा सुपुबुद्ध और पमिता की पुत्री थी। यशोधरा की माता- पमिता राजा शुद्धोदन की बहन थी। 16 वर्ष की आयु में यशोधरा का विवाह राजा शुद्धोधन के पुत्र सिद्धार्थ गौतम के साथ हुआ। बाद में सिद्धार्थ गौतम संन्यासी हुए और गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। सिद्धार्थ गौतम के पास सुखों की कोई कमी नहीं थी। दुनिया के सारे सुख उनके कदमों में थे। लेकिन जब उन्हें पता चला कि उनकी पत्नी यशोधरा भी एक दिन बूढ़ी हो जाएगी और यह काया मिट्टी में मिल जाएगी। तो उन्हें बहुत दुख हुआ और उन्होंने सारे सुख त्याग कर संन्यासी बन गए। यानी सुख एक पल में उन्होंने छोड़ दिए। उन्होंने सुख क्यों छोड़े? क्योंकि उन्हें मालूम था दुनिया दुखी है। मौत आना जीवन का अंतिम सत्य है। उन्होंने

तय कर लिया अगर इस धरती के लिए कुछ न किया, इस सूने भव को मैंने न तरा तो मेरा जीवन बेकार है और वे संन्यासी हो गए। एक राजा से संन्यासी की कहानियां हिन्दुस्तान में भरी पड़ी हैं। सिद्धार्थ गौतम का गौतम बुद्ध हो जाना और बौद्ध धर्म का अभ्युदय होना।

हे मानव। गौतम ऋषि थे। महामानव थे। उन्होंने इस धरती पर सुख-दुख का अनुभव कर लिया था। वे निजी तौर पर न सुख से सुखी थे और न दुख से दुखी थे। वे निर्लिप्त भाव में संन्यासी बने। इसलिए हे मानव आज तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि सुख और दुख जगत में मन से जुड़े हैं। इस धरती में आदमी सुख के पीछे भागता है। जीवन भर सुख पाने के लिए पाप करता फिरता है। दूसरों को दुखी करके मानव अपने सुख की तलाश करता है। जीवन भर सुख पाने के लिए पाप करता फिरता है। दूसरों को दुखी करके मानव अपने सुख की तलाश करता है। वह किसी भी हद तक गिर जाता है। लेकिन सुख प्राप्त करने के बाद भी वह सुखी नहीं रहता। क्योंकि सुख का कोई निश्चित पैमाना नहीं है। एक मजदूर दिन भर मेहनत मजदूरी करता है और शाम को घर आकर जो मजदूरी मिलती है वह बाजरी की रोटी और गुड़ खाकर भी सुखी रहता है। क्योंकि उसकी आवश्यकता अधिक नहीं है। इसलिए वह दुख से परे रहता है। हालांकि उसके जीवन में भी दुख भरे रहते हैं। और जब वह अपने दुख को लेकर दुखी होता है और मजदूरी करते करते किसी दूसरे मजदूर के यहां चोरी कर अपना सुख तलाशता है तो कुछ देर के लिए वह सुखी हो जाता है मगर अंततः दुख उसे घेर लेते हैं। क्योंकि उसको उसकी करनी की सजा तो ईश्वर देता ही है। इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जो दौलत के मामले में दुनिया के सबसे धनी हैं। मगर दुखी वे भी हैं। उन्हें रातों की नींद नहीं आती। सुख-चैन छिन जाता है। इसलिए हे मानव, सुख-दुख की परिभाषा एक-दूसरे से जुड़ी है। दोनों एक दूसरे के विरोधाभासी नहीं हैं। विलोम शब्द होते हुए भी सहचर हैं। तुम्हारे व्याकरण की भाषा में सुख का विलोम शब्द दुख है। लेकिन मैं कहता हूं मानव सुख और दुख परस्पर जुड़े हुए शब्द हैं। इन्हें विलोम शब्द कह भले ही लो लेकिन ये विलोम नहीं विगतवार चलने वाले शब्द हैं। निरंतर शब्द हैं। कंटीन्यू वर्ड हैं। सुख-दुख अहसास हैं। सांस लेना सुख है। जुकाम हो जाए और नाक बंद हो जाए सांस ना ले पाए तो दुख है। यानी जो सुख है वो पलभर में दुख में तब्दिल हो जाता है। लोग तो धरती पर नाम भर रख लेते हैं सुखीरामदुखीराम। राम ही जाने लोग सुख और दुख को राम से क्यों जोड़ते हैं। जबकि राम किसी को न तो सुख देता है और ना किसी को दुख देता है। राम ने खुद जीवन भर दुख झेले लेकिन कभी शिकायत नहीं की। राम के जीवन में भला दुख कम थे। लेकिन जो ईश्वर होता है वह सुख दुख में समान रहता है। सहज रहता है। इसलिए सुख और दुख को हमने साथ-साथ अभिव्यक्त किया है। सुख एक छांव हैं। दुख धूप

है। जीवन में अगर किसी दार्शनिक की बात मानें तो छांव की तरह सुख आता है और धूप की तरह दुख आता है। जीवन में छांव भी जरूरी है और धूप भी। बिना धूप-छांव के जीवन का चक्र नहीं चलता। इसलिए सुख-दुख जीवन के सहचर हैं। गौतम बुद्ध का उदाहरण मैंने दिया है। हे मानव तुम सोचते होंगे कि यह जैन ऋषि बौद्ध धर्म का उदाहरण क्यों दे रहा है? भला ऋषि का कोई धर्म होता है? ऋषि का ज्ञान तो मानव मात्र के लिए होता है। तुम्हारा मानना है कि जैन उत्पत्ति छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी जबकि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व हुई थी। जबकि जैन ऋषि का अस्तित्व धरती के अस्तित्व से भी पहले का है। जैन ऋषि की पत्नी ही धरती है। इसे हे मानव मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं। जैन धर्म के सभी 24 तीर्थंकरों ने सुख-दुख को समान भाव से देखा। सुखों का त्याग और दुख से दुनिया को छुटकारा दिलाना ही हमारे जैन तीर्थंकरों के जीवन का उद्देश्य रहा है। यह उद्देश्य मनीषी गौतम बुद्ध का भी रहा है। हम किसी भी धर्म के विरोधी नहीं हैं। क्योंकि ऋषि का काम जगत को रास्ता दिखाना होता है। बात धर्म से वापस सुख-दुख पर ले आते हैं। जो धर्म सुख-दुख से मुक्ति दिला दे वही सच्चा धर्म है। जो मानव को मनुष्यता का अहसास कराए वही धर्म है। केवल सुख-दुख की बातें करने वाला धर्म नहीं हो सकता। सबसे पहले धर्म को सुख की परिभाषा तय करनी होगी। जैन धर्म में संयम को ही सुख माना है। संयम से ही व्यक्ति सुख तलाशे तो असली सुखी हो सकता है। लेकिन सांसारिक व्यक्ति के लिए संसार में रहते भी संयमित जीवन जीना सुखी होने की निशानी है। हमें अपनी आय का एक निश्चित भाग दुनिया के दुखियारों की सेवा में लगाना चाहिए। दुखियारे शब्द हमने इसलिए इस्तेमाल किया है क्योंकि हम समर्थ हैं तो तो हमें अर्थ की मदद करनी ही चाहिए। अगर आपके पास अपार दौलत है तो देने का सुख प्राप्त कीजिए। अपने लिए तो सारी दुनिया जीती है दूसरों के लिए जीने वाला ही संसार का सबसे बड़ा दौलतमंद है और वही सच्चा सुखी है।

हे मानव दुख क्या है? दुख अभाव होना नहीं है। तुम्हारे पास पैसा नहीं है, पॉवर नहीं है, मान नहीं हैं, सम्मान नहीं हैं, योग्यता नहीं है, नहीं होना दुख की निशानी नहीं हैं। और होना भी सुख की निशानी नहीं हैं। दरअसल इन दोनों को संयमित भाव से जीना ही सुख है। जब होना और नहीं होना के बीच संयम नहीं होता, बैलेंस नहीं होता तो व्यक्ति दुखी और सुखी की परिभाषा में आता है। हे मानव हो सकता है मेरी बातें तुम्हारे समझ में ना आए। क्योंकि तुमने पाने को ही सुख समझ लिया है। जितना अर्जित किया। जितना अर्जित करना है। अर्जित करने की भी कोई सीमा है भला? जितना पाया उससे अधिक पाने की तुम इच्छा करोगा। यही दुख है। यानी जो नहीं मिला वही दुख है। जो पाया उसी में संतोष किया वही सुख है।

हमारे ऋषि-मुनि जंगलों में तपस्या करते थे और तपस्या में उन्हें सुख का अनुभव होता था। जैन संतों ने जीवन भर तप किया। नंगें पैर चलते ही रहते हैं। पानी की तरह बहते रहते हैं। जो भी मिला ज्ञान का प्रकाश बंटता। जैन संतों ने कभी अपने लिए जीवन नहीं जिया। सुख का त्याग ही जैन संत का दूसरा नाम है। जैन संत कभी सुख की चाह नहीं रखते। जैन धर्म सुख को साधना का हिस्सा मानता है। साधना ही सुख है। यही जैन संतों का ध्येय है। जैन मुनि सुख-दुख से परे सत्ता है। जीवन में सब सुखों का त्याग करने का व्यक्ति मानस बना लेता है और संयम पथ चुन लेता है तो संत जीवन की शुरुआत होती है। अध्यात्म से ही सच्चा सुख होता है। अध्यात्म सुख का नाम है। अध्यात्म को दुख का पर्याय नहीं कह सकते। जहां अध्यात्म है वहां अत्यंत और अपार सुख है। इसलिए एक शब्द में सुख की परिभाषा देना चाहें तो अध्यात्म ही सुख है। और दुख को अभिव्यक्त करना चाहें तो चाहत ही दुख है। चाहत से दुख उत्पन्न होता है। चाहत ही संसार में सारे दुखों का कारण है। जहां चाहत है, जहां चाह है, वहां दुख ही दुख है। सुख और दुख की यही परिभाषा है। अध्यात्म सुख और चाह यानी संपदा यानी भौतिक इच्छा दुख है। दूसरे शब्दों में कहें तो शरीर दुख है और मोक्ष सुख है। शरीर अपने आपमें दुख है और मोक्ष अपने आप में सुख है। शरीर की यात्रा दुखों की ओर ले जाती है और शरीर की यात्रा जब आत्मा से होती हुई मोक्ष की ओर ले जाती है तो असली सुख की प्राप्ति होती है। हे मानव इस दुनिया में कोई सुखी नहीं हैं। सभी दुखी हैं। जब-जब ईश्वर ने भी धरती पर अवतार लिया तो उन्हें भी दुखों सामना करना पड़ा। लेकिन ईश्वरीय तत्व मानव मात्र को सुख की परिभाषा बताने के लिए ही धरती पर अवतार लेता है। राम, कृष्ण, तीर्थंकर, गौतम बुद्ध, नानक, ईसा मसीह, मुहम्मद साहब सब अपने अपने ढंग से धरती पर संदेश देने के लिए आए। मगर मैं बात योगेश्वर श्रीकृष्ण की करूंगा।

श्रीकृष्ण असली सुख हैं। श्रीकृष्ण ही सुख के दाता हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण ही बीज तत्व हैं और श्रीकृष्ण ही वटवृक्ष हैं। बाकी सभी देवता और धर्म उनकी शाखाएं हैं। इसलिए हे मानव सुख चाहिए तो श्रीकृष्ण की शरण में जाओ। श्रीकृष्ण ही सुख के दाता हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण सुख-दुख से परे ऐसी सत्ता है जो मोक्ष के वाहक हैं। आरंभ भी श्रीकृष्ण और अंत के बाद अनंत यात्रा भी श्रीकृष्ण है। सुख-दुख दोनों के अधिष्ठाता भी श्रीकृष्ण हैं। श्रीकृष्ण ही सुदामा को तीनों लोकों का भौतिक सुख देते हैं। श्रीकृष्ण के पास तो अपार संपदा थी। वे तो जगत के नाथ हैं। सारे ऐश्वर्य उनके कदमों में होते हैं, मगर वे विदुर के यहां कंदमूल खाते हैं। इसलिए हे मानव असली सुख संतोष में हैं। असली सुख संयम में हैं। श्रीकृष्ण के पास सबकुछ है क्योंकि उनके पास संयम हैं। वे संपूर्ण सृष्टि के संवाहक हैं। उन्हीं से जीवन शुरू होता है और उन्हीं में आकर जीवन

मिल जाता है। सुख-दुख की परिभाषा भी श्रीकृष्ण है। इसलिए श्रीकृष्ण की भक्ति करें और अपना जीवन सुखी बनाएं। श्रीकृष्ण शरणं ममः श्रीकृष्ण की शरण में जाओजीवन का सुख मिलेगा। दुखों से मुक्ति मिलेगी। हे मानव अब तुम्हें सुख और दुख की परिभाषा समझ में आ चुकी होगी। तुम कितना मानते हो, यह तुम्हारे ऊपर है। सुख-दुख के बारे में आज इतना ही।





24 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

सत्य

सत्य का सफर कभी खत्म नहीं होगा, सत्य की राह पर चलने वाले भी कभी खत्म नहीं होंगे, क्योंकि श्रीकृष्ण आज भी है, सत्य आज भी है,

श्रीकृष्ण सत्यं स्वरूपं : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं।

उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिल्कुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु

कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है।

लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'सत्य' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

सत्य। जो वासुदेव श्रीकृष्ण ने कहा वही सत्य है। जो कुछ है सब सत्य है यानी नासतो विद्यते भावो अर्थात् जो कुछ है वह अपने सहित सब परमात्मा है। यानी मत्तः परतरं नान्यत् किंचिदस्ति धनन्जयश्रीकृष्ण गीता के 11वें अध्याय में कहते हैं और वह परमात्मा यह प्रत्यक्ष विश्व ही है-पश्य में पार्थ रूपाणि, वासुदेवः सर्वम् इति। वाक्यों, कथनों, विश्वासों, विचारों या प्रस्तावों का वह गुण जिसे साधारण वार्तालाप में, तथ्यों से सहमत होने या मामला क्या है, यह बताने के लिए कहा जाता है- सत्य है। सत्य 9 प्रकार का होता है- 1 व्यावहारिक सत्य, 2 वास्तविक सत्य, 3 निजी सत्य, 4 सार्वभौमिक सत्य, 5 अर्द्ध सत्य, 6 पूर्ण सत्य 7 भूतकालीन सत्य 8 वर्तमान सत्य और 9 भावी सत्य।

हे मानव अब इन 9 सत्य के बारे में संक्षेप में बताता हूं। 1 व्यावहारिक सत्य क्या है? जैसा देखा, जैसा सुना और जैसा अनुभव किया, उसको वैसा ही बोलना व्यावहारिक सत्य कहलाता है। व्यवहारिक सत्य में हो सकता है, जो एक के लिए सत्य है, वो दूसरे के लिए असत्य हो। वैसे तो हर व्यक्ति अपने मुताबिक अपना सत्य बना लेता है। 2 वास्तविक सत्य क्या है? ऐसे सत्य को किसी समर्थन या व्याख्या की जरूरत नहीं होती- जैसे मृत्यु अंतिम सत्य है। इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता। जो आया है उसे जाना है। जो जन्म लेता है उसको मृत्यु अवश्य आती है। इसलिए मृत्यु ही वास्तविक सत्य है। वास्तविक सत्य को घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता। वास्तविक सत्य का अर्थ है किसी मामले की वास्तविक स्थिति, वास्तविकता का पालन या निर्विवाद तथ्य। 3 निजी सत्य- हे मानव निजी सत्य वो है जो खुद के लिए सत्य है। मेरे पेट में दर्द हो रहा है, यह मेरे लिए निजी सत्य है, लेकिन लोगों को क्या पता कि मेरे पेट में दर्द हो रहा है, लोगों की नजर में मैं बहाना भी बना सकता हूं, झूठ भी बोल सकता हूं, यानी जो मेरे लिए यानी निजी सत्य हो वह दूसरों के लिए सत्य हो यह जरूरी नहीं। 4 सार्वभौमिक

सत्य- हे मानव जो सार्वभौतिक सत्य है। इसे वैज्ञानिक सत्य कह सकते हैं। यह सत्य सबके लिए समान रूप से सत्य होता है- सूर्य पूर्व दिशा से उदय होता है और पश्चिम में अस्त होता है-यह सार्वभौमिक सत्य है। 5- अर्द्ध सत्य- महाभारत में जब युधिष्ठिर कहते हैं अश्वत्थामा हतोहतः वह अर्द्ध सत्य होता है। यानी अश्वत्थामा की मौत हो गई है। अश्वत्थामा मरा नहीं था पर अश्वत्थामा नाम का हाथी मर गया था। अर्द्ध सत्य की यही परिभाषा है। अर्द्ध सत्य में कही बातें पूर्ण सत्य नहीं होती, मगर पूरी तरह असत्य भी नहीं होती। इसे ही अर्द्ध सत्य कहा जाता है। 6-पूर्ण सत्य- श्रीकृष्ण ही पूर्ण सत्य है। जो पूर्ण तत्व है वहीं पूर्ण सत्य हो सकता है। हो सकता है हे मानव तुम श्रीकृष्ण को पूर्ण सत्य ना मानो। क्योंकि तुम्हारी नजर में अपने-अपने भगवान है, मगर निर्विवाद रूप से श्रीकृष्ण ही संपूर्ण सत्य है। यह बात मैं प्रवचन रूप में ही नहीं कह रहा हूं, मैंने साधना चक्षुओं से प्रत्यक्ष रूप से इस सत्य के दर्शन किए हैं। इसलिए श्रीकृष्ण ही संपूर्ण सत्य है। यहां जो मैंने नौ सत्य बताए हैं ये सभी नौ सत्य मिलकर श्रीकृष्ण अंतिम सत्य के रूप में हमारे सामने आते हैं। 7 भूतकालीन सत्य- हे मानव भूतकालीन सत्य से आशय है जो भूतकाल में सत्य था मगर अब वह उस रूप में सत्य नहीं है। शक्कर जब दूध या चाय में मिल जाती है जो शक्कर चाय और दूध में दिखाई नहीं देती जबकि भूतकाल में शक्कर सत्य थी। शक्कर भूतकाल में दिखाई दे रही थी इसलिए वह भूतकाल में सत्य थी, लेकिन वर्तमान में शक्कर अहसास है, पर सत्य नहीं है। 8 वर्तमान सत्य- तेज हवा चल रही है यह वर्तमान सत्य है, लेकिन थोड़ी देर बात हवा थम जाती है तो जरूरी नहीं कि वह उस समय उसी रूप में सत्य हो क्योंकि अब तेज हवा नहीं है। इसलिए जो वर्तमान में सत्य हो उसका आगे जाकर उसी रूप में सत्य हो जरूरी नहीं। 9 भावी सत्य- जो भूतकाल में सत्य नहीं है, वर्तमान में भी सत्य नहीं है, लेकिन भविष्य में सत्य हो सकता है- पृथ्वी के अलावा किसी ऐसा ग्रह जहां जीवन हो। अभी तक हम इस सत्य को केवल अंदाजा लगा रहे हैं, लेकिन यदि भविष्य में ऐसा ग्रह खोज लिया जाता है तो वह भविष्य का सत्य हो जाता है।

संज्ञा के रूप में सत्य के कई अन्य अर्थ भी हैं। सत्य वास्तविकता के उस संस्करण को संदर्भित करता है जिसमें हम मौजूद हैं। संसार का सबसे बड़ा सत्य मृत्यु ही है। क्योंकि इससे संसार का कोई भी व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता क्योंकि एक ना एक दिन सभी को ये संसार त्यागना है। अब प्रश्न ये उठता है मृत्यु के पश्चात क्या होगा। भगवद गीता में कृष्ण कहते हैं कि जो आज सत्य है लेकिन कल सत्य नहीं है, वह वास्तव में सत्य नहीं है। सत्य शाश्वत है। यह सभी लोगों के लिए हर समय और हर जगह सत्य है।

सत्य या सच को वेद में ब्रह्मांड का आधार बताया गया है। मुंडक उपनिषद में वर्णित भारत का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' सबसे पवित्र माना गया है। सत्य वह है, जो जैसा कहा जाए, वैसा बोला और लिखा भी जाए। जो पूरी तरह यथार्थ या संपूर्ण हो। जिसमें एक प्रतिशत भी अपूर्णता न हो, जिसमें किसी तरह का दोष न हो। वैदिक वांग्मय के अनुसार सत्य के बगैर सृष्टि की सत्ता संभव ही नहीं है। सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य कहा गया है। वेद में सत्य और ऋत् दोनों की महत्ता बताई गई है। ब्रह्मांड का आधार सत्य है तो ऋत् ब्रह्मांड का नियम है। सृष्टि आधार और नियम के बगैर आगे नहीं बढ़ सकती है। हम समझ सकते हैं कि सत्य की शक्ति कितनी है। स्वाभाविक है कि जो सारे ब्रह्मांड का आधार हो, वही सर्वोच्च शक्ति होगी। ब्रह्मांड में जितने ग्रह-उपग्रह हैं, सबका अस्तित्व और स्वभाव सत्य से ही निर्धारित होता है। यह बात अलग है कि इसमें कितना शुभ है और कितना अशुभ है। इसलिए सत्य को त्याग कर ब्रह्मांड और विज्ञान का अस्तित्व नहीं बना रह सकता है।

अब प्रश्न उठता है कि अंधकार और प्रकाश में, दिन और रात में, शुभ और अशुभ में, हिंसा और अहिंसा में किसमें सत्य है और किसमें असत्य है? हालांकि दोनों में सत्य है। अंधकार भी सत्य है, लेकिन शुभ नहीं है और प्रकाश भी सत्य है, लेकिन यह शुभ है। शुभ के साथ जो लाभ प्राप्त होता है वही सच्चा सुख देने वाला है। इसलिए एक साथ शुभ-लाभ लिखा जाता है। हमारा विकास सच्चा होने के साथ, शुभ भी होना चाहिए। अन्यथा ऐसा विकास निर्थक होगा। शुभ से संसार में शुभता बढ़ती है और अशुभ से अशुभता। अशुभ सत्य नहीं है। इसलिए सत्य की विजय के लिए ही प्रयत्न करते रहना चाहिए। जब तक विश्व में सत्य की प्रतिष्ठा हर जगह नहीं होगी, तब तक समाज बे-नियम यानी ऋत् से रहित रहेगा। हमारे यहां कहा गया है कि सत्यं शिवं सुंदरम सत्य ही शिव है और सुंदर है लेकिन सत्य शिव तो है लेकिन सुंदर हो यह जरूरी नहीं। आज पृथ्वी पर सत्य बोलना सुंदर नहीं रह गया है। शिव को तो हे मानव तुम सत्य मानते हो मगर जो वास्तव में सत्य बोलता है वह तुम्हें सुंदर लगे यह जरूरी नहीं।

सत्य को हमेशा संघर्ष करना पड़ता है। पर हे मानव सत्य हमेशा विजयी होता है। सत्य कभी पराजित नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण सत्य के लिए असत्य को भी धारण कर लेते हैं। लेकिन सत्य की जंग में जीत हमेशा श्रीकृष्ण की होती है। क्योंकि सत्य ही पूर्ण श्रीकृष्ण है। सत्य और न्याय में अंतर होता है। जहां सत्य हो वहां न्याय हो यह जरूरी नहीं। हे मानव तुम्हारे यहां अदालतों में सत्य के नाम पर झूठी गवाहियां दी जाती हैं और न्यायाधीश सत्य के नाम पर न्याय करते हैं। मगर जरूरी नहीं कि जहां सत्य है उसके साथ

न्याय हुआ ही हो। इसलिए हे मानव सत्य और न्याय अलग-अलग शब्द है। सत्य को न्याय मान लेना उचित नहीं है। सत्य है वहां न्याय की लड़ाई हो सकती है, मगर जरूरी नहीं कि सत्य के साथ न्याय हो। पर इतना जरूर है सत्य के साथ अन्याय हो सकता है, मगर सत्य को पराजित नहीं किया जा सकता। अंतिम लड़ाई सत्य ही जीतता है। सत्य की जंग में कई बार अन्याय होता है। अन्याय की यात्रा के बाद सत्य वियजी होता है। सत्य की जंग में कई संदर्भ छूट जाते हैं। सत्य की जंग में कई योद्धा मारे जाते हैं। मगर अंतिम जंग सत्य ही जीतता है। क्योंकि सत्यमेव जयते कहा गया है। वाकई सत्यमेव जयते ही होता है। हे मानव आज तुम्हें सत्य के बारे में कुछ बातें बताईं। संत इस जगत में सत्य की खोज करते हैं। सत्य की खोज में संत अपनी साधना करते हैं। साधना और सत्य का सफर चलता रहता है। आज कुछ संतों ने सत्य को और साधना को व्यापार बना दिया है। मगर यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि साधना, सत्य और संत का सफर मोक्ष की ओर ले जाता है। सत्य एक सफर है। जो युगों युगों से चला आ रहा है। सत्य का सफर कभी खत्म नहीं होगा। सत्य की राह पर चलने वाले भी कभी खत्म नहीं होंगे। क्योंकि श्रीकृष्ण आज भी हैं। सत्य आज भी है। जहां सत्य है वहीं श्रीकृष्ण है। श्रीकृष्ण सत्यं स्वरूपं श्रीकृष्ण ही सत्य का स्वरूप है। ऐसे सत्य रूपी श्रीकृष्ण को बारंबार नमन। सत्य के बारे में आज इतना ही।





25 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

शक्ति

प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन के संयोग को तुम शक्ति कहते हो, मगर श्रीकृष्ण में ये तीनों तत्व समाए हुए हैं, श्रीकृष्ण शक्तियों की शक्ति है, हे मानव- यह तुम्हारे विज्ञान के अहंकार को तूफान में उई की तरह ध्वस्त कर सकता है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते

हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'शक्ति' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

शक्ति। यानी परमाणु। हे मानव तुम्हारा विज्ञान परमाणु का फार्मूला इस प्रकार बताता है- प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन इसके संयोग से परमाणु का निर्माण होता है। यानी तीन तत्व मिलकर परमाणु का निर्माण करते हैं। लक्ष्मण पर मेघनाद ने अंतिम युद्ध में तीन शस्त्रों का प्रयोग किया था। इंद्रजीत सबसे पहले ब्रह्मास्त्र का प्रयोग लक्ष्मण पर करता है लेकिन ब्रह्मास्त्र लक्ष्मण के पास जाकर बिना वार किए वापस लौट जाता है। यह देखकर इंद्रजीत हैरान हो जाता है। इसलिए वह क्रोधित होकर भगवान शिव का पाशुपतास्त्र लक्ष्मण पर चला देता है, लेकिन पाशुपातस्त्र भी बिना प्रभाव किए ही वापस लौट आता है। प्रयासरत इंद्रजीत त्रिलोकी की अंतिम शक्ति भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र का अस्त्र लक्ष्मण पर चलाता है, लेकिन लक्ष्मण शेषनाग का अवतार थे, इसलिए वह सुदर्शन चक्र लक्ष्मण की परिक्रमा करके वापस मेघनाद के पास चला जाता है। यह देख कर मेघनाद को विश्वास हो जाता है कि लक्ष्मण और श्रीराम कोई साधारण मानव नहीं है वह निश्चित ही भगवान का कोई अवतार है। यही समझाने के लिए मेघनाद युद्ध छोड़कर रावण के पास आता है और बाहर से ही उन्हें संबोधित करने लगता है। हे मानव तुम्हारे विज्ञान ने जिस परमाणु शक्ति की खोज आज की है, वह युगों पहले खोजी जा चुकी थी। ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र और सुदर्शन चक्र मिलकर ही परमाणु की रचना करते हैं। तीनों अस्त्र स्वतंत्र रूप से तीन शक्तियां हैं और मिल जाती है तो परमाणु की रचना कर देते हैं। इसे यूं भी कहें कि ऋतुएं भी तीन होती हैं सर्दी, गर्मी, बरसात इन तीनों की ताकत मिलकर परमाणु यानी शक्ति की रचना करते हैं। देवता भी तीन कहे गए हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीन देव ही मिलकर परमाणु जैसी विनाशक शक्ति बनाते हैं। धरती, आकाश, पाताल ये तीन तत्व मिलकर भी परमाणु शक्ति की रचना करते हैं। वात, पित,

कफये तीन तत्व मिलकर भी परमाणु की रचना करते हैं। ठोस, द्रव्य, गैस..तीन तरह के पदार्थ मिलकर भी परमाणु की रचना करते हैं। भूत, भविष्य और वर्तमानतीन काल मिलकर परमाणु की रचना करते हैं। संस्कृत में तीन लिंग होते हैं- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग। संस्कृत ही देव वाणी है और आदिभाषा है। इसलिए ये तीन लिंग मिलकर ही परमाणु की रचना करते हैं। हे मानव संसार में शक्ति का यही फॉर्मूला है। विज्ञान केवल शक्ति को प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन में ढूंढ़ता है, जबकि अध्यात्म में शक्ति की रचना में त्रिदेव, त्रिशस्त्र, त्रिपदार्थ, त्रिऋतु, त्रिदोष, त्रिलिंग, त्रिकाल, त्रिलोक जिसे त्रितत्व भी कहते हैं मिल बनाती है। ये तीन-तीन की शक्तियों का जोड़ा जब एक साथ मिलता है जो जगत की सारी शक्तियों का निर्माण कर देता है जिसमें आसुरी शक्ति, नारी शक्ति, पुरुष शक्ति, देव शक्ति, देवी शक्ति, किन्नर शक्ति, भूत शक्ति, पिशाच शक्ति, पशु शक्ति और दुनिया में तमाम शक्तियों का निर्माण अध्यात्म के अनुसार उपरोक्त त्रिशक्तियों के संयोग से हुआ है। हे मानव, तुम जिसे परमाणु शक्ति कहते हो। अध्यात्म जिसे त्रिदेव शक्ति कहता है। लेकिन अध्यात्म में परमाणु शक्ति से भी एक दिव्य शक्ति होती है और वह शक्ति होती है देवी शक्ति। देवी के नौ रूप हैं। नवरात्रा में हे मानव तुम इसकी साधना करते हो। इन नौ देवियों की शक्ति के मुकाबले दुनिया में कोई शक्ति नहीं है। तुम्हारी परमाणु शक्ति भी नहीं। यही आदि शक्ति है। अपार शक्ति है। अमोघ शक्ति है। असली शक्ति यही है। इस शक्ति से देवता भी डरते हैं। देवी शक्ति के आगे तीनों देव अधीर हो जाते हैं। निस्तेज हो जाते हैं। क्योंकि इस शक्ति से बड़ा कोई नहीं है। ईश्वरीय शक्ति में वास्तविक शक्ति देवी शक्ति है। देवी के नौ स्वरूप ही परमाणु से भी असंख्या गुणा शक्ति रखते हैं। दुनिया में इससे बड़ी शक्ति आज तक न हुई है और न होगी। श्रीकृष्ण की शक्ति की बात करें तो इनमें सारी शक्तियां आकर समा जाती है।

हे मानव शक्ति का दूसरा रूप साधना है। तप है। हमने शास्त्रों में सुना है और पढ़ा है कि राक्षस हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या करके देवताओं को प्रसन्न करते थे और वरदान मांगते थे। ये वाकई कहानियां नहीं हैं। हकीकत है। देवता उन्हें वरदान देते थे और राक्षस अपने को अमर समझ कर अहंकार में डूब जाते थे। मगर अंततः देवताओं या फिर देवी शक्ति के हाथों मारे जाते थे। आज भी तुम हे मानव अपने ज्ञान से, तप से, पुरुषार्थ से, विज्ञान के बल पर कई अविष्कार कर चुके हो। तुम अपने को शक्तिशाली समझ बैठे हो। लेकिन ध्यान रहे इन सबका संचालन कहीं न कहीं से हो रहा है। तुमने जो कुछ बनाया है वो इस जगत में बनाया है। जगत से बाहर कुछ नहीं बनाया। लेकिन जो शक्ति है वो असल में जगत से परे है। वो जगदीश है। जगदीश्वर है। और जिस दिन जगदीश्वर करवट बदलेगा तुम्हारी सारी उपलब्धि राख की ढेर हो जाएगी। तुम जिस बारूद की

रचना कर बैठे हो दरअसल उसी बारूद के ढेर पर तुम्हारा अंत छिपा है। जब शक्ति चरम पर होती है तो वह अपना स्वरूप समेटती है। श्रीकृष्ण ने अपनी माया समेटी थी और बहेलिए के हाथों अपने धाम को चले गए थे। राम ने जलसमाधि ले ली थी। हर शक्ति को आखिर विराम चाहिए। इसलिए हे मानव, तुम जिस शक्ति पर अहंकार कर रहे हो, वह शक्ति दरअसल कहीं और से संचालित हो रही है। तुम्हारे हाथ में न कल कुछ था और न ही आज है और न ही भविष्य में कुछ रहेगा। ईश्वर से बड़ी शक्ति कुछ नहीं है। परमाणु भी नहीं। क्योंकि परमाणु से भी बड़ी शक्ति ईश्वर है। नौ दैवी है। देवीय शक्ति और देवी शक्ति मिलकर परमशक्ति का निर्माण करते हैं। शक्ति से भी जो शक्तिशाली होती है वही परमशक्ति होती है। इसे परास्त नहीं किया जा सकता।

हे मानव, अब तुम्हें राज की बात बताता हूं। श्रीकृष्ण ही शक्ति की भी शक्ति है। उसी में नौ देवियां, त्रिदेव, मानव, भूत, पिशाच, किन्नर, यक्ष, राक्षस, पशु और तमाम जीव अंततः समा जाते हैं। श्रीकृष्ण ही अंतिम और अनंत शक्ति है। इसे मैंने अपने अनंत चक्षुओं से साक्षात् देखा है। इस जगत को श्रीकृष्ण ही त्राण दे सकते हैं। श्रीकृष्ण ने ही समय-समय पर अलग-अलग धर्म के मसीहाओं को जन्म देकर भेजा और धरती पर लीलाएं की। धरती पर मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे, आश्रम, उपासरे, मठ और तमाम आराधना स्थल श्रीकृष्ण की शक्तियों से ही संचालित होते रहे हैं। इस धरती पर जितने भी संत, ऋषि, देव-पैगंबर और अवतार हुए वे श्रीकृष्ण का ही अंश हैं। हर धर्म का सार श्रीकृष्ण है। इसलिए श्रीकृष्ण साक्षात् शक्ति स्वरूप श्रीकृष्ण ही शक्ति का स्वरूप है। इस शक्ति स्वरूपा श्रीकृष्ण को नमन करें।

जब-जब शक्ति की बात होगी। श्रीकृष्ण का नाम लिया जाएगा। श्रीकृष्ण में जगत की सारी शक्ति समाहित है। जब सारी शक्तियां निस्तेज हो जाती है तो श्रीकृष्ण की शक्ति अपना असर दिखाती है। या कहें कि जब शक्तियां किसी के वश में नहीं आती तो श्रीकृष्ण की शक्ति उन शक्तियों का संहार करती है। महाभारत के युद्ध में इस सत्य को केवल बरबरीज जानता था क्योंकि उसने महाभारत युद्ध की सच्चाई देखी थी। उसने देखा था कि किस तरह श्रीकृष्ण ने पांडवों को युद्ध जिताया था। किस तरह श्रीकृष्ण ने कौरव सेना के एक-एक योद्धा का विनाश किया था। जहां श्रीकृष्ण है वहां तीनों लोकों की शक्तियां हैं। श्रीकृष्ण शक्ति का परम तत्व है। वह तत्व होते हुए तत्व से परे हैं। वह चेतन शक्ति स्वरूप है। जब-जब श्रीकृष्ण की बात होगी, शक्ति स्वरूप इस शक्ति को नमन किया जाएगा। जो श्रीकृष्ण के अस्तित्व को चैलेंज करेगा, उसका अस्तित्व मिट जाएगा। मेरे मुंह से इस समय साक्षात् श्रीकृष्ण अपना परिचय दे रहे हैं। मैं जो इस

समय चातुर्मास की साधना में लीन हूं। मैंने अपनी साधना चक्षुओं से इस सार तत्व को समझकर हमेशा श्रीकृष्ण का स्मरण किया है। जिस पर श्रीकृष्ण की कृपा होती है वही इतनी बड़ी बात कह सकता है। हे मानव जो स्वरूप श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिखाया था। जो स्वरूप श्रीकृष्ण ने कौरव सभा में दिखाया था। वही स्वरूप मैं अपने साधना चक्षुओं से हजारों बार देख चुका हूं। इसलिए हे मानव। मान लो शक्ति के रूप में जिस परमाणु पर तुम्हें अहंकार है, श्रीकृष्ण के आगे वह परमाणु शक्ति तूफान में रुई की तरह है। श्रीकृष्ण के आगे परमाणु शक्ति कोई मायने नहीं रखती। जब-जब अध्यात्म की शक्ति से इसे महसूस किया जाएगा तभी शक्ति की असली परिभाषा को समझा जा सकता है। शक्ति मन में होती है। शक्ति आत्मा में होती है। शक्ति परमात्मा स्वरूप है। शक्ति को तुम बाहर खोज रहे हो। शक्ति दरअसल हमारे भीतर है। भीतर की शक्ति से ही सारे युद्ध जीते जा सकते हैं। जब आदमी की आत्मशक्ति जागृत होती है तो सारी बाहरी शक्तियां ध्वस्त हो जाती है। हे मानव आत्मशक्ति को पहचानो। अध्यात्म की शक्ति की पहचानो। श्रीकृष्ण की शक्ति को पहचानो। शक्ति के असली स्वरूप को पहचानने में तुम अब भी भूल कर रहे हो। प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन का संयोग परमाणु तो बना सकता है मगर परमेश्वर तो प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन को अपने भीतर समाहित किए हुए हैं। श्रीकृष्ण में ही प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन समाहित हैं। यही जगत की सबसे बड़ी शक्ति है। इसलिए हे मानव, श्रीकृष्ण के अस्तित्व को स्वीकारो। उनका हमेशा स्मरण करो। जब भी मुसीबत में आओगे श्रीकृष्ण ही तुम्हारी और इस जगत की रक्षा करेंगे। क्योंकि श्रीकृष्ण ही सुरक्षा देते हैं और श्रीकृष्ण ही संहार करते हैं। श्रीकृष्ण ही जीवन दाता है और श्रीकृष्ण ही मृत्यु दाता है। असली शक्ति श्रीकृष्ण है। शक्ति के बारे में आज इतना ही।





26 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

पुरुषार्थ

धरती के शास्त्रों में पुरुषार्थ चार कहे हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, लेकिन हमारा दावा है कि पुरुषार्थ केवल दो ही होते हैं- व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ, संसार व्यक्त पुरुषार्थ है और श्रीकृष्ण अव्यक्त पुरुषार्थ है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'पुरुषार्थ' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

पुरुषार्थ। हे मानव आज तुम्हारे पुरुषार्थ की परीक्षा है। आयुर्वेद में पौरुष यानी वीर्य को पुरुषार्थ कहा गया है। जिसमें पौरुष नहीं यानी वीर्य नहीं तो उसमें पुरुषार्थ कहाँ से आएगा? वीर्य तत्त्व ही पुरुषार्थ है। पाँवर ही पुरुषार्थ है। दुनिया में पाँवर ही पुरुषार्थ है। यानी पुरुषार्थ ही सुख है, पुरुषार्थ ही संतान उत्पत्ति करने की क्षमता है, पुरुषार्थ वीर्य तत्त्व है। पुरुषार्थ शक्ति है। जीवन में शक्ति नहीं, वीर्य नहीं तो पुरुषार्थ नहीं? पुरुषार्थ व्यक्त में भी होता है और अव्यक्त में भी। इसलिए दो ही पुरुषार्थ है व्यक्त और अव्यक्त। चेतना और अवचेतना। हे मानव तुम्हारे शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्षजबकि मैंने अपने साधना चक्षुओं से केवल दो पुरुषार्थ की खोज की है। और वह दो पुरुषार्थ हैं- अव्यक्त पुरुषार्थ और व्यक्त पुरुषार्थ।

हे मानव पहले इस जगत के शास्त्रों की बातें कर लेते हैं। फिर मैं बताऊंगा कि केवल दो पुरुषार्थ होते हैं- व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ। इसे चेतन पुरुषार्थ और अवचेतन पुरुषार्थ भी कहते हैं। पहले हे मानव शास्त्रों की बातें सुनों। पुरुषार्थ से तात्पर्य मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है ('पुरुषैर्यते इति पुरुषार्थः')। पुरुषार्थ = पुरुष+अर्थ = पुरुष का तात्पर्य विवेक संपन्न मनुष्य से है अर्थात् विवेकशील मनुष्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः मनुष्य के लिये वेदों में चारपुरुषार्थों का नाम लिया गया है- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसलिए इन्हें 'पुरुषार्थचतुष्टय' भी कहते हैं। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक हैं। चार्वाक दर्शन केवल दो ही पुरुषार्थ को मान्यता देता है- अर्थ और काम। वह धर्म और मोक्ष को नहीं मानता। महर्षि भी मनु के पुरुषार्थ-चतुष्टय के समर्थक हैं किन्तु वे मोक्ष तथा परलोक की अपेक्षा धर्म, अर्थ, काम पर आधारित सांसारिक जीवन को सर्वोपरि मानते हैं। योगवासिष्ठ के अनुसार सद्जनो और शास्त्र के उपदेश अनुसार चित्त का विचरण ही पुरुषार्थ कहलाता है।

भारतीय संस्कृति में इन चारों पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। पुरुषार्थ चतुष्टय

का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। इस सिद्धान्त की संरचना भारत के ऋषियों, मुनियों और विद्वज्जनों ने मानव-जीवन के आध्यात्म को दृष्टि में रखकर की थी। वस्तुतः प्राचीन काल के भारतीय विचारकों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक और नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के निमित्त पुरुषार्थ की योजना की थी। जीवन में भौतिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी महत्वपूर्ण माना गया है। वस्तुतः भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जीवन परस्पर सम्बद्ध हैं। धर्म, अर्थ, काम ये तीनों पुरुषार्थ को अच्छी तरह कर लेने से ही मोक्ष की प्राप्ति सहज हो जाती है। प्राचीन काल में ही भारतीय मनीषियों ने धर्म को वैज्ञानिक ढंग से समझने का प्रयत्न किया था। धर्म का विवेचन करते समय समझाया गया है कि धर्म वह है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हो- यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। 'अभ्युदय' से लौकिक उन्नति का तथा 'निःश्रेयस' से पारलौकिक उन्नति एवं कल्याण का बोध होता है। अर्थात् जीवन के ऐहिक और पारलौकिक दोनों पक्षों से धर्म को जोड़ा गया था। धर्म की इससे अधिक उदार परिभाषा और क्या हो सकती है? धर्म शब्द का अर्थ अत्यन्त गहन और विशाल है। इसके अन्तर्गत मानव जीवन के उच्चतम विकास के साधनों और नियमों का समावेश होता है। धर्म कोई उपासना पद्धति न होकर एक विराट और विलक्षण जीवन-पद्धति है। यह दिखावा नहीं, दर्शन है। यह प्रदर्शन नहीं, प्रयोग है। यह चिकित्सा है मनुष्य को आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त कर सार्थक जीवन तक पहुंचाने की। यह स्वयं द्वारा स्वयं की खोज है। धर्म, ज्ञान और आचरण की खिड़की खोलता है। धर्म, आदमी को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। अनुशासन के अनुसार चलना धर्म है। हृदय की पवित्रता ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। धर्म का सार जीवन में संयम का होना है। दूसरा पुरुषार्थ अर्थ को कहा गया है। अर्थात् जो भी विचार और क्रियाएं भौतिक जीवन से संबंधित हैं उन्हें 'अर्थ' की संज्ञा दी गयी है। धर्म के बाद दूसरा स्थान अर्थ का है। अर्थ के बिना, धन के बिना संसार का कार्य चल ही नहीं सकता। जीवन की प्रगति का आधार ही धन है। उद्योग-धंधे, व्यापार, कृषि आदि सभी कार्यों के निमित्त धन की आवश्यकता होती है। यही नहीं, धार्मिक कार्यों, प्रचार, अनुष्ठान आदि सभी धन के बल पर ही चलते हैं। अर्थोपार्जन मनुष्य का पवित्र कर्तव्य है। इसी से वह प्रकृति की विपुल संपदा का अपने और सारे समाज के लिए प्रयोग भी कर सकता है और उसे संवर्द्धित व संपुष्ट भी। पर इसके लिए धर्माचरण का ठोस आधार आवश्यक है। धर्म से विमुख होकर अर्थोपार्जन में संलग्न मनुष्य एक ओर तो प्राकृतिक सम्पदा का विवेकहीन दोहन करके संसार के पर्यावरण संतुलन को नष्ट करता है और दूसरी ओर अपने क्षणिक लाभ से दिग्भ्रमित होकर अपने व समाज के लिए अनेकानेक रोगों व कष्टों को जन्म देता है। धर्म

ने ही हमें यह मार्ग सुझाया है कि प्रकृति से, समाज से हमने जितना लिया है, अर्थोपार्जन करते हुए उससे अधिक वापस करने को सदैव प्रयासरत रहें। शास्त्रों ने अर्थ को मानव की सुख-सुविधाओं का मूल माना है। धर्म का भी मूल, अर्थ है सुख प्राप्त करने के लिए सभी अर्थ की कामना करते हैं।

इसलिए आचार्य कौटिल्य ने त्रिवर्ग में अर्थ को प्रधान मानते हुए इसे धर्म और काम का मूल कहा है। भूमि, धन, पशु, मित्र, विद्या, कला व कृषि सभी अर्थ की श्रेणी में आते हैं। इनकी संख्या निश्चित करना सम्भव नहीं है क्योंकि यह मानव जीवन की आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। मनुष्य स्वभावतः कामना प्रधान होता है, यह कहना भी गलत नहीं होगा वह कामनामय होता है। इन सभी कामनाओं की पूर्ति का एक मात्र साधन अर्थ है। आचार्य वात्स्यायन 'अर्थ' को परिभाषित करते हुए विद्या, सोना, चांदी, धन, धान्य गृहस्थी का सामान, मित्र का अर्जन एवं जो कुछ प्राप्त हुआ है या अर्जित हुआ है उसका वर्धन सब अर्थ है। अब काम पुरुषार्थ की चर्चा करेंगे। काम ज्ञान के माध्यमों का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु, जिह्वा, तथा घ्राण तथा इन्द्रियों के साथ अपने अपने विषय - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, तथा गंध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति 'काम' है। इसके अलावा स्पर्श से प्राप्त अभिमानिक सुख के साथ अनुबद्ध फलव्रत अर्थ प्रीति काम कहलाता है। इसके अलावा अर्थ, धर्म तथा काम की तुलनात्मक श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुये कहा गया है कि त्रिवर्ग समुदाय में पर से पूर्व श्रेष्ठ है। काम से श्रेष्ठ अर्थ है तथा अर्थ से श्रेष्ठ धर्म है। परन्तु व्यक्ति व्यक्ति के अनुसार यह अलग-अलग होता है। माध्वाचार्य के अनुसार विषयभेद के अनुसार काम दो प्रकार का होता है।

इनमें से प्रथम को सामान्य काम कहते हैं। जब आत्मा की शाब्दिक विषयों के भोगने की इच्छा होती है तो उस समय आत्मा का प्रयत्न गुण उत्पन्न होता है। अर्थात् आत्मा सर्वप्रथम मन से संयुक्त होती है तथा मन विषयों से। स्रोत, त्वच, चक्षु, जिह्वा तथा घ्राण इन्द्रिय की क्रमशः स्पर्श, रूप, रस, गन्ध में प्रवृत्त होते हैं। काम की इस प्रकृति में न्याय वैशेषिक मत अधिक झलकता है। इसके अनुसार शब्दादि विषयणी बुद्धि ही विषयों के भोग के स्वभाव वाली बुद्धि ही विषयों के भोग वाली स्वभाव वाली होने के कारण उपचार से कम कही जाती है। अर्थात् आत्मा बुद्धि के द्वारा विषयों को भोगता हुआ सुख को अनुभव करता है। जो सुख है, सामान्य रूप से वही काम है।

अब मोक्ष पुरुषार्थ के बारे में बताएंगे। आत्मा को अमर कहा गया है। यह एक नित्य अनादि तत्व है जो बंधन अथवा मुक्ति (मोक्ष) की अवस्था में रहती है। बद्ध

अवस्था में इसे अपने कर्मों के अनुसार इसी जन्म अथवा अगले जन्मों में कर्मफल भोगने पड़ते हैं। मनुष्य के अलावा सभी शरीर मात्र भोग योनि हैं, मानव शरीर कर्म योनि है। योगी सद्गुरु के मार्गनिर्देशन में 'विकर्म' द्वारा अपने शुभ-अशुभ कर्मों से ऊपर उठ जाता है और शरीर रहते ही परमात्मा की प्राप्ति कर लेता है। इसे ही योग (आत्मा एवं परमात्मा का मिलन) कहा गया है। अब वह अकर्म की स्थिति में है और इस शरीर में प्राप्त प्रारब्ध भोग को समाप्त कर लेने के बाद वह अपने शरीर से विदेहमुक्त हो जाता है। उसे अब नया जन्म नहीं लेना पड़ता, वह बंधन से मुक्त हो जाता है। मोक्ष को प्राप्त कर लेना ही आत्मा का मुख्य उद्देश्य है जो कि मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

हे मानव अभी तुमने शास्त्रों के अनुसार चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के बारे में जाना। अब सुनो हमारी साधना चक्षुओं से हमने केवल दो पुरुषार्थ का अनुभव किया है। और दो पुरुषार्थ है व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ। व्यक्त पुरुषार्थ में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के सभी कार्य समाहित है। जिसे तुम्हारे ऋषियों ने आश्रम कहा है वे सभी हमारी नजर में व्यक्त पुरुषार्थ ही है। दूसरा है अव्यक्त पुरुषार्थ। इस अव्यक्त पुरुषार्थ में ही असली पुरुषार्थ छिपा है। श्रीकृष्ण ही अव्यक्त पुरुषार्थ है। जब अव्यक्त व्यक्त में तब्दिल होता है तो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के लोग इसमें समाहित हो जाते हैं। एक ऋषि ब्रह्मचारी भी हो सकता है और गृहस्थ भी। ब्रह्मचारी ऋषि के लिए काम और अर्थ पुरुषार्थ जरूरी नहीं भी हो सकता है। जहां तक हमारा मानना है संसार के समस्त जीव व्यक्त पुरुषार्थ की श्रेणी में आते हैं। केवल श्रीकृष्ण ही अव्यक्त पुरुषार्थ की श्रेणी में आते हैं। इसे अवचेतन पुरुषार्थ भी कहते हैं।

इस अवचेतन पुरुषार्थ में चेतन हमेशा छिपा रहता है। हे मानव इस जगत में केवल दो ही पुरुषार्थ है- व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ। शरीर व्यक्त पुरुषार्थ है और आत्मा अव्यक्त पुरुषार्थ है। आत्मा और वीर्य में अंतर है। वीर्य केवल व्यक्त पुरुषार्थ का एक पार्ट है और आत्मा अव्यक्त पुरुषार्थ का एक पार्ट है। जो दो तरह के पुरुषार्थ मैंने कहे हैं व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ दरअसल श्रीकृष्ण अव्यक्त पुरुषार्थ का पर्याय हैं। जब श्रीकृष्ण अवतरित होते हैं तो वे व्यक्त पुरुषार्थ में कन्वर्ट हो जाते हैं। इसलिए हे मानव दुनिया के सारे धर्मों और अध्यात्म को मैं बता देना चाहता हूं कि केवल दो ही पुरुषार्थ होते हैं- व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त पुरुषार्थ। आज से पहले यह बात किसी ऋषि ने नहीं कही होगी। हे मानव तुम्हारे सारे शास्त्रों में चार पुरुषार्थ कहे गए हैं। लेकिन हकीकत में दो ही पुरुषार्थ होते हैं और वे हैं व्यक्त पुरुषार्थ और अव्यक्त

पुरुषार्थ। इसे ही मैं चेतन और अवचेतन पुरुषार्थ कहता हूँ। इसलिए संसार के प्राणी हमेशा व्यक्त पुरुषार्थ में जीवन भर लगे रहते हैं। मगर श्रीकृष्ण अव्यक्त पुरुषार्थ में रहते हैं। जब-जब श्रीकृष्ण व्यक्त होते हैं तो वे धरती पर व्यक्त पुरुषार्थ की लीला करते हैं। यही पुरुषार्थ का असली अर्थ है। दूसरे शब्दों में कहें तो संसार व्यक्त पुरुषार्थ है और श्रीकृष्ण अव्यक्त पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ के बारे में आज इतना ही।





27 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

आनंद

न तो दुख से आनंद की कमी हो सकती है और न ही सुख से आनंद में वृद्धि हो सकती है, जो सुख-दुख में संयम रखे वही आनंद को प्राप्त करता है, आनंद शारीरिक सुख की सत्ता से ऊपर आध्यात्मिक शिखर पर पहुंचकर संयम

पद को धारण करना है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका

आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप है। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'आनंद' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

आनंद। जिसे करने से खुशी मिले वही आनंद है। यह छोटी सी व्याख्या है आनंद की। मगर आनंद इतना छोटा शब्द नहीं है। आनंद के मायने बड़े गूढ़ हैं। जिस आनंद को प्राप्त करने में हमारे ऋषि-मुनि हजारों साल तपस्या करते रहे और कुछ प्राप्त कर लेते हैं और कुछ नहीं भी कर प्राप्त कर पाते। विश्वामित्र का उदाहरण देते हैं। मेनका उनकी साधना-तपस्या भंग कर देती है और एक ऋषि समाधि की बजाय शारीरिक आनंद में लग जाते हैं। हे मानव, कामदेव नाम के देवता ने महादेव की तपस्या भंग करने की कोशिश की थी और महादेव की आंखें खुल जाती है और कामदेव जलकर भष्म हो जाते हैं। कामदेव को फिर से जीवित कर दिया जाता है। ये सब कहानियां तुमने शास्त्रों में पढ़ी और सुनी है। कामदेव को आनंद का प्रतीक माना गया है। हे मानव कामदेव के बगैर सृष्टि का चक्र नहीं चल सकता। कामदेव को वरदान है कि वह सृष्टि का चक्र निरंतर बनाए रखने के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। कामदेव ही आनंद का दूसरा नाम है। एक ऋषि जब कामदेव के रहित होकर तपस्या करता है तो वह आनंद नहीं समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेता है। आनंद और समाधि में अंतर है। जब ऋषि समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेता है तो आनंद शब्द पीछे छूट जाता है। जहां कामदेव है वहां आनंद है। आनंद पशुओं, जीवों में भी होता है। क्योंकि सृष्टि में कामदेव व्यापक है। कामदेव ही आनंद के प्रतिरूप हैं। आनंद शब्द के तुम्हारे जगत के दर्शन में और तुम्हारे कंप्यूटरीकृत ज्ञान में आनंद शब्द के मायने क्या है उसके बारे में भी बता देता हूं।

हे मानव, आनंद उस व्यापक मानसिक स्थितियों की व्याख्या करता है जिसका अनुभव मनुष्य और अन्य जंतु सकारात्मक, मनोरंजक और तलाश योग्य मानसिक स्थिति के रूप में करते हैं। इसमें विशिष्ट मानसिक स्थिति जैसे सुख, मनोरंजन, खुशी, परमानंद और उल्लासोन्माद भी शामिल है। हे मानव, मनोविज्ञान में आनंद सिद्धांत के

तहत आनंद का वर्णन सकारात्मक पुनर्भरण क्रियाविधि के रूप में किया गया है जो जीव को भविष्य में ठीक वैसी स्थिति निर्माण करने के लिए उत्साहित करती है जिसे उसने अभी आनंदमय अनुभव किया। इस सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार जीव उन स्थितियों की पुनरावृत्ति नहीं करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं जिससे उन्हें भूतकाल में किसी प्रकार का संताप हुआ हो। हे मानव, जगत के दर्शन के अनुसार आनंद का अनुभव व्यक्तिपरक है और प्रत्येक व्यक्ति एक ही स्थिति में भिन्न प्रकार एवं परिमाण के सुख का अनुभव करते हैं। अनेक आनंदमय अनुभव, बुनियादी जैविक क्रियाओं के तृप्ती से संलग्न है जैसे कि भोजन, व्यायाम, काम और शौच भी। अन्य आनंदमय अनुभव सामाजिक अनुभवों एवं सामाजिक क्रियाओं से संलग्न हैं जैसे कार्यसिद्धि, मान्यता और सेवा, सांस्कृतिक कलाकृतियों की प्रशंसा एवं कला, संगीत और साहित्य अक्सर आनंदमय होते हैं। मनोरंजक, नशीली दवाओं का प्रयोग भी सुखद अनुभूति दे सकता है, कुछ नशीली दवाएं ग्रहण करने पर वह सीधे मस्तिष्क में उल्लास व उन्माद पैदा करती हैं। हे मानव उन्माद को भी कभी कभी आनंद का नाम दे दिया जाता है। नशा करने से आनंद की अनुभूति तो होती है पर वह क्षणिक होती है। हे मानव धरती पर लोग नशे में ही आनंद ढूंढने लगे हैं। नशा करने से लोगों को आनंद मिलता है। लेकिन सच्चा ऋषि कभी पदार्थों का नशा नहीं करता। वह तो केवल प्रभु नाम का नशा करता है।

हे मानव तुम्हारे जगत के दर्शन और विद्वानों की व्याख्या पर गौर करें तो सर्वोत्तम आनंद पीड़ा की अनुपस्थिति है। आनंद का तात्पर्य, “दैहिक पीड़ा से मुक्ति एवं आत्मा की अशांति से मुक्ति है। सुख की अनुभूति प्रमुख कल्याण है। सुखद अनुभूति का अगर सूक्ष्म परीक्षण किया जाए तो यह प्रकट होगा कि यह अनिवार्य रूप से सिर्फ पीड़ा का उन्मूलन मात्र है। व्यक्ति जितना अधिक भूखा होगा खाना खाने पर उसके आनंद की अनुभूति उतनी ही गहरी होगी। आनंद की संतुष्टि जीव के आवश्यकता और अभिलाषा के अनुपात में ही होती है। जब इन जरूरतों की पूर्ति या अभिलाषाओं की संतुष्टि होती है तो यह अनुभूति वास्तव में विकर्षण में तब्दील हो जाती है। क्योंकि काम अथवा भोजन की अधिकता सुखदाई न हो कर पीड़ादायक बन जाती है। मानवीय आवश्यकताएं और इच्छाएं अनंत हैं और परिभाषा के द्वारा इसकी संतुष्टि असंभव है। सुख की अनुभूति का केंद्र मस्तिष्क संरचना में एक समुच्चय है, मुख्यतः यह नाभिकीय अकुम्बेस है जो सिद्धांत के अनुसार विद्युत्तीय तरंगों द्वारा उत्तेजित होने पर अत्यधिक सुख उत्पन्न करता है। हे मानव आनंद शब्द के तुमने अभी अलग-अलग मायने जाने।

हम हमारी नजर में आनंद क्या है? जो नंद के यहां आए हैं यानी श्रीकृष्ण ही

आनंद है। नंद के आनंद भयो जय कन्हैयालाल कीयह जयघोष तुमने सुना होगा। श्रीकृष्ण नाम ही आनंददायी है। श्रीकृष्ण ही आनंद स्वरूप है। श्रीकृष्ण के शिवाय कोई आनंददायी नहीं है। श्रीकृष्ण नाम में आनंद है। महर्षि अरविंद ने इसे पहचाना था। तपस्वी योगानंद ने इसे पहचाना था। योगानंद ने अपने तपोबल से जान लिया था कि श्रीकृष्ण ही आनंद स्वरूप है। तपस्वी योगानंद के शिष्य देश-दुनिया में हैं। योगानंद ही श्रीकृष्ण के आनंद स्वरूप को पहचान पाए थे।

हे मानव। मैं ऋषि होकर हमेशा श्रीकृष्ण के आनंद स्वरूप का ध्यान करता हूं। श्रीकृष्ण ही मेरे रोम रोम में है। श्रीकृष्ण को मैंने अपने भीतर अनुभव किया है। श्रीकृष्ण के बगैर मैं एक पल नहीं रह सकता। श्रीकृष्ण को मैं अपने मन से एक क्षण के लिए विलग नहीं कर सकता। श्रीकृष्ण ही आदि-अनादि आनंदकारी है। हे मानव, तुम्हारे लिए आनंद के मायने अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन ऋषि के लिए श्रीकृष्ण की भक्ति ही आनंदमयी है। आनंद के कई रूप हैं- प्रेम ही आनंद है। प्रेम आध्यात्मिक भी हो सकता है और शारीरिक भी। लेकिन प्रेम की परिभाषा शब्दों में नहीं बांधी जा सकती। राधा ने श्रीकृष्ण से प्रेम किया। गोपियों ने श्रीकृष्ण से प्रेम किया। रुक्मणि ने श्रीकृष्ण से प्रेम किया। प्रेम दरअसल ईश्वर को पाने का जरिया है। जब प्रेम शरीर की सत्ता को पार कर लेता है और चरम स्थिति में पहुंच जाता है तो वह श्रीकृष्ण को प्राप्त कर लेता है। मीरा के लिए श्रीकृष्ण ही सबकुछ थे। मीरा ने श्रीकृष्ण को पति रूप में चाहा था। वो कहती थी मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई जाकै सिर मोर मुकुट मेरो पति सोईसूरदास ने भक्ति रूप में श्रीकृष्ण से प्रेम किया। प्रेम के अलावा आनंद का दूसरा रूप है भक्ति। भक्ति पदार्थ की भी हो सकती है और परमेश्वर की भी। जो व्यक्ति पदार्थ की भक्ति करते हैं उसके लिए दैहिक सुख ही आनंदकारी है। जबकि जो परमेश्वर की भक्ति करते हैं उनके लिए देह से परे जो आनंद है वही सच्चा आनंद है। सच्चिदानंद है। विदेह का प्रेम श्रीकृष्ण की ओर उन्मुख करता है। क्या दुख नहीं होना ही आनंद है? नहीं ऐसा नहीं है। दुख में भी आनंद की अनुभूति हो सकती है। दुख और आनंद का कोई संबंध नहीं है। धन नहीं होना दुखी होने का कारण हो सकता है मगर आनंद की अनुभूति धन का दुख होने पर भी की जा सकती है। सुदामा के पास धन नहीं था। वह और उसका परिवार धन नहीं होने से दुखी था। लेकिन आनंद फिर भी उनके पास था क्योंकि श्रीकृष्ण उनके भीतर थे। इसलिए हे मानव तुम्हारे शास्त्रों में जो कहा है कि दुख ना होना आनंद है, गलत है, दुखी होकर भी आनंद की अनुभूति की जा सकती है। दुख की धूप में भी आनंद के बादल छा सकते हैं। और सुख की अनुभूति हो सकती है। सुख से भी बढ़कर है आनंद शब्द। आनंद और सुख पर्यायवाची होते हुए भी इसके शब्दों में खासा रहस्य है। अच्छा भोजन करने वाला,

अच्छी नौकरी करने वाला, अच्छा बिजनेस करने वाला, अच्छी पॉजिशन वाला, चाहे सत्ता के शिखर पर पहुंचने वाला, चाहे कलाकार हो, चाहे साहित्यकार हो, चाहे कोई गुणी हो, चाहे कोई विद्वान हो, कहने का मतलब कि आपके पास कई तरह की योग्यता हो सकती है जो आपको सुखी तो बना सकती है मगर आपके पास आनंद की प्राप्ति हो यह जरूरी नहीं है। क्योंकि सुख और आनंद भी अलग-अलग शब्द हैं। कई लोगों के पास संसार के सारे सुख होते हैं मगर वास्तविक आनंद की तलाश में वे दीक्षा लेकर जैन मुनि बन जाते हैं। संयम पथ चुन लेते हैं। तो हे मानव असली आनंद तो संयम में है। संन्यास ही आनंदमयी स्थिति है। कई लोग गृहस्थ में रहकर भी संन्यासी जीवन जीते हैं और अपने को परफेक्ट मानकर आनंद की अनुभूति करते हैं। इसलिए हे मानव न तो दुख से आनंद की कमी हो सकती है और न ही सुख से आनंद में वृद्धि हो सकती है। जो सुख-दुख में संयम रखे वहीं आनंद को प्राप्त करता है। आज आनंद के बारे में इतना ही।





28 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

अहंकार

अहंकार और ओंकार दो शक्तियां हैं। ये दो शक्तियां हर युग में अपनी ताकत दिखाती हैं और आखिर ओंकार के आगे अहंकार का नाश होता है। अहंकार विनाशी है और ओंकार अविनाशी है। इसलिए जगत अहंकार है और जगदीश्वर ओंकार है। इस तरह श्रीकृष्ण ही ओंकार है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से धिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिल्कुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका

आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'अहंकार' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

अहंकार। घमंड। हे मानव जैसा कि तुम जानते हो कुछ लोगों को अपनी ताकत पर घमंड होता है। कुछ लोगों को अपनी दौलत पर घमंड होता है। कुछ लोगों को अपने पद को लेकर घमंड होता है। कुछ लोगों को अपनी सत्ता का घमंड होता है। कुछ लोगों को अपनी विद्वता का घमंड होता है। घमंड एक व्यापक शब्द है। लेकिन इसका परिणाम दो अक्षरों का होता है नाश। अंत। अहंकारी का हस्त हमेशा बुरा होता है। हे मानव, अहंकार तो महाबलशाली रावण का भी नहीं चला। रावण तो खैर राक्षस था, मगर अहंकार तो देवराज इंद्र का भी नहीं चला। श्रीकृष्ण ने उनका अहंकार भी चूर-चूर कर दिया। केवल श्रीकृष्ण ही अहंकार रहित है। क्योंकि वे पदार्थ नहीं है। पदार्थ का गुण अहंकार होता है। ठोस, द्रव्य, गैस किसी भी रूप में अगर पदार्थ है तो उसका स्वभाव अहंकारी होगा। लेकिन जो पदार्थ नहीं है। परमात्मा है। परमात्मा का स्वभाव कभी अहंकारी नहीं होता। परमात्मा दयालु होते हैं।

हे मानव इस धरती के शास्त्रों का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि अहंकार शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'अहम्' अर्थात् 'मैं' से हुई है। 'मैं' में केंद्रित होने वाला व्यक्ति अहंकार रूपी रोग से ग्रस्त होता है। जब बच्चा जन्म लेता है तो उसके भीतर इस रोग के कोई अणु नहीं होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, वैसे-वैसे बच्चे में प्रतिस्पर्धा का भाव प्रबल होता जाता है। कुछ अलग करने की, दूसरों से बड़ा होने-दिखने की सोच मस्तिष्क पर हावी होती जाती है। इसी से हमारे भीतर अहंकार का बीज पनपने लगता है।

हे मानव, शुरू-शुरू में तो यह भाव-आवेग हमारे वश में होता है, पर समय बीतने पर यह इतना बलशाली हो जाता है कि हम उसके सेवक बन जाते हैं। हमारे समूचे कार्यकलाप ही अहंकार-पूर्ति से प्रेरित होने लगते हैं। अहंकार वह पात्र बन जाता है जो

कभी भरने का नाम नहीं लेता। धन, पद-प्रतिष्ठा और यश पाकर भी हम असंतुष्ट-अतृप्त रह जाते हैं। जीवन उस मरुस्थल के समान बन जाता है, जिसमें अहंकार-तृप्ति की प्यास मृगतृष्णा जैसी बन जाती है।

हे मानव, अहंकार के बलवती होने से जीवन जटिल और संघर्षपूर्ण बन जाता है। अहंकार के मद में हम और अधिक गहरे डूबते चले जाते हैं। असंतोष, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध अहंकार रूपी रोग के ही लक्षण हैं। अहंकार के चक्रव्यूह को तोड़ पाना आसान नहीं है। उसके लिए सर्वप्रथम मन-प्राण से नम्रता, समर्पण और त्याग की सीढ़ी पर पांव रखना आवश्यक है। चूंकि अहंकार का घर कपाल में छुपे मन-मस्तिष्क में है, शायद इसीलिए हमारे पूर्वजों ने अनेक ऐसे धार्मिक अनुष्ठानों की रचना की जिनमें हमें अपना सिर झुकाना पड़ता है। प्रतीकात्मक दृष्टि से देखें तो नारियल फोड़ना, केश मुंडवाना आदि सभी अहंकार को चूर करने की निशानी हैं। जैन मुनि केश लुंचन करते हैं। यह एक परंपरा नहीं है। दरअसल वे शपथ लेते हैं, संकल्प लेते हैं कि कभी अहंकार नहीं करेंगे। अहंकार रहित होने की प्रक्रिया ही केश लुंचन की प्रक्रिया है। यही केश लुंचन प्रक्रिया का दर्शन और सिद्धांत है।

अहंकार से छुटकारा पाने की अगली सीढ़ी है- मृत्यु-बोध। हम जिस सुंदर शरीर, सांसारिक उपलब्धि और पद-प्रतिष्ठा पर गुमान करते हैं, वे सभी क्षणभंगुर हैं। फिर भी हम उन्हें पाने के लिए गलत काम करने से नहीं चूकते। पर जब हमारे भीतर यह अंतर्ज्ञान जाग जाता है कि मृत्यु ही जीवन यात्रा का अंतिम स्टेशन है तो अहंकार का भाव समर्पण में होम हो जाता है। इसके अलावा हृदय में प्रेम का दीया जलता रहे तो अहंकार के रोग से मुक्ति पाना आसान होता है। प्रेम की लौ से अहंकार का अंधेरा अपने आप ही छंट जाता है। यदि इस दीपमाला में प्रेम के साथ-साथ समर्पण का दीया भी जल उठे तो अहंकार रोग पास नहीं फटक पाता। मानवता का दिव्य प्रकाश चारों दिशा में अपनी रोशनी फैलाने लगता है।

हे मानव, हम अपने भीतर छुपे अहंकार के अंधेरे को जीत लें तो यह संसार अपने आप स्वर्ग सरीखा हो उठेगा। उसमें न कोई छोटा होगा, न कोई बड़ा। न कोई निर्धन होगा, न कोई धनी। न कोई राजा होगा, न कोई रंक ! सभी अपनी-अपनी कर्मयात्रा में लीन रहकर ही जीवन का सच्चा सुख भोग सकेंगे।

हे मानव अहंकार अंधा होता है। वह अपना और अपने लोगों का भी भला बुरा नहीं देखता। रावण को भी अहंकार हो गया था कि उसे तो तीनों लोकों में कोई हरा नहीं सकता। उसे अपनी ताकत का घमंड था और श्रीराम ने उनका विनाश कर अहंकार

का अंत किया। अहंकार का कभी अंत नहीं होता। अहंकार हर युग में किसी न किसी रूप में खड़ा ही रहता है। चाहे सत्ययुग हो, चाहे द्वापरयुग हो, चाहे त्रेता युग हो और चाहे कलियुग हो। हर युग में कोई न कोई अहंकारी पैदा हो ही जाता है जो धरती की मान-मर्यादा और शांति भंग करने का प्रयत्न करता है और ईश्वरीय शक्ति अवतरित होकर उसका सर्वनाश करती है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। क्योंकि अहंकार और ओंकार दो शक्तियां हैं। ये दो शक्तियां हर युग में अपनी ताकत दिखाती हैं और आखिर ओंकार के आगे अहंकार का नाश होता है। अहंकार विनाशी है और ओंकार अविनाशी है। इसलिए जगत अहंकार है और जगदीश्वर ओंकार है। इस तरह श्रीकृष्ण ही ओंकार है।

मैं हमेशा ओंकार की साधना करता हूं। श्रीकृष्ण की साधना करता हूं। जो श्रीकृष्ण की साधना करता है वह जन्म और मृत्यु से परे हो जाता है। हे मानव, श्रीकृष्ण अहंकार रहित है। वे अहंकार का नाश करने वाले हैं। इस धरती पर अब पग-पग पर अहंकार है। हे मानव तुमने परमाणु बम, मिसाइलें, तोप-टैंक और ना जाने कौन-कौन से आग्नेय अस्त्र बना लिए हैं। तुम्हें अपनी ताकत पर अहंकार है। तुम इन अस्त्र-शस्त्र की ताकत पर देशों को कुचलने में लगे हो। तुमने धरती की शांति को रौंद डाला है। तुमने अपने साइंस के बल पर प्रकृति की हत्या कर दी है। तुम प्रकृति के हत्यारे बन गए हो। याद रखना मानव प्रकृति जब करवट बदलती है तो सारी सत्ता बिखर जाती है। हे मानव तुम अहंकारी बन गए हो। तुम्हें अपने दिमाग पर भरोसा है। लेकिन तुम्हें श्रीकृष्ण पर भरोसा नहीं है।

तुम्हारे अहंकार को ओंकार की ताकत दिखाई नहीं देती। हमारे ऋषियों ने हमेशा ओंकार की साधना की है। ऋषि ताकतवर क्यों थे क्योंकि वे अहंकारी नहीं थे। क्रोध और अहंकार में अंतर होता है। क्रोध से अहंकार नहीं उत्पन्न होता। हां अहंकार से क्रोध जरूर उत्पन्न होता है। दुर्वासा ऋषि बड़े क्रोधि स्वभाव के थे। मगर उनमें अहंकार नहीं था। ऋषि में कभी अहंकार नहीं होता। अहंकार ऋषि का स्वभाव ही नहीं होता। अहंकार पदार्थ का गुण होता है। पानी है तो उसे अहंकार होगा। हवा है तो उसे अहंकार होगा। पर्वत है तो उसे अहंकार होगा। जो पांच तत्वों से बना मानव है तो उसे भी कई बार अहंकार हो जाता है। लेकिन परमात्मा को कभी अहंकार नहीं होता। वे अहंकार से रहित साक्षात् ओंकार है।

हे मानव, अहंकार स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ मानने के कारण उत्पन्न हुआ एक व्यवहार है। यह एक ऐसा मनोविकार है जिसमें मनुष्य को न तो अपनी त्रुटियां दिखाई

देती हैं और न ही दूसरों की अच्छी बातें। शांति का शत्रु है अहंकार। जब अहंकार बलवान हो जाता है तब वह मनुष्य की चेतना को अंधेरे की परत की तरह घेरने लगता है। भगवान कृष्ण ने गीता में अहंकार को आसुरी प्रवृत्ति माना है, जो मनुष्य को निकृष्ट एवं पाप कर्म करने की ओर अग्रसर करता है। जिस प्रकार नींबू की एक बूंद हजारों लीटर दूध को बर्बाद कर देती है उसी प्रकार मनुष्य का अहंकार अच्छे से अच्छे संबंधों को भी बर्बाद कर देता है। हमारे मनीषियों ने अहंकार को मनुष्य के जीवन में उन्नति की सबसे बड़ी बाधा माना है। अहंकारी मनुष्य परिवार और समाज को अधोगति की ओर ले जाता है। इसके विपरीत संस्कार मनुष्य को पुनीत बनाने की प्रक्रिया है। श्रेष्ठ संस्कार हमें मन, वचन, कर्म से पवित्रता की ओर ले जाते हैं। ये हमारे मानसिक धरातल को दिव्य प्रवृत्तियों से अलंकृत करते हैं। इससे मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व में उत्कृष्टता आती है। श्रेष्ठ संस्कारों से ही मनुष्य परिवार और समाज में यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। हमारे शास्त्रों में श्रेष्ठ संस्कारों को मनुष्य की सर्वोपरि धरोहर कहा गया है। इस धरोहर को सहेजना आवश्यक होता है। अहंकार मनुष्य की मानसिक एकाग्रता एवं संतुलन को भंग कर देता है। अहंकारी व्यक्ति सदैव अशांत ही रहता है। वहीं संस्कार हमारे अंतःकरण को दिव्य गुणों से विभूषित करते हैं।

हे मानव, संस्कार हमें ईश्वरीय मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं। रावण, कंस, सिकंदर इन सबके अहंकार की परिणति दयनीय मृत्यु के रूप में हुई। संस्कार हमारी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का आधार स्तंभ हैं। ये मनुष्य को सदा ही पुण्य कर्मों की ओर प्रवृत्त करते हैं। हमारी स्वर्णिम वैदिक संस्कृति श्रेष्ठ संस्कारों पर ही अवलंबित है। इसलिए हे मानव हमेशा अहंकार से रहित जो जीवन जीता है वही श्रेष्ठ जीवन जीता है। एक ऋषि हमेशा अहंकार से रहित जीवन जीता है। सुदामा ने हमेशा अहंकार से रहित जीवन जिया।

ध्रुव ने हमेशा अहंकार से रहित जीवन जिया। प्रह्लाद ने हमेशा अहंकार से रहित जीवन जिया। विदुर ने हमेशा अहंकार से रहित जीवन जिया। इस धरती पर कई लोगों ने अहंकार रहित जीवन जिया और धरती पर अमर हो गए। मगर जिस जिस ने अहंकार का जीवन जिया वे पतन को प्राप्त हुए। इसलिए हे मानव अहंकार से बचो। ओंकार का ध्यान करो। अहंकार पतन का मार्ग है और ओंकार पाने का मार्ग है। ओंकार का ध्यान करोगे तो सबकुछ मिलेगा और अहंकार करोगे तो जो है वो भी चला जाएगा। अहंकार के बारे में बहुत सी बातें हे मानव तुम्हें बताईं। अहंकार के बारे में आज इतना ही।





29 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

युग

युग चार नहीं हैं, क्योंकि युग एक ही है और वह है कृष्णयुग। युग कभी अकेली पृथ्वी का नहीं हो सकता। युग तो पूरे ब्रह्मांड का होता है। युग तो ब्रह्मांड से भी परे सत्ता है। क्योंकि श्रीकृष्ण ही साक्षात् युग है। युग का कभी अंत नहीं होता। इसलिए युग का पार्टिशन करना उचित नहीं है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते

हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'युग' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

हे मानव ये श्रीकृष्ण ने अर्जुन से जो श्लोक कहा था वो असल में निम्न प्रकार था-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि संप्रभु ॥

इसका अर्थ इस प्रकार है-

हे अर्जुन ! जब-जब धर्म की हानि होती है और पाप की वृद्धि होती है, तब-तब मैं धर्मात्माओं की रक्षा करने, दुष्टों का विनाश करने और धर्म के सिद्धांतों को पुनः स्थापित करने के लिए परमेश्वर के रूप में प्रकट होता हूँ।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही गीता में संदेश दिया था। लेकिन हे मानव तुम्हारे मनीषियों ने इसे लिखने में गलती कर दी। गलती व्यक्ति का स्वभाव है। गलती किसी से भी हो सकती है। लेकिन कुछ गलतियों से इतिहास कलंकित हो जाता है। इसलिए हे मानव उस गलति को सुधारने का वक्त आ गया है। श्रीकृष्ण ने कभी नहीं कहा था कि धर्म की स्थापना करने के लिए वह युग-युग में प्रकट होते हैं। क्योंकि युग अनंत है। युग कभी खत्म नहीं होता। अगर समझना हो तो इस तरह समझ सकते हैं।

एक इमारत है। उसमें कई कमरे हैं। कई हॉल है। छत है। किचन है। बाथरूम है। शौचालय है। ड्राइंगरूम है। लॉबी है। पार्किंग है। गार्डन है। और भी बहुत कुछ है। अब कोई इन कमरों को युग समझ ले तो यह उनकी गलती है। क्योंकि इमारत तो एक ही है। अब अगर चार कमरे हो तो चार युग कह सकते हैं क्या? फिर किचन को क्या कहेंगे? बाथरूम को क्या कहेंगे? शौचालय को क्या कहेंगे? छत को क्या कहेंगे? गार्डन को क्या कहेंगे? कहने का मतलब है कि युग का पार्टिशन कैसे कर सकते हैं? अगर युग का पार्टिशन कर ही दिया जाए तो चार युग ही क्यों? किसी मकान में चार की जगह दस कमरे भी तो हो सकते हैं, इस तरह तो युग दस हो गए। देखा जाए तो युग एक ही हुआ इमारत ही युग है। लेकिन इमारत भी युग नहीं है। क्योंकि इमारत जिस नींव पर टिकी है वही सर्वसत्ता है। इस तरह लोग नींव को ही युग समझेंगे। दरअसल नींव भी युग नहीं है। नींव जिस धरती पर टिकी है वह धरती ही युग हुई। पर धरती भी युग नहीं है। क्योंकि धरती की तरह इस ब्रह्मांड में कई ग्रह हैं। इस तरह युग को परिभाषित करना मुश्किल हो जाता है। कुछ लोग ब्रह्मांड को युग कहेंगे। मगर यह भी सही नहीं है। दरअसल श्रीकृष्ण ही युग है। अब वापस इमारत पर आते हैं। इमारत में जो अलग-अलग कमरे और तमाम चीजें बनी हुई हैं उसे युग का रूप दे दिया गया है। यानी हे मानव तुम्हारे शास्त्रों में जो चार युग बताए गए हैं- सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। अब सवाल है ये चार युग किसने बनाए। इसका निर्माण किसने किया? ये तुम्हारे वैज्ञानिकों ने, तुम्हारे ऋषियों ने अपने अंतर्ज्ञान से अपनी व्याख्या की है। तुम्हारे ऋषियों ने अपनी अंतर्चेतना और अंतर्ज्ञान से इसकी रचना की है। हम उन्हें गलत नहीं कहते। क्योंकि ईश्वर ही हर सृजन का मूल होता है। ऋषि अपनी साधना की शक्ति से सबकुछ सृजन करता है। इस समय हे मानव चातुर्मास में श्रीकृष्ण ने मुझे बताया है कि उन्होंने युगे-युगे शब्द इस्तेमाल नहीं किया था। उन्होंने कहा था- संभवामि संप्रभुयानी मैं धरती पर संप्रभु यानी परमेश्वर के रूप में अवतरित होता हूं। लेकिन तुम्हारे मनीषियों से लिखने में और समझने में त्रुटि हो गई। यही कारण है कालखंड का इतिहास भ्रामक हो गया। श्रीकृष्ण कहते हैं कि इस धरती पर ईसा मसीह के रूप में भी मैं ही आया था। मुहम्मद साहब के रूप में मैं ही आया

था। 24 तीर्थकरों के रूप में मैं ही आया था। महात्मा बुद्ध के रूप में भी मैं ही आया था। सिखों के धर्मगुरुओं के रूप में भी मैं ही आया था। साई बाबा के रूप में भी मैं ही आया था। बाबा रामदेव के रूप में भी मैं ही आया था। इस धरती पर जितने भी देवता है। सब मेरे ही अंश रहे हैं। सारी देवीय शक्तियां मुझी से निकली और मुझी में समा गई।

हे मानव अब जरा इस धरती पर तुम्हारे शास्त्रों ने और ऋषियों ने जो युग शब्द की व्याख्या की है उसे भी समझ लेते हैं। हिंदू ग्रंथों में एक युग चक्र में चार युगों (विश्व युग) का वर्णन किया गया है - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। हे मानव शास्त्र कहते हैं कि पहले युग से शुरू होकर प्रत्येक युग की लंबाई एक-चौथाई कम हो जाती है 25 % यानी 4:3:2:1 का अनुपात देता है। प्रत्येक युग को एक मुख्य अवधि (उर्फ) के रूप में वर्णित किया गया है। यह वस्तुतः सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग इन चार धार्मिक युगों में से किसी भी एक युग को बताने के लिये प्रयुक्त होता है। चारों युगों के चक्र को चतुर्युग कहते हैं। संदर्भ के अनुसार, यह एक मौसम, पीढियों, राजाओं के काल, कल्प ब्रह्मा के दिवस निर्माण की अवस्थाओं कल्प (ब्रह्मा के दिवस) निर्माण की अवस्थाओं (प्रकट, अनुरक्षण, अव्यक्त) या 1000 वर्ष की अवधि का उल्लेख कर सकता है।

हे मानव, श्रीकृष्ण ने जो मुझे ज्ञान दिया और मैंने तुम्हारे शास्त्रों का अध्ययन किया तो मेरा माथा ठनक उठा। भला युग को तुम्हारे शास्त्रों ने कैसे परिभाषित कर दिया। जिस युग की बात तुम्हारे शास्त्र करते हैं वो किसका युग है। वो तो पृथ्वी का युग हुआ। युग कभी अकेली पृथ्वी का नहीं हो सकता। युग तो पूरे ब्रह्मांड का होता है। युग तो ब्रह्मांड से भी परे सत्ता है। क्योंकि श्रीकृष्ण ही साक्षात् युग है। तुम्हारे शास्त्रों ने और तुम्हारे विज्ञान ने कहा कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। यानी साल में 365 दिन घूमती है। ये साल के 365 दिन केवल पृथ्वी के लिए है। इस ब्रह्मांड में अनगिनत ग्रह हैं। साइंस भी इसे मानता है। अब बात करें तो यह साफ है कि कौनसे ग्रह पर एक साल में कितन दिन होते हैं यह अनिश्चित है। इसलिए हर ग्रह पर युग की गणना अलग-अलग हो जाती है। तो श्रीकृष्ण कैसे कह सकते हैं कि संभवामि युगे युगे क्योंकि श्रीकृष्ण तब भी अवतरित होंगे जब दूसरे ग्रह की बुरी ताकतें मानवता को खत्म करने के लिए एक्टिव हो जाएंगी। हे मानव, समय अनिश्चित है। कब कौनसे ग्रह के लोग धरती पर आकर मानवता के लिए खतरा बन जाए कह नहीं सकते। ऐसे वक्त में श्रीकृष्ण ही तारनहार बनेंगे। इसलिए हे मानव श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कभी नहीं कहा था कि संभवामि युगे युगे.. क्योंकि श्रीकृष्ण ने कहा संभवामि संप्रभु।

हे मानव, गीता एक कपोल काल्पनिक ग्रंथ नहीं है। वो श्रीकृष्ण की वाणी है। मगर श्रीकृष्ण ने जो कहा ही नहीं, उसके बारे में तुम्हारे शास्त्रों ने थोड़ी गलती कर दी। हे मानव तुम्हारे ऋषियों ने ब्रह्माजी के समय को युग का नाम दिया है। ब्रह्माजी ने जब श्रीकृष्ण की परीक्षा लेनी चाही और श्रीकृष्ण के बछड़े चुरा लिए थे तो क्या हुआ था यह कहानी तुम अच्छी तरह जानते हो। और ब्रह्माजी को भी मानना पड़ा था कि श्रीकृष्ण योगेश्वर है। हे मानव तुम भी मान लो मेरे श्रीकृष्ण ही युग है। इसलिए युग शब्द का इस्तेमाल करने की बजाय कृष्णयुग का इस्तेमाल करना उचित होगा। क्योंकि युग एक ही है और वह कृष्णयुग। कृष्ण युग ही अंतिम सत्य है। फिर भी अगर तुम मानते हो कि युग चार है तो तुम साबित करके बताओ कि चार युग कैसे हैं? क्योंकि तुम्हारे युग की परिभाषा तुम खुद ही झूठी साबित कर रहे हो।

क्योंकि युग खत्म होने के बाद प्रलय नहीं आया। या विराम नहीं आया। सूर्य अपनी गति से उदय अस्त होता रहा। ऋतुएं अपने स्वभाव से चलती रही। पृथ्वी ने घूमना बंद नहीं किया। समय अपनी गति से चलता रहा। फिर भला युग खत्म होकर दूसरा युग कैसे शुरू हो गया। मान भी लिया जाए कि एक युग खत्म हो गया और दूसरा शुरू हो गया। फिर तो सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर और अब कलियुग ही क्यों..? भला चार युग ही क्यों हुए? दस युग क्यों नहीं हुए? पंद्रह युग क्यों नहीं हुए? हे मानव तुम्हारे चार युगों की परिभाषा मुझे तो समझ में नहीं आई। और हां मानव, जब श्रीकृष्ण ने युगे-युगे शब्द का इस्तेमाल ही नहीं किया तो यह शब्द तुम्हारे धरती के शास्त्रों में कैसे आया?

हे मानव अब समय आ गया है कि युग शब्द को फिर से परिभाषित किया जाए। और हां अब अगर तुम मानते हो कि जो युग चल रहा है वह कलियुग है तो वह गलत है। क्योंकि कलियुग की कल्पना भी किसी ऋषि ने ही की है। दरअसल कलियुग की परिभाषा वो नहीं है जब राजा कलि परीक्षित के सोने के मुकुट में सवार हो गया था। क्योंकि तुम्हारे शास्त्रों के अनुसार श्रीकृष्ण के परमधाम के जाने के बाद ही कलियुग की शुरुआत हुई। कुछ लोग पांडवों के हारने के बाद से कलियुग की शुरुआत मानते हैं। कुछ लोग द्रोपदी की मृत्यु के बाद से कलियुग की शुरुआत मानते हैं। दरअसल कलियुग शब्द भ्रामक शब्द है। कलियुग नाम का कुछ होता ही नहीं है। ना तो सत्ययुग होता है। ना त्रेता युग होता है। ना द्वापर युग होता है और ना ही कलियुग होता है। अगर मानव तुम इसे सही मानते हो तो ये युग चार नहीं इसकी संख्या ज्यादा भी हो सकती है। क्योंकि मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं कि एक इमारत में जरूरी नहीं कि चार कमरे ही हो? इसलिए युग

को कमरों की तरह विभक्त नहीं किया जा सकता। हे मानव श्रीकृष्ण के अस्तित्व को तुम्हारा विज्ञान मानता है या नहीं लेकिन एक दिन सारी दुनिया श्रीकृष्ण के बारे में जानेगी। श्रीकृष्ण खुद साबित करेंगे कि वे हैं और इस धरती पर आएंगे। इंतजार करें कृष्णयुग अभी खत्म नहीं हुआ है। कृष्णयुग कभी खत्म नहीं होता। युग के बारे में आज इतना ही।





30 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

ध्यान

ध्यान से ही समाधि अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। ध्यान से सिद्धियां अर्जित की जा सकती हैं। ध्येय (लोभ) रहित ध्यान से तो श्रीकृष्ण को प्राप्त किया जा सकता है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'ध्यान' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

हे मानव, महर्षि पतंजलि के योगसूत्र में ध्यान भी एक सोपान है। चित्त को एकाग्र करके किसी एक वस्तु पर केंद्रित कर देना ध्यान कहलाता है। प्राचीन काल में ऋषि मुनि भगवान का ध्यान करते थे। ध्यान की अवस्था में ध्यान करने वाला अपने आसपास के वातावरण को तथा स्वयं को भी भूल जाता है। ध्यान करने से आत्मिक तथा मानसिक शक्तियों का विकास होता है। जिस वस्तु को चित्त में बांधा जाता है उसमें इस प्रकार से लगा दें कि बाह्य प्रभाव होने पर भी वह वहां से अन्यत्र न हट सके, उसे ध्यान कहते हैं।

हे मानव तुम्हारे ऋषि मुनि किसी एक शब्द पर ध्यान केंद्रित करते थे। दूसरे शब्दों में कहें तो कोई एक शब्द का मन ही मन या बोल कर उच्चारण करने की प्रक्रिया शुरू करना ध्यान है। जब कोई एक शब्द जैसे ओम या ओम नमः शिवाय या ओम नमोः भगवते वासुदेवाय या गायत्री मंत्र या फिर कोई और मंत्र..का जाप किया जाता है तो वह प्रक्रिया ध्यान है। ध्यान जब कठोर हो जाता है तो वह तप में बदल जाता है। जब किसी मंत्र पर बोल बोल कर या मन ही मन उच्चारण किया जाता है और यह प्रक्रिया लंबे समय तक चलती है तो वह ध्यान कहलाती है। ध्रुव ने ओम नमोः भगवते वासुदेव का ध्यान किया तो नारायण को प्राप्त कर लिया। इसी तरह प्रह्लाद ने भगवान विष्णु का ध्यान किया तो विष्णु को प्राप्त कर लिया। ऋषि मुनि ध्यान से समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेते थे। लेकिन ऋषि ने आम आदमी को समाधि अवस्था में जाने की बजाय दैनिक जीवन में प्रतिदिन दस बीस मिनट ध्यान करने की सामान्य प्रक्रिया का वर्णन किया है।

यानी विद्यार्थी से लेकर बड़े-बुजुर्ग, महिला, पुरुष जो भी अपने प्रतिदिन जीवन में नियमित रूप से दस से बीस मिनट ध्यान करता है तो उसका नियमित अभ्यास करने से उसके जीवन में चमत्कारिक रूप से सकारात्मक बदलाव आना शुरू हो जाता है। विद्यार्थी, बिजनेसमैन, गृहिणी, नौकरीपेशा आदमी, वैज्ञानिक, डॉक्टर या कोई भी व्यक्ति हो अगर जीवन में रोज दस बीस मिनट ध्यान करता है तो वह अपने को पाँवर

से युक्त महसूस करता है। सकारात्मकता से भरपूर महसूस करता है। उसका गुस्सा दूर हो जाता है। चिड़चिड़ापन दूर हो जाता है। स्टूडेंट्स की एकाग्रता बढ़ जाती है। गोल की तरफ फोकस बढ़ जाता है। कॉन्फिडेंस लेवल बढ़ जाता है। ध्यान बहुत ही फायदेमंद है। ध्यान जीवन जीने की कला है। ध्यान से सिद्धि भी प्राप्त की जा सकती है। लेकिन सिद्धि प्राप्त करना आपका उद्देश्य है तो ध्यान ध्येय रहित होकर करना होगा।

ध्येय (लोभ) जहां खत्म होता है वहीं असली ध्यान शुरू होता है और श्रीकृष्ण को प्राप्त किया जा सकता है। अध्यात्म की चरम स्थिति ध्यान है। ध्यान से ही समाधि अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। ध्यान का जब मनुष्य गहन अभ्यास कर लेता है तो ध्यान कभी भी लग सकता है। विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस काली के भक्त थे। वे काली मां का ध्यान लगाते थे और समाधि अवस्था में चले जाते थे। फिर तो उन्होंने ध्यान का इतना अभ्यास कर लिया कि कभी भी ध्यान लगा लेते थे। ध्यान की जब चरम अवस्था कोई ऋषि या मनुष्य प्राप्त कर लेता है तो वह रामकृष्ण परमहंस बन जाता है। योगानंद ने ध्यान लगाया तो योग की अवस्था को प्राप्त कर लिया और योगानंद बन गए। ध्यान की शाखाएं ही योग है। ध्यान मूल है और योग उसकी शाखाएं। हमारे मनीषियों ने योग से स्वस्थ और तंदुरुस्त रहने का मंत्र खोजा। योग ध्यान की उपज है। ध्यान से संसार की हर सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। ध्यान एक बालक के जीवन में दस बीस मिनट अभ्यास रूप में करने से सामान्य जीवन सुंदर बना सकता है वहीं एक व्यक्ति इसे सिद्धि तप के रूप में करता है तो ध्यान से संसार की हर चीज प्राप्त की जा सकती है।

श्रीकृष्ण शरणं ममः का रोज ध्यान करने से हम श्रीकृष्ण की ऊर्जा अपने जीवन में महसूस कर सकते हैं। इसलिए हे मनुष्य एक ही शब्द का जीवन में ध्यान कर और वह है श्रीकृष्ण शरणं ममः। इसका ध्यान करोगे तो जीवन में कभी हारोगे नहीं। जीवन की हर जंग जीत जाओगे। अगर तुम स्टूडेंट्स हो और रोज दस-बीस मिनट श्रीकृष्ण शरणं ममः का ध्यान करते हो तो पावरफुल जीवन को प्राप्त कर लोगे। हे मानव तुम ध्यान किसी भी शब्द का कर सकते हो। तुम अगर शैतान का भी ध्यान करोगे तो तुम्हें सिद्धियां प्राप्त हो सकती हैं, लेकिन जब तुम्हारा ध्येय गलत होगा तो सिद्धियां प्राप्त करके भी तुम्हारा हस्त बुरा होगा। राक्षस भी देवताओं का ध्यान करते थे। ध्यान करने की प्रक्रिया ही तपस्या है। ध्यान का विस्तृत रूप ही तपस्या है। कठोर तप से राक्षस ब्रह्मा, विष्णु और महेश को प्रसन्न कर लेते थे। इसमें भी भोलेनाथ तो बहुत जल्दी प्रसन्न होकर राक्षसों को वरदान दे देते थे और आफत मोल ले लेते थे और फिर विष्णु भगवान उनका निवारण करते थे। भष्मासुर नाम के राक्षस ने भी शिव का ध्यान करके यानी शिव की तपस्या करके

वरदान प्राप्त कर लिया कि जिसके सिर पर हाथ रखे वह जलकर भष्म हो जाए। हे मानव भष्मासुर की कहानी तुम जानते हो। जीवन में भष्मासुर हम सब बनते जा रहे हैं। आज प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं। प्रकृति को साइंस और आधुनिक प्रगति के दम पर नुकसान पहुंचा रहे हैं। यही कारण है कि आज भी हमारे ऋषि ध्यान पर जोर देते हैं। शायद ही कोई ऋषि होगा जो ध्यान की ताकत से इनकार करता होगा। ध्यान भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियां प्राप्त करने का माध्यम हो सकता है। जब हम नियमित ध्यान करते हैं तो भौतिक सुख प्राप्त करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा से भर जाते हैं और उस अनुसार व्यवहार करते हैं। ध्यान से आध्यात्मिक सुख भी प्राप्त किया जा सकता है। ध्यान आनंद का दूसरा नाम है। ध्यान से हे मानव तुम अपना चारित्रिक विकास कर सकते हो। ध्यान तुम्हें प्रकृति की ओर ले जाता है। ध्यान तुम्हें नेचर से जोड़ता है। ध्यान तुम्हें ईश्वर से साक्षात्कार करवाता है। ध्यान ही श्रीकृष्ण को प्राप्त करने का जरिया है।

हे मानव अब तो तुम समझ गए होंगे कि ध्यान एक क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने मन को चेतना की एक विशेष अवस्था में लाने का प्रयत्न करता है। ध्यान का उद्देश्य कोई लाभ प्राप्त करना हो सकता है या ध्यान करना अपने-आप में एक लक्ष्य हो सकता है। 'ध्यान' से अनेक प्रकार की क्रियाओं का बोध होता है। इसमें मन को विशान्ति देने की सरल तकनीक से लेकर आन्तरिक ऊर्जा या जीवन-शक्ति (प्राण आदि) का निर्माण तथा करुणा, प्रेम, धैर्य, उदारता, क्षमा आदि गुणों का विकास आदि सब समाहित हैं। अलग-अलग सन्दर्भों में 'ध्यान' के अलग-अलग अर्थ हैं। ध्यान का प्रयोग विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के रूप में अनादि काल से किया जाता रहा है। हे मानव जैसा कि मैंने बताया ध्यान के कई लाभ हैं। बेहतर स्वास्थ्य के लिए भी ध्यान किया जा सकता है। मेडिकल साइंस भी मानता है कि स्वस्थ जीवन जीना है तो नियमित रूप से ध्यान करना चाहिए। ध्यान की दूसरी शाखा योग है जो करने से हर बीमारियों से निपटा जा सकता है। इस तरह ध्यान और योग जीवन का प्राण तत्व है। ध्यान और योग अपना कर लंबी आयु प्राप्त की जा सकती है और निरोगी रहा जा सकता है। ध्यान करने से शरीर की रोग-प्रतिरोधी शक्ति में वृद्धि होती है। ध्यान करने से रक्तचाप में कमी आती है। ध्यान करने से तनाव रहित जीवन जी सकते हैं। ध्यान करने से स्मृति क्षय में कमी आती है और स्मरण शक्ति बढ़ जाती है। ध्यान का नियमित अभ्यास करने से बुढ़ापे से बचा जा सकता है। ध्यान से उत्पादन शक्ति में वृद्धि होती है। लेखन आदि रचनात्मक कार्यों में भी ध्यान का सकारात्मक असर पड़ता है। हर वर्ग के लोगों और बच्चों के लिए ध्यान उपयोगी है। ध्यान से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। हे मानव, अब यह तुम्हारे ऊपर है कि तुम्हारी जरूरत क्या है। तुम ध्यान से जीवन का उद्देश्य समझ सकते हो। किसी कार्य का

उद्देश्य और महत्ता का सही ज्ञान ध्यान से हो सकता है। मन की यही प्रकृति (आदत) है कि वह छोटी-छोटी अर्थहीन बातों को बड़ा करके गंभीर समस्याओं के रूप में बदल देता है। ध्यान से हमें अर्थहीन बातों की समझ बढ़ जाती है। उनकी चिन्ता करना छोड़ देते हैं। सदा बड़ी तस्वीर देखने के अभ्यस्त हो जाते हैं। हे मानव, प्राचीन समय में ऋषि मुनि और संत लोग ध्यान लगाकर अपने आराध्य देव के दर्शन प्राप्त करते थे और उनसे अपने समस्या का हल भी पूछा करते थे, यह आज के समय में भी संभव है, उदहारण के तौर पर स्वामी रामकृष्ण परमहंस अपने आराध्य देवी काली से ध्यान के द्वारा साक्षात् बाते करते थे। हे मानव वैज्ञानिक भी मानते हैं कि ध्यान से व्यग्रता का 39 प्रतिशत तक नाश होता है और मस्तिष्क की कार्य क्षमता बढ़ती है। बौद्ध धर्म में इसका उल्लेख पहले से ही मिलता है। अनंत समाधि को प्राप्त करना या मोक्ष प्राप्त करना ध्यान से संभव है। ध्यान एक भट्टी के समान है जिसमें हमारे जन्म जन्मांतरों के पाप भस्म हो जाते हैं और हमें अनंत सुख और आनंद प्राप्त होता है। हे मानव ध्यान आज की भागती दौड़ती जिंदगी में वरदान है। ध्यान के बारे में आज इतना ही।





31 जुलाई 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

पागल

दिमाग रूपी धरती पर तीन चौथाई पानी यानी समुद्र है। जब इस पर चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल से ज्वारभाटा आता है तो दिमाग उसकी तीव्रता के अनुपात में पागल हो जाता है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'पागल' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं

पागल। विक्षिप्त। उन्माद। क्रोध। जुनून। मूर्ख। सभी शब्द मिलते-जुलते जरूर हैं। पर हे मानव, सबके अपने अलग-अलग अर्थ हैं। व्यापक रूप में इनके अर्थ अलग हैं। हे मानव, तुमने मोबाइल की खोज कर ली। तुमने कंप्यूटर की भी खोज कर ली। खोज जरूरी नहीं कि दिमाग की सही स्थिति में की जाए, पागलपन की स्थिति में भी खोज की जा सकती है। दुनिया में कई पागल वैज्ञानिक भी हुए हैं, जिनके बारे में तुम्हारा साइंस अच्छी तरह जानता है। हे मानव तुम्हारे मोबाइल में जब तुम पागल शब्द को सर्च करोगे तो पागल का अर्थ इस प्रकार आएगा- पागल शब्द का अर्थ है ऐसे व्यक्ति से जो मानसिक रूप से बीमार, खतरनाक, मूर्ख, या पागल माना जाता है - ऐसी स्थितियाँ जिन्हें कभी "पागलपन" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता था। यह शब्द लुनाटिकस से निकला है जिसका अर्थ है "चाँद का" या "चाँद से प्रभावित"। हे मानव हम साधना के मोबाइल से और साधना के कंप्यूटर से शब्दों के अर्थ खोजते रहते हैं। जितनी हमारी साधना की फ्रिक्वेंसी होती है उसी के अनुसार हम शब्दों के अर्थ खोज पाते हैं।

हे मानव, तुम्हारे मोबाइल में और तुम्हारे कंप्यूटर में हर शब्द के अर्थ हैं। पर अभी तुम्हारे मोबाइल और कंप्यूटर अधूरे हैं। क्योंकि अर्थ का अर्थ भी अभी तुम खोज नहीं पाए हो। अर्थ का अर्थ मुद्रा या पैसा भी होता है और अर्थ का अर्थ अंग्रेजी में पृथ्वी भी हो जाता है। अर्थ का अर्थ करंट की स्थिति से भी होता है तभी तो कहते हैं अर्थिंग हो गया। अर्थ का अर्थ अर्थ भी होता है जिसके लिए तुम सर्च करते हो। अब हे मानव आते हैं उस शब्द पर जो आज हमारा विषय है। यानी पागल। ऊपर हम कह चुके हैं कि पागल से मिलते जुलते शब्द कई हैं। जैसे विक्षिप्त, उन्माद, मूर्ख, क्रोध, जुनून, पागल। हे मानव इस धरती पर कोई भी व्यक्ति संपूर्ण पागल नहीं है। आम तौर पर जिसमें विक्षिप्त, उन्माद, मूर्ख, क्रोध, जुनून, पागल जैसे सारे लक्षण हो उसे संपूर्ण पागल मान लिया जाता है। कोई भी व्यक्ति संपूर्ण पागल नहीं होता। कुछ प्रतिशत पागल होता है। एक डॉक्टर

पागलपन के लक्षण देखता है। उसका प्रतिशत देखता है और उसके बाद उसका इलाज करता है। हे मानव, ऋषि कभी पागल नहीं होता। इस धरती पर दो शक्तियाँ हैं- सुर-असुर, अच्छाई-बुराई, समझदार-पागल... आमतौर पर इन सभी शक्तियों में पागल शब्द और समझदार शब्द समाहित होते हैं। उसकी मात्रा कम अधिक होती है। केवल श्रीकृष्ण स्थितप्रज्ञ होते हैं। वे पागल नहीं होते। क्योंकि कुदरत भी पागल हो सकती है। लेकिन कुदरत को संचालित करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण कभी पागल नहीं हो सकते। श्रीकृष्ण स्वयं इस कुदरत को संचालित करते हैं। इस नेचर में पल-प्रतिपल, क्षण-तत्क्षण जो भी घटित हो रहा है या घटित नहीं हो रहा है उसके मूल में श्रीकृष्ण ही है। हे मानव, हमारा सब्जेक्ट पागल है। तो सुनो पागल का अर्थ क्या है? व्यक्ति पागल कैसे होता है? व्यक्ति का संबंध दिमाग से होता है। दिमाग में 80 प्रतिशत पानी होता है। यूँ समझो दिमाग एक पृथ्वी है। जिसके 80 प्रतिशत भाग में पानी है। यानी दिमाग रूपी पृथ्वी के तीन चौथाई भाग पर समुद्र है। चंद्रमा के कारण जब इस पानी में ज्वार भाटा आता है तो व्यक्ति पागलपन की स्थिति में पहुँच जाता है। ज्वार भाटा जितना तीव्र होता है पागलपन की स्थिति उसके अनुसार होती है। अमूमन हर आदमी दिमाग से पागल ही होता है। ज्योतिषि हमेशा चंद्रमा के आधार पर व्यक्ति का भाग्य देखता है। यानी चंद्रमा का व्यक्ति के दिमाग से गहरा संबंध होता है। चंद्रमा व्यक्ति की मानसिक स्थिति पर गहरा असर डालता है।

पांच ज्ञानेंद्रियां- आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा; पांच कर्मेन्द्रियां- हाथ, पैर, मुँह, गुदा और लिंग और चार अंतःकरण- मन बुद्धि चित्त और अहंकार। (2) अंतर्निद्रिय - केवल मन (एक)। इनमें बाह्य इंद्रियाँ क्रमशः गंध, रस, रूप स्पर्श तथा शब्द की उपलब्धि मन के द्वारा होती हैं। यानी सभी में प्रधान दिमाग है। दिमाग का ही सारा खेल है। इस दुनिया में हर क्रिया और प्रतिक्रिया के पीछे दिमाग ही मूल कारण होता है। इसलिए यहां जितनी भी ज्ञानेंद्रिया, कर्मेन्द्रिया, अंतःकरण, अंतर्निद्रिय, बाह्य इंद्रियां का वर्णन किया गया है सब का संबंध दिमाग से होता है। जब दिमाग का जितना संतुलन बिगड़ता है उपरोक्त इंद्रियां उतनी बीमार हो जाती है। हे मानव साइंस भी मानता है कि जो क्रिया होती है उसकी प्रतिक्रिया सबसे पहले मस्तिष्क पर होती है। अगर आंखें देख रही है तो दिमाग यानी मस्तिष्क से इसका संबंध होता है। कान सुन रहे हैं तो इसका संबंध मस्तिष्क से होता है। यानी इन सबका संबंध मस्तिष्क से जुड़ा होता है। इसलिए अगर व्यक्ति का मस्तिष्क सही काम कर रहा होता है तो सारी प्रक्रियाएं सही होती है। अब सवाल है कि एक पागल व्यक्ति सही देख सकता है, सही सुन सकता है, सही गंध महसूस कर सकता है, सही रस का अनुभव कर सकता है, फिर उसकी इन ज्ञानेंद्रियों

को बीमार नहीं कह सकते।

सही कहा। हे मानव। दिमाग में 80 प्रतिशत पानी होता है। चंद्रमा से जब ज्वार भाटा आता है तो उसकी तीव्रता कितनी होती है। उसकी मात्रा कितनी होती है। वह अलग-अलग होती है। इसलिए ज्ञानेंद्रियां, कर्मेन्द्रिया भी उसके अनुसार ही बीमार होती है। पानी में दो तरह की शक्ति होती है। ऋणात्मक और धनात्मक। जो सिद्धांत बिजली का है। वही सिद्धांत दिमाग का है। दिमाग भी बिजली की तरह चार्ज किया जाता है। बिजली के जिस सिद्धांत से बल्ब फ्यूज हो जाता है उसी सिद्धांत से दिमाग फ्यूज हो जाता है। अब सवाल है, क्या फ्यूज बल्ब को वापस वहीं किया जा सकता है? पागल दिमाग को सही किया जा सकता है? निसंदेह किया जा सकता है। इसके लिए वही वैज्ञानिक फार्मूला डॉक्टर इस्तेमाल करता है जो फ्यूज बल्ब को सही करने के लिए वैज्ञानिक इस्तेमाल करता है। लेकिन यह वैज्ञानिक यानी डॉक्टर की काबिलियत पर निर्भर करता है।

अब हे मानव जो बात मैं बताने जा रहा हूं, उसे ध्यान से सुनो। पागलपन क्या है? क्या पागल होना रोग है? इसका उत्तर हां में भी है और ना में भी। दिमाग में दो शक्तियां काम करती है। धनात्मक और ऋणात्मक। क्योंकि दिमाग में पानी होता है। पानी में हमेशा ऊर्जा होती है। ऊर्जा धनात्मक और ऋणात्मक होती है। बिजली का सिद्धांत यहां भी काम करता है। इसी धनात्मक और ऋणात्मक सिद्धांत से व्यक्ति का मस्तिष्क यानी दिमाग पागल होता भी है और नहीं भी होता है। जिस तरह ट्रांसफार्मर होता है। उसकी बिजली की कैपिसिटी अलग-अलग होती है। उसी तरह यह दिमाग यह मस्तिष्क भी ट्रांसफार्मर है। इसमें पागलपन या ऊर्जा या बिजली की क्षमता अलग-अलग होती है। लेकिन हे मानव इस धरती पर साइंस ने जितनी परमाणु शक्ति की खोज की है उससे असंख्य परमाणुओं जितनी ताकत या ऊर्जा या शक्ति दिमाग में होती है। क्योंकि दिमाग में प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन भी होते हैं। हे मानव, यह बात एक ऋषि कह रहा है। क्योंकि ऋषि को खुद श्रीकृष्ण बता रहे हैं। श्रीकृष्ण के दिमाग में अनंत ऊर्जा होती है। वे अनंत भगवान होते हैं। शिव भी श्रीकृष्ण है। गणेश भी श्रीकृष्ण है। कार्तिकेय भी श्रीकृष्ण है। ब्रह्मा भी श्रीकृष्ण है और दुनिया के जितने भी देव या शक्ति है सब श्रीकृष्ण में समाहित है। ईसा मसीह भी श्रीकृष्ण है। मुहम्मद साहब भी श्रीकृष्ण है। प्रोफेट जरथुष्ट्र भी श्रीकृष्ण है। संसार की सारी शक्तियां श्रीकृष्ण ही है। श्रीकृष्ण अनंत ऊर्जा का स्रोत है। अब बात मानव मस्तिष्क यानी दिमाग की करते हैं। मानव के दिमाग में भी अनंत ऊर्जा होती है। मगर यह अनंत ऊर्जा श्रीकृष्ण से संचालित होती है। यानी की तुम्हारे घरों में जो बिजली

जिस बिजलीघर से आती है। जिन खंभों से आती है। उसी तरह हे मानव तुम्हारे दिमाग में जो ऊर्जा है वह श्रीकृष्ण से संचालित होती है। बिजली खुद श्रीकृष्ण है। बिजलीघर जैसे असंख्या बिजलीघर श्रीकृष्ण में समाहित होते हैं। हे मानव तुम सोच रहे होंगे कि मुझे यह कैसे पता है? मैंने श्रीकृष्ण को साक्षात् देखा है। ठीक वैसे ही जैसे अर्जुन ने देखा था। जैसे कौरव सभा में भीष्म पितामह ने देखा था। श्रीकृष्ण ऊर्जा का अक्षय भंडार है। इसलिए श्रीकृष्ण को मैं हमेशा नमन करता हूँ। मैं इसीलिए श्रीकृष्ण की साधना करता हूँ। दुनिया के जितने भी दिमाग हैं। श्रीकृष्ण से संचालित होते हैं। चाहे पशु हो चाहे राक्षस हो चाहे कोई शक्ति या पराशक्ति हो। अनंत आत्माओं का एक ही बिजलीघर है और वह है साक्षात् परमात्मा यानी श्रीकृष्ण। ऐसे अनंत बिजलीघर मिलकर श्रीकृष्ण में समाहित हो जाते हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण ही पॉवर है। पॉवर का सिद्धांत धनात्मक और ऋणात्मक का संयोग होता है। मगर श्रीकृष्ण में धनात्मक और ऋणात्मक की बजाय गुणात्मक संयोग होता है। गुणात्मक एक ऐसा सिद्धांत है जो श्रीकृष्ण में पॉवर उत्पन्न करता है। धनात्मक और ऋणात्मक पॉवर का सिद्धांत गुणात्मक पॉवर के सिद्धांत से संचालित होता है। इसी गुणात्मक सिद्धांत में प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन मिलकर जो परमाणु शक्ति पैदा करते हैं वो भी समाहित होते हैं। श्रीकृष्ण में गुणात्मक पॉवर होती है। गुणात्मक पॉवर की खोज जो कर लेता है वो ऋषि सत्ता हो जाती है। एक भक्त में गुणात्मक पॉवर होती है। प्रहलाद में गुणात्मक पॉवर थी। ध्रुव में गुणात्मक पॉवर थी। इसलिए हे मानव गुणात्मक पॉवर की खोज अभी तक तुम्हारा साइंस नहीं खोज पाया है। तुम्हारा साइंस धनात्मक और ऋणात्मक पॉवर ही खोज पाया है। ऊर्जा का सिद्धांत धनात्मक और ऋणात्मक शक्तियों से चलता है, मगर श्रीकृष्ण का पॉवर का सिद्धांत गुणात्मक शक्ति से चलता है। जहां गुणात्मक सिद्धांत होता है वहां पागलपन कभी नहीं होता। लेकिन जहां धनात्मक और ऋणात्मक ऊर्जा होती है वहां दिमाग पागल भी हो सकता है। दिमाग का सही चलना यानी ऊर्जावान होना भी धनात्मक और ऋणात्मक शक्ति के संयोग से चलता है और दिमाग का पागल हो जाना भी इसी सिद्धांत से चलता है। चूँकि दिमाग में तीन चौथाई भाग पानी होता है तो चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षक शक्ति भी उसमें समय-समय पर ज्वार भाटा लाती रहती है और दिमाग पागल हो जाता है। जितना ज्वारभाटा तीव्र होता है उतना ही दिमाग प्रतिशत में पागल होता है। देखा जाए तो हर मानव का दिमाग कुछ न कुछ रूप में पागल ही होता है। आदमी का दिमाग संपूर्ण रूप से कभी पागल नहीं होता। हे मानव तुम्हारा सवाल होगा कि आदमी का दिमाग संपूर्ण पागल क्यों नहीं हो सकता? क्योंकि दिमाग में केवल 80 प्रतिशत पानी होता है 100 प्रतिशत नहीं। इसलिए पागल भी 80 प्रतिशत तक ही हो सकता है। इससे ज्यादा नहीं। 80 प्रतिशत पागल होना भी दो शक्तियां

ऊपन्न करती है। यह शक्ति धनात्मक और ऋणात्मक होती है। जो स्पार्किंग होती रहती है और समय-समय पर उसका वैसा व्यवहार होता रहता है। अब कई बार जब बच्चा जन्म लेता है तो उसके दिमाग में पानी की मात्रा 80 प्रतिशत से ज्यादा होती है। डॉक्टर उसका इलाज करते हैं। जब शिशु के दिमाग में 100 प्रतिशत पानी भर जाता है तो वह डेड की प्रक्रिया में पहुंच जाता है। इसलिए दिमाग का एक सिद्धांत यह भी है कि शिशु के दिमाग में 100 प्रतिशत पानी भर जाए या उससे भी अधिक प्रतिशत पानी भर जाए तो वह डेड होने की ओर अग्रसर होता है। डॉक्टर लोग इसे निकालते हैं। जब पानी निकालने में सफल हो जाते हैं तो शिशु की जान बच जाती है। शिशु इसी अवस्था में मानसिक रूप से बीमार होने की अवस्था में आ जाता है। कई बार डॉक्टर कहते हैं कि शिशु के दिमाग में पानी भर गया है। उसका असर उसके पागलपन के रूप में सामने आता है। इसलिए हे मानव सारा खेल दिमाग के पानी का है। पानी का कम अधिक होना भी पागलपन को जन्म देता है। आमतौर पर स्वस्थ व्यक्ति के दिमाग में 80 प्रतिशत पानी होता है। यहां स्वस्थ व्यक्ति शब्द पर गौर करना होगा। क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति कोई नहीं होता। इस 80 प्रतिशत पानी वाले दिमाग में भी पागलपन के लक्षण होते हैं। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं कि चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल से जो ज्वारभाटा आता है और उसी वजह से दिमाग में पागलपन की मात्रा तय होती है। हे मानव कुछ लोगों का मानना है कि चंद्रमा में गुरुत्वाकर्षण बल नहीं होता है। लेकिन हे मानव तुम्हारे नासा ने भी माना है कि चांद की सतह का गुरुत्वाकर्षण लगभग 1.62 मीटर प्रति वर्ग सेकंड है। इसकी तुलना में, पृथ्वी की सतह का गुरुत्वाकर्षण लगभग 9.8 मीटर प्रति वर्ग सेकंड है। इसलिए हे मानव तुम्हें पागल के बारे में आज बहुत कुछ बताया। अब तुम्हें पागल शब्द के बारे में काफी कुछ जानने को मिला होगा। पागल शब्द के बारे में आज इतना ही।





1 अगस्त 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

गुरु

गुरु ने ईश्वरीय शक्ति को जन्म दिया, बगैर गुरु के ईश्वर कुछ
नहीं कर सकते : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते

आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'गुरु' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरः, गुरुर साक्षात् परम ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः यानी गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शिव है, गुरु साक्षात् परम ब्रह्म है, ऐसे गुरु को नमस्कार करता हूं। हे मानव गुरु का महत्व कल भी था। गुरु का महत्व आज भी है। और गुरु का महत्व कल भी रहेगा। हमारी पहली गुरु हमारी माता होती है। दूसरा गुरु हमारे पिता होते हैं। तीसरे गुरु हमारे वो होते हैं जो हमारा जीवन निर्माण करते हैं और हमें काबिल बनाते हैं। गुरु बिन ज्ञान मिलना असंभव है। यहां श्रीराम को भी गुरु बनाना पड़ा था। यहां श्रीकृष्ण को भी गुरु बनाना पड़ा था। पांडवों को भी गुरु बनाना पड़ा था और कौरवों को भी गुरु बनाना पड़ा था। ध्रुव को गुरु मंत्र उनकी माता और नारद मुनि ने दिया था। देवताओं के गुरु ब्रह्मस्पति थे। राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य थे।

हे मानव प्रश्न है गुरु की उत्पत्ति कैसे हुई? तो सुनो हे मानव। आज से अनंत साल पहले जब कुछ नहीं था। न धरती थी। न आकाश था। न ही ब्रह्मांड था। एक शून्य था। तब भी एक शक्ति विद्यमान थी। उस शक्ति का नाम था स्वामी डम डम डीकानंद। स्वामी डम डम डीकानंद ही इस जगत के सृष्टा है। उनके छोटे भाई थे लघु। लघु स्वामी डम डम डीकानंद को अपना गुरु मानते थे। स्वामी डम डम डीकानंद शक्तियों का महापुंज है। स्वामी डम डम डीकानंद को कोई नहीं देख पाता। क्योंकि वे व्यक्त होकर भी हमेशा अव्यक्त रहते हैं। जो व्यक्त है वो भी स्वामी डम डम डीकानंद में अभिव्यक्त है। स्वामी डम डम डीकानंद के छोटे भाई थे उनका नाम लघु था। लघु के गुरु स्वामी डम डम डीकानंद थे। स्वामी डम डम डीकानंद के आदेश से लघु ने इस धरती पर जन्म लिया। इस तरह लघु ने इस धरती पर पहले पुरुष के रूप में जन्म लिया। लघु की पत्नी का नाम माया था।

लघु और माया ने मिलकर अपना परिवार बढ़ाया। लघु इस धरती पर पहले राजा थे। उनका संपूर्ण पृथ्वी पर राज था। लघु और माया के दो तेस्वमी पुत्र हुए। एक पुत्र का नाम सुर था और दूसरे का असुर। सुर और असुर दोनों ही तेजस्वी और ताकतवर थे।

लेकिन सुर स्वभाव से अच्छा था और असुर बुरे स्वभाव का था। एक बार असुर ने सुर पर आक्रमण कर दिया और दोनों में लंबे समय तक युद्ध चला। आखिर सुर के पैर उखड़ने लगे और वह भाग गया। आखिर सुर ने आसमान में स्वर्ग नाम से एक राज्य स्थापित किया और वहां राज करने लगा। कुछ ही समय में स्वर्ग धरती से भी ज्यादा सुंदर जगह हो गई। जब असुर को पता चला तो उसने स्वर्ग पर भी आक्रमण कर दिया। इस तरह असुर ने सुर को स्वर्ग से भी बेदखल कर दिया और असुर ने स्वर्ग पर भी कब्जा कर लिया। सुर के भी अनेक पुत्र थे और असुर के भी अनेक पुत्र थे। आखिर सुर ने अपने पिता लघु के बड़े भाई और गुरु स्वामी डम डम डीकानंद का स्मरण किया और आग्रह किया कि उन्हें स्वर्ग का खोया राज्य लौटाए।

तब स्वामी डम डम डीकानंद ने अपने तेज से ब्रह्मा, विष्णु और महादेव नाम की तीन शक्तियां उत्पन्न की। और आदेश दिया कि जगत के कल्याण के लिए अपनी-अपनी भूमिका अदा करें। इस तरह विष्णु ने अपनी शक्ति से असुर को हरा दिया और सुर को स्वर्ग का राज्य वापस दिलाया। इस तरह असुर के पुत्र इधर-उधर भाग गए। कालांतर में लघु के वंश में सुर की संतानों में इक्ष्वाकु, कुक्षि, दिलीप, रघु, अज, दशरथ और उनके पुत्र राम का जन्म हुआ। और असुर के वंशज में कालांतर में रावण का जन्म हुआ। रावण से पहले भी अनेकानेक राक्षसों का जन्म हो चुका था जिनकी कहानी फिर कभी सुनाएंगे। भगवान राम की वंशावली इस तरह अस्तित्व में आई। जब रावण का आतंक बढ़ गया तो ब्रह्माजी, शिवजी और सारे सुर पुत्र विष्णुजी के पास गए और रावण का अंत करने की प्रार्थना की। तब विष्णुजी ने राजा दशरथ के यहां राम के रूप में जन्म लिया। दूसरे देवताओं ने अलग-अलग रूप में दशरथ के पुत्रों के रूप में जन्म लिया। हे मानव, तुम सोचते होंगे कि यह क्या कहानी सुनाई जा रही है। हे मानव सुनो, इस धरती पर ईश्वर से भी बड़ी शक्ति केवल गुरु है। और गुरु ने ही ईश्वर को जन्म दिया और अपनी सारी शक्तियां व्यक्त और अव्यक्त रूप में उन्हें सौंप दी।

श्रीकृष्ण भी स्वामी डम डम डीकानंद का ही अंश है और अपने आप में व्यक्त और अव्यक्त रूप में संपूर्ण शक्ति है। श्रीकृष्ण तो व्यक्त और अव्यक्त दोनों रूप में रहते हैं मगर स्वामी डम डम डीकानंद अभी तक व्यक्त हुए ही नहीं हैं। मगर सब व्यक्त उनमें ही अभिव्यक्त है। तो हे मानव सुनो। इस जगत में जितने भी सुर-असुर हुए वे स्वामी डम डम डीकानंद के छोटे भाई और शिष्य लघु की संतानें हैं। लघु की पत्नी का नाम माया था। माया और लघु ने मिलकर ही सुर-असुर को जन्म दिया जिसके कालांतर में देवता और राक्षस रूप में संतानें उत्पन्न होती गई। इस तरह स्वामी डम डम डीकानंद ने ब्रह्माजी को

जगत में सृष्टि का सहभार सौंपा। असल में इस जगत के सृष्टा स्वामी डम डम डीकानंद ही है। ब्रह्माजी को जब असिस्टेंट की भूमिका मिली तो उन्होंने स्वामी डम डम डीकानंद को अपना गुरु मानकर उनका आह्वान करते हुए सृष्टा यज्ञ किया और इस जगत में सृष्टी की रचना की। हे मानव इस जगत में स्वामी डम डम डीकानंद ने ही अल्लाह रूपी शक्ति और शैतान रूपी शक्ति की उत्पत्ति की। स्वामी डम डम डीकानंद ने ईसा मसीह और उनके शत्रुओं की रचना की। इस जगत में जो नकारात्मक और सकारात्मक जितनी भी शक्तियाँ है उसकी उत्पत्ति का केंद्र स्वामी डम डम डीकानंद ही है। इसीलिए कहा गया है- गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः, गुरु साक्षात् परम ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः यानी गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शिव है, गुरु साक्षात् परम ब्रह्म है, ऐसे गुरु को नमस्कार करता हूँ।

अब तुम्हें समझ में आ गया होगा मानव कि गुरु को सब नमस्कार क्यों करते हैं। गुरु ही सर्व शक्तिमान सत्ता है। यहां राम को भी गुरु बनाना पड़ता है और कृष्ण को भी गुरु बनाना पड़ता है। इसलिए स्वामी डम डम डीकानंद ही पहले गुरु है। वे ही सर्व शक्तिमान है। मगर स्वामी डम डम डीकानंद कभी व्यक्त रूप में नहीं आएंगे। वे हमेशा अव्यक्त रूप में ही रहते हैं। उनकी शक्तियों को मुसलमान, ईसाई, हिंदू, सिख, पारसी, जैन, बौद्ध और तमाम धर्म के लोग अपने अपने ईष्ट के रूप में पूजते हैं। जबकि इस धरती पर स्वामी डम डम डीकानंद ही सर्वशक्तिमान सत्ता है। ब्रह्मांड में जितने भी ग्रह है उन सभी ग्रहों पर जहां जहां भी जीवन है। जहां जहां भी जो भी शक्ति है वह सभी शक्ति स्वामी डम डम डीकानंद ही है।

हे मानव, तुम्हारे शास्त्रों में कई कहानियां है। हिंदुओं की कहानियां है। मुसलमानों की कहानियां है। जैन धर्म के लोगों की कहानियां है। बौद्ध धर्म के लोगों की कहानियां हैं। पारसी धर्म के लोगों की कहानियां है। सिख धर्म के लोगों की कहानियां है। यह कहानियां क्या मात्र कहानियां है? अगर तुम इन कहानियों पर सच मानकर भरोसा करते हो तो स्वामी डम डम डीकानंद की कहानी पर भी तुम्हें भरोसा करना होगा। लोगों ने अल्लाह को भी नहीं देखा लेकिन मुसलमानों को भरोसा है कि अल्लाह है। तो स्वामी डम डम डीकानंद भी है। लेकिन स्वामी डम डम डीकानंद कभी व्यक्त नहीं होंगे, क्योंकि वे अगर व्यक्त हो गए तो तुम उनकी हत्या कर दोगे।

स्वामी डम डम डीकानंद का आश्रय स्थल ऐसी अंधी गुफा में है जहां तक कोई नहीं पहुंच सकता। संसार का सारा रिमोट कंट्रोल स्वामी डम डम डीकानंद के हाथों में है। लेकिन स्वामी डम डम डीकानंद को कोई कभी देख नहीं पाएगा। क्योंकि वे अव्यक्त

रहते हैं। मगर उनकी शक्तियां व्यक्त हो सकती है। फिर किस रूप में वे किस शक्ति को व्यक्त करेंगे कोई नहीं जानता। हे मानव स्वामी डम डम डीकानंद ही गुरु सत्ता है। गुरु शब्द की उत्पत्ति भी स्वामी डम डम डीकानंद के रूप में हुई थी। यह शक्ति कभी खत्म नहीं होगी। यह शक्ति अनंत शक्ति है। ठीक वैसे ही जैसे श्रीकृष्ण अनंत शक्ति है। अल्लाह अनंत शक्ति है। ईसा मसीह अनंत शक्ति है। मगर सारी शक्तियों की मूल शक्ति केवल स्वामी डम डम डीकानंद है। आज आपने गुरु शब्द की उत्पत्ति के बारे में जाना। गुरु के बारे में आज इतना ही। गुरु सत्ता को नमन।





2 अगस्त 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

अंधकार

अंधकार के गर्भ में ही प्रकाश अर्थात् ज्ञान होता है, इसलिए धरती के ऋषियों ने अंधकार को अज्ञान कहा है वह गलत है। अंधकार का अर्थ कभी भी अज्ञान नहीं हो सकता, अंधकार भ्रम-संशय तो हो सकता है अज्ञान नहीं : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ। पंकजप्रभु अपने चातुर्मास के दौरान चार माह तक एक ही स्थान पर विराजमान होकर अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे रहेंगे। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं।

जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। आज स्वामीजी 'अंधकार' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

अंधकार। हे मानव आज हम अंधकार शब्द पर अपनी बात रखेंगे। अंधकार यानी अंधेरा। जहां प्रकाश न हो वह अंधकार। ऋषि मुनि जिसे अज्ञान कहते हैं। लेकिन अंधकार का अर्थ अज्ञान नहीं है, इसे हम आगे स्पष्ट करेंगे। जब सृष्टि के आरंभ में कुछ नहीं था तब शून्य व्याप्त था। चारों तरफ अंधकार व्याप्त था। एक ऐसा अंधकार जहां प्रकाश की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। हे मानव अंधकार में कुछ भी उत्पन्न नहीं हो सकता। जीव की उत्पत्ति के लिए भी प्रकाश जरूरी है। लेकिन हे मानव यह भी सच है कि केवल प्रकाश में भी जीवन संभव नहीं है। जीवन के लिए अंधकार और प्रकाश दोनों तत्व जरूरी है। इसे यूं समझो- क्या सूर्य पर जीवन संभव है? सूर्य पर तो प्रकाश है मगर जीवन नहीं है। क्योंकि केवल प्रकाश में जीवन नहीं होता। जीवन के लिए प्रकाश और अंधकार दोनों जरूरी है। हे मानव अंधकार में ओंकार तत्व विद्यमान होता है। यहीं ओंकार तत्व अंधकार को प्रकाश में तब्दिल कर देता है। ओंकार जब प्रस्फुटित होता है तो प्रकाश का जन्म होता है। ओंकार प्रकाश तत्व से युक्त होता है।

हे मानव तुम्हारा सवाल होगा ओंकार तत्व क्या है? क्या पहले अंधकार था या ओंकार तत्व? अंधकार में भी ओंकार तत्व का अस्तित्व होता है। या कहें कि ओंकार का स्वभाव अंधकार ही होता है। लेकिन उसका परिणाम प्रकाश होता है। ओंकार हमेशा अंधकार रूप में साकार होता है। मगर जब ओंकार अंगड़ाई लेता है तो प्रकाश उत्पन्न होता है। ओंकार में अंधकार और प्रकाश दोनों होते हैं। लेकिन ओंकार को प्रकाश में नहीं देखा जा सकता। ओंकार को देखने के लिए अंधकार में जाना होता है। इसी ध्यान को ऋषि मुनियों ने प्रकाश कहा है जब सही मायने में वह अंधकार है। अंधकार की खोज करके ही प्रकाश को खोजा जा सकता है। अंधकार का मतलब शून्य में जाना होता है। जब ऋषि शून्य में चला जाता है तो वह अंधकार में पहुंच जाता है। ब्लैकहोल में पहुंच जाता है। ब्लैक होल में क्या जीवन है? ब्लैकहोल जिसमें कहा जाता है कि पृथ्वी समा

सकती है। कई ग्रह इसमें समा सकते हैं। हमारे ब्रह्मांड में कहा जाता है कि अनेक ब्लैकहोल हैं। जैसा कि नाम से जाना जाता है ब्लैकहोल यानी अंधी गुफा।

हमारा शरीर भी एक ब्लैकहोल है। मगर इसमें जीवन है। शरीर रूपी ब्लैकहोल में आत्मा रूपी सुपर पॉवर या कहें कि आत्मा रूपी प्रकाश विद्यमान है। यह बात सही है कि पृथ्वी या पृथ्वी जैसे अनेक ग्रह ब्लैकहोल में समा सकते हैं। मगर क्या ब्लैकहोल में पृथ्वी समा जाए तो पृथ्वी का जीवन समाप्त हो जाएगा? इसे यूं समझें कि ब्लैकहोल शरीर है और पृथ्वी सुपर पॉवर यानी आत्मा अर्थात् परमात्मा है। जब तक ब्लैकहोल में आत्मा या परमात्मा रूपी सुपर पॉवर है तब तक ब्लैकहोल सुरक्षित है। जैसे ही आत्मा रूपी सुपर पॉवर निकल जाती है ब्लैकहोल रूपी शरीर भी नष्ट हो जाता है। इसलिए हे मानव ब्लैकहोल शरीर है। श्रीकृष्ण सुपर पॉवर है। इसलिए जब तक श्रीकृष्ण रूपी सुपर पॉवर मौजूद है ब्लैकहोल भी सुरक्षित है। इसलिए यह कहना कि ब्लैकहोल सुपर पॉवर को खत्म कर देगा गलत है क्योंकि सुपर पॉवर तो ब्लैकहोल को खत्म कर सकती है, ब्लैकहोल सुपर पॉवर को खत्म नहीं कर सकता। हे मानव पृथ्वी इस समय भी ब्लैकहोल में ही है और उस पर जीवन विद्यमान है। पृथ्वी हमेशा ब्लैकहोल में ही रहती है। इसलिए यह कहना कि पृथ्वी ब्लैकहोल में समा जाएगी और जीवन खत्म हो जाएगा गलत है, क्योंकि पृथ्वी हमेशा ब्लैकहोल में ही रहती है। यह पृथ्वी हमेशा ब्लैकहोल में ही रहती है। इसे यूं कहें कि अंधकार की वजह से ही पृथ्वी पर जीवन है। अगर धरती पर अंधकार न हो केवल सूर्य ही हो? तो क्या जीवन संभव है? भला क्या सूर्य पर जीवन संभव है? जीवन वहीं होगा जहां अंधकार होगा? इसलिए जीवन की उत्पत्ति प्रकाश से हुई जरूर है लेकिन जीवन बना रखने के लिए अंधकार और प्रकाश दोनों जरूरी हैं।

हे मानव जैसा कि श्रीकृष्ण कहते हैं अंधकार और प्रकाश दोनों मैं ही हूं। अंधकार का अर्थ हे मानव तुम्हारे ऋषि मुनियों ने अज्ञान कहा है। जबकि अंधकार के गर्भ में ही प्रकाश अर्थात् ज्ञान होता है। इसलिए तुम्हारे धरती के ऋषियों ने अंधकार को अज्ञान कहा है वह गलत है। अंधकार का अर्थ कभी भी अज्ञान नहीं हो सकता। अगर अंधकार का अर्थ अज्ञान होता तो ऋषि को अंधकार में अज्ञान का भान कैसे होता? क्या ऋषि ने कभी अंधकार को देखा है? क्या जगत में जो ऋषि हुए हैं उन्होंने अंधकार का समय देखा है? जब ऋषि पैदा हुआ तो अंधकार था ही नहीं। फिर प्रकाश में कुछ समय के लिए अंधकार को ऋषि अज्ञान कैसे कह सकता है? दरअसल अंधेरा कुछ समय के लिए होता है। जब सुबह होने वाली होती है तो अंधेरा एक दम गहरा होता है और सूर्य की कौपल फूट पड़ती है। इसलिए अंधकार को अज्ञान कहना गलत है। हे मानव तुम्हारे

ऋषि ने अज्ञानवश अज्ञान को अंधकार कहा है। अज्ञान का अर्थ अंधकार हो ही नहीं सकता। गीता में श्रीकृष्ण ने अज्ञान के लिए अंधकार शब्द का इस्तेमाल किया ही नहीं है। क्योंकि ज्ञान और अज्ञान प्रकाश में भी विद्यमान रह सकते हैं। आत्मा ही प्रकाश है। हे मानव तुम्हारा सवाल होगा कि अंधकार और प्रकाश कहां है? हमारे शरीर के भीतर अंधकार है। शरीर के बाहर प्रकाश है। जब शरीर के भीतर का अंधकार और शरीर के बाहर का प्रकाश दोनों विद्यमान होते हैं तभी जीवन चक्र चलता है। जीवन बनाए रखने के लिए अंधकार और प्रकाश दोनों तत्व जरूरी है।

हे मानव हमारी बात अधूरी छूट गई थी। तुम्हारा सवाल था कि क्या ब्लैकहोल में पृथ्वी समा जाए तो क्या पृथ्वी का जीवन समाप्त हो जाएगा? श्रीकृष्ण की मर्जी से ही ऐसा होगा? श्रीकृष्ण के भीतर असंख्य पृथ्वियां समाई हुई है। अगर श्रीकृष्ण चाहेंगे तो एक पृथ्वी ब्लैकहोल में समा कर नष्ट हो जाएगी। लेकिन इस ब्रह्मांड में पृथ्वी जैसी अनेक पृथ्वियां हैं। श्रीकृष्ण ही सुपर पावर है। श्रीकृष्ण में अनेक ब्लैकहोल हैं। ब्लैकहोल में श्रीकृष्ण कभी नहीं समाते। ये समस्त ब्लैकहोल श्रीकृष्ण के बनाए हुए हैं। इसलिए यह कहना कि पृथ्वी ब्लैकहोल में समाकर नष्ट हो जाएगी, गलत है। ब्लैकहोल में समाकर भी पृथ्वी नष्ट हो जाए यह जरूरी नहीं क्योंकि श्रीकृष्ण तत्व असंभव को भी संभव कर सकते हैं। महाभारत के युद्ध में जब द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के प्रहार से अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा ने मृत शिशु को जन्म दिया था किंतु भगवान श्रीकृष्ण ने अभिमन्यु-उत्तरा के पुत्र को ब्रह्मास्त्र के प्रयोग के बाद भी फिर से जीवित कर दिया था। कैसे? हे मानव श्रीकृष्ण जहां है वहां कुछ भी असंभव नहीं है। यही बालक आगे चलकर राजा परीक्षित नाम से प्रसिद्ध हुआ। परीक्षित की तक्षक सांप के काटने से मृत्यु हो गई थी। इससे पहले राजा परीक्षित ने भागवत कथा सुनी थी। भागवत कथा सुनने के बाद तक्षक सांप काटता है और राजा परीक्षित मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। परीक्षित के प्रतापी पुत्र जन्मेजय ने सांपों को मारने का महायज्ञ शुरू किया और राजा परीक्षित का बदला लेना चाहा। इस पर मौका मिला तो हे मानव फिर कभी चर्चा करेंगे क्योंकि हमारा विषय फिलहाल अंधकार है। तो हे मानव मैं बताना चाहूंगा कि अंधकार का अर्थ अज्ञान कतई नहीं है। अंधकार का अर्थ अज्ञान नहीं भ्रम है। भ्रम और अज्ञान में अंतर होता है। अंधकार जहां होगा वहां संशय होगा, भ्रम होगा मगर अज्ञान नहीं होगा। अंधकार भ्रम और संशय को जन्म देता है, मगर अंधकार के बाद प्रकाश का आना भी तय है। रात चाहे कितनी गहरी हो सुबह का होना तय है वैसे ही अंधकार की कोख से प्रकाश का उत्पन्न होना तय है। हे मानव तुम्हारे ऋषियों ने जिस अंधकार को अज्ञान कहा है वह उनकी अज्ञानता है क्योंकि अंधकार का अर्थ अज्ञान कतई नहीं है। श्रीकृष्ण

ने अंधकार के लिए भ्रम और संशय जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया था न कि अज्ञान। क्योंकि श्रीकृष्ण अंधकार और प्रकाश दोनों तत्वों से परींचित है। फिर भला श्रीकृष्ण अंधकार को अज्ञान क्यों कहेंगे?

हे मानव तुमने अभी अश्वत्थामा की कहानी सुनी। अश्वत्थामा के ललाट पर मणी थी। यह मणी जब तक उसके ललाट में रही तब तक वह प्रकाश से युक्त रहा और जैसे ही मणी उसके ललाट से निकाल ली गई वह अंधकार से युक्त हो गया। हे मानव इस घटना पर भी एक नजर डालते हैं। महाभारतका युद्ध समाप्त हो चुका था। पांडव पक्ष के लोग विजय की खुशी में सुख की निद्रा में लीन थे। उनकी ऐसी धारणा थी कि कौरव पक्ष का एक भी व्यक्ति शेष न रहने के कारण युद्ध समाप्त हो चुका है, किंतु यह उनकी भूल थी। कौरव पक्ष का एक व्यक्ति जीवित था, जिसके हृदय में बदला लेने की भावना रह-रहकर धधक रही थी। वह था गुरु द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा। उसने युद्ध के नियम ताक पर रख दिए और हाथ में तलवार लिए पांडवों के शिविर में प्रवेश किया। उसने द्रौपदी के पांच पुत्रों का वध कर दिया।

अश्वत्थामा का यह कुकृत्य जब दूसरे दिन द्रौपदी को पता चला तो वह पुत्रों के शोक में विह्वल हो गई। उसके हृदय में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। उसकी हालत देख अर्जुन भी आक्रोशित हो गया। वह द्रौपदी से बोला, 'पांचाली, शोक न करो। मैं उस नीच को अभी पकड़कर तुम्हारे सामने पेश करूंगा और इसका बदला लूंगा।' भीम ने भी अर्जुन का साथ दिया और वे दोनों अश्वत्थामा को बांधकर द्रौपदी के पास ले आए।

गुरुपुत्र को इस प्रकार से बंधा देख द्रौपदी का कोमल ममतामय हृदय पिघल गया। अर्जुन ने जैसे ही अश्वत्थामा का शीश काटने के लिए तलवार उठाई द्रौपदी ने उसका हाथ थाम लिया। वह बोली, 'स्वामी, आप इसे पकड़ लाए, बस इतने से ही मैं संतुष्ट हूं। यह गुरुपुत्र है, इसे छोड़ दिया जाए क्योंकि इसकी माता कृपी अभी भी जीवित हैं और मैं नहीं चाहती कि वह भी इसके वियोग में शोक करें। पुत्र शोक का मुझे पूर्ण अनुभव है। मैं नहीं चाहती कि एक माता को शोक के सागर में डुबाया जाए।' अपने पांच पुत्र गंवा चुकी मां की इन भावनाओं ने कृपी पुत्र का जीवन बचा दिया। श्रीकृष्ण के कहने पर पांडवों ने अश्वत्थामा के ललाट की मणि को निकालकर उसे मुक्त कर दिया। हे मानव यह मणी ही प्रकाश है। जब मणी अश्वत्थामा के ललाट से निकल गई तो वह अंधकार में चला गया। ब्लैकहोल में चला गया। क्या? ब्लैकहोल में जाने से अश्वत्थामा की मौत हो गई? क्या अश्वत्थामा आज भी जीवित है? हे मानव सभी बातें आज बताने का समय नहीं है। अब हमारा प्रवचन को विराम देने का समय हो रहा है। लेकिन मैं यह बताना चाहूंगा कि

अंधकार और प्रकाश दोनों जहां है वहां ही जीवन है। अंधकार में ओंकार तो होगा मगर उसे भी जीवन रूपी खेला करने के लिए प्रकाश तत्व की जरूरत होगी। और जीवन को बनाए रखने के लिए अंधकार और प्रकाश दोनों तत्व जरूरी है। जहां तक अज्ञान और अंधकार की बात है। अंधकार का अर्थ अज्ञान कतई नहीं है।





3 अगस्त 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

24 दिन ब्रेक

24 तीर्थंकर तत्व साधना की वजह से 24 दिन नित्य प्रवचन नहीं होंगे : पंकजप्रभु

रहस्यमयी जैन संत पंकजप्रभु ने तरंगों से संकेत दिए हैं कि वे 24 दिन तक 24 तीर्थंकर तत्व साधना में लीन हो रहे हैं। इस साधना को करने के बाद 24 तीर्थंकरों की सिद्धियां उन्हें प्राप्त होगी जिसके इस संसार के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। किसी भी जैन संत ने यह साधना आज तक नहीं की है। पहली बार वे यह साधना करने जा रहे हैं इसलिए वे 3 अगस्त से 26 अगस्त नित्य प्रवचन नहीं देंगे।





27 अगस्त 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

साधना

जिसे हम 'साधना' कहते हैं, वह शब्द ही गलत है। श्रीकृष्ण कहते हैं मुझे कोई साध नहीं सकता, मुझे 'समर्पण' से पाया जा सकता है: पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ था। 17 जुलाई से 2 अगस्त तक पंकजप्रभु महाराज ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिए। पंकजप्रभु अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे हैं। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं, जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन हैं? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं

और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप है। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। चूंकि गुरुदेव 3 अगस्त से 26 अगस्त तक 24 तीर्थकरों की साधना में लीन थे इसलिए उनके प्रवचन नहीं हुए थे। आज 27 अगस्त को स्वामीजी ने फिर इमसे मानसिक रूप से संपर्क किया है और मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन दे रहे हैं। अंतिम बार 2 अगस्त को स्वामीजी ने 'अंधकार' शब्द पर प्रवचन दिए थे। आज स्वामीजी 'साधना' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव बोल रहे हैं-

साधना। ना बाबा नातीर्थकर कहते हैं साध नाहमने उस दिव्य शक्ति को 'साधने' की कोशिश की मगर वे 'सधे' नहीं। हालांकि हमें इस बात की निराशा नहीं है। क्योंकि परम शक्ति और वो परम तत्व मन से किए गए और शुद्ध भाव से की गई 'साधना' को भी स्वीकार करके 'सध' जाते हैं। जहां समर्पण होता है वहां साधना सफल होती है। मगर हमने 24 दिनों में 24 तीर्थकरों की साधना में जाने के बाद और साधना पूरी करने के बाद यह आत्म चेतना प्राप्त की है कि जिसे हम 'साधना' कहते हैं, वह शब्द ही गलत है। श्रीकृष्ण कहते हैं मुझे कोई साध नहीं सकता, मुझे 'समर्पण' से पाया जा सकता है, इसलिए साधना नहीं समर्पण करोहे मनुष्य साध ना, तपस्या करो, समर्पण करो।

आज मैं 24 दिनों की साध ना का सार बताता हूं। हे मनुष्य 24 तीर्थकर क्या है? दिन और रात मिलकर यानी 24 घंटे मिलकर एक दिन पूरा होता है। यानी 24 तीर्थकर ही एक दिन है। एक पूरी सृष्टि ही 24 तीर्थकर है। एक पूरा ब्रह्मांड ही 24 तीर्थकर है। इस ब्रह्मांड में भी 24 ब्रह्मांड है। सभी तीर्थकरों के हिस्से एक-एक ब्रह्मांड है। उन 24 ब्रह्मांडों में भी 24 मल्टी ब्रह्मांड है। 24 तीर्थकर केवल अंकों में 24 है और हकीकत में वे एक दिन की तरह है। दिन और रात दो स्थितियां हैं। जिस तरह से शरीर और आत्मा। दिन शरीर है। रात आत्मा। आत्मा को रात में भी खोजा जा सकता है। अंधकार में ही सृजन होता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म अंधकार में हुआ। अंधकार में ही बीज का अंकुरण होता है। धरती में बीज हमेशा अंधकार में प्रस्फुटित होता है। अंधकार आत्मा है और शरीर प्रकाश। हमारे मनीषियों ने इसका उल्टा दूँढा। हमारे मनीषियों ने शरीर को अंधकार कहा और आत्मा को प्रकाश कहा। जबकि शरीर प्रकाश है यानी शरीर दिन है

और आत्मा अंधकार है यानी रात है।

आत्मा अंधकार कैसे है? आत्मा को किसी ने नहीं देखा। अंधेरे को किसी ने नहीं देखा। इसलिए न आत्मा को देखा जा सकता और न अंधकार को। अंधकार में ही आत्मा का वास होता है। यहां यह गौर करने वाली बात है। आत्मा में अंधकार का वास नहीं होता बल्कि अंधकार में आत्मा का वास होता है। हे मनुष्य तुम सोच रहे होंगे कि यह कौनसी थ्योरी बताई जा रही है? यह कौनसा सिद्धांत बताया जा रहा है? यह सिद्धांत है अध्यात्म की खोज का। इसे पंकज प्रभु ने खोजा है। अपने आपको 24 तीर्थकरों को समर्पित कर। इन 24 दिनों में पंकज प्रभु ने 24 अनंत ब्रह्मांड और उन 24 अनंत ब्रह्मांड में 24 मल्टी ब्रह्मांड में भ्रमण किया। अब मैं बताता हूं उन सभी ब्रह्मांड और मल्टी ब्रह्मांड में क्या है?

हे मानव आपने सपने देखे होंगे। आप सपनों में जो देखते हो वो सब हमारे यूनिवर्स और मल्टी यूनिवर्स में पहले से ही घटित है। कोई भी सपना हमारे यूनिवर्स और मल्टी यूनिवर्स से बाहर का हो ही नहीं सकता। जो श्रीकृष्ण तत्व है उसमें ये सभी 24 तीर्थकर, 24 ब्रह्मांड, 24 मल्टी ब्रह्मांड समाहित है। और ये सभी एक गुरु में समाहित है। और वो गुरु है स्वामी डम डम डीकानंद। हे मानव, ये कोई कहानी नहीं है। इसे मैंने अंधकार में खोजा है। मैं इस समय अंधकार में ही प्रवचन दे रहा हूं। इस समय रात के 3:25 हो रहे हैं। तुम श्रीकृष्ण जन्म का जश्न मना चुके हो। मैं तो श्रीकृष्ण के साथ ही उनकी आत्मा में ही विराजमान हूं। इस बार प्रवचन मैं नहीं स्वयं श्रीकृष्ण दे रहे हैं। तो हे मानव सुनो, श्रीकृष्ण हमेशा अंधकार में ही प्रकट होते हैं। वे श्याम वर्ण है। अंधकार जब गहरा होता जाता है तभी प्रकाश का जन्म होता है। प्रकाश और अंधकार की कहानी में पहले अंधकार आया और बाद में प्रकाश। पूरे ब्रह्मांड में। पूरे मल्टी ब्रह्मांड में सबसे पहले अंधकार ही था। अंधकार से ही प्रकाश की उत्पत्ति हुई। आज भी ब्रह्मांड में अंधकार और प्रकाश दोनों है। मैंने जब 24 तीर्थकरों को अपने आपको समर्पित किया तो ऐसा लगा जैसे 24 तीर्थ कर लिए हो। मुझे नहीं पता इस धरती पर कितने तीर्थ है। मगर मुझे 24 तीर्थकरों ने कहा कि इस धरती पर 24 तीर्थ है। इन 24 तीर्थों के नाम तो मुझे भी नहीं पता मगर 24 तीर्थ इस धरती पर है तभी तो 24 तीर्थकरों ने कहा है। तुम खोजो। तुम अपना दिमाग लगाओ और उन 24 तीर्थों को पवित्र मानकर उसके प्रति समर्पित हो जाओ। आज से साधना शब्द का इस्तेमाल नहीं करना। उसकी जगह तपस्या शब्द का इस्तेमाल करना। तपस्या से समर्पण का भाव प्रकट होता है। साधना से अहंकार का भाव प्रकट होता है। मैं गया तो साधना करने ही था, मगर मुझे श्रीकृष्ण ने बताया कि तुमने

24 तीर्थकरों की तरह साधना की, अब तुम समर्पण करो तो मैं तुम्हारे 24 तीर्थकरों की ताकत का रहस्य बताऊंगा। मैंने श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि 24 तीर्थकर ही इस जगत में दिन और रात यानी 24 घंटे हमारे परिवेश में रहते हैं। दिन और रात हमारे बीच जो ताकत विद्यमान है वो 24 तीर्थकर ही है। इन 24 तीर्थकरों के बिना दिन और रात संभव ही नहीं है।

हे मानव, श्रीकृष्ण जिस पर प्रेम बरसाते हैं उसे सबकुछ दे देते हैं। श्रीकृष्ण ने 24 तीर्थकरों को सबकुछ दे दिया है। जो श्रीकृष्ण का है वो सबकुछ इन 24 तीर्थकरों का है। सभी 24 तीर्थकर अब दिन और रात हो गए हैं। न दिन खत्म हो सकता है और न ही रात। जब तक दिन रात रहेंगे तब तक 24 तीर्थकर रहेंगे। दिन और रात का वरदान श्रीकृष्ण ने 24 तीर्थकरों को दिया है।

इसलिए हे मानव अब इस सत्य को जान लो कि सत्य को कभी साधा नहीं जा सकता। सत्य को स्वीकार किया जाना चाहिए। सत्य के प्रति समर्पित होना चाहिए। सत्य ही शाश्वत है। शाश्वत ही श्रीकृष्ण है। श्रीकृष्ण ही परम तत्त्व है और परम तत्त्व ही परम गुरु है। और परमगुरु स्वामी डम डम डीकानंद है। यह कहानी स्वामी डम डम डीकानंद से शुरू होती है और कभी खत्म नहीं होगी। अनंत कहानी के अनंत पात्र आएंगे। मगर यह कहानी अनंत रहेगी। चाहे धरती रहे ना रहे यह कहानी अनंत ब्रह्मांडों में अनंत काल तक विचरण करेगी।

हे मानव साधना शब्द की बजाय समर्पण और तपस्या शब्द पर श्रीकृष्ण जोर देते हैं। उन्हें पाने के लिए समर्पण करना होगा। समर्पण करना होगा यानी अंधकार में जाना होगा। समर्पण अंधकार है। अंधकार का अर्थ अज्ञान नहीं है। प्रकाश का अर्थ पूर्ण ज्ञान भी नहीं है। प्रकाश और अंधकार दोनों मिलेंगे तभी ज्ञान होगा। केवल प्रकाश ज्ञान नहीं है और केवल अंधकार अज्ञान नहीं है। इसलिए अंधकार में जाना होगा। अंधकार में आत्मा है। आत्मा की खोज से पहले अंधकार की खोज करनी होगी। अंधकार की खोज करने के लिए अपने को समर्पित करना होगा। जब हम अपने को समर्पित कर देंगे यानी खुद अंधकार हो जाएंगे तो हमारे भीतर से प्रकाश फूटेगा। जब तीर्थकर साधना कर रहे थे तो वे साधना करते गए और साधना करते गए। उन्होंने साधना तो की मगर पूरी तरह समर्पण नहीं किया। समर्पण करने वाले को साधना की जरूरत ही नहीं पड़ती। जरूरी नहीं कि आप ध्यान लगाओ। समर्पण तो किसी भी रूप में हो सकता है। प्रह्लाद ने कौनसी साधना की थी। उसने तो अपने आपको नारायण को समर्पित कर दिया। प्रह्लाद ने साधना नहीं की थी। प्रह्लाद ने समर्पण किया था। साधना से कभी प्रभु को प्राप्त नहीं

किया जा सकता। प्रभु को पाना है तो समर्पण करना होगा। हमारे 24 तीर्थकरों ने साधना की थी। मगर सच्चे मन से और सच्चे भाव से की गई उनकी साधना से भी वह परम तत्व सध गया और 24 घंटे का विधान उनके नाम हो गया। दिन और रात यानी 24 घंटे 24 तीर्थकरों के नाम हो गए। हर एक तीर्थकर एक घंटा है। ये 24 घंटे ही 24 तीर्थकर हैं। इसलिए हे मानव साधना पर अब तक तुम्हें बताया। मैंने साधना की बजाय अपने को 24 तीर्थकरों को समर्पित कर दिया। जो जो प्राणी अपने आपको श्रीकृष्ण को समर्पित कर देगा, वह श्रीकृष्ण का स्नेह प्राप्त कर सकेगा। और आज जन्माष्टमी पर यही आपको मंत्र देता हूं। कोई मंत्र साधना मत करो। बस अपने आपको प्रभु को, किसी भी परम तत्व को, जिसे तुम मानते हो, उसे अपने आपको समर्पित कर दो। यही असली तपस्या है। इसलिए साधना नहीं समर्पण जरूरी है। यही सत्य की खोज है।





28 अगस्त 2024 को राइजिंग भास्कर में प्रकाशित

जिंदगी-मौत

$L+L=L=$ पुनर्जन्म, $D+D=L=$ पुनर्जन्म, $D+L=D=$ मोक्ष, $L-L=L=$ पुनर्जन्म, $L/D=D$ बीमारी, $D/D=L$ रोगमुक्त और $D \times L=D$ मौत

यही जीवन का सत्य है : पंकजप्रभु

(प्रख्यात जैन संत परमपूज्य पंकजप्रभु महाराज का चातुर्मास 17 जुलाई से एक अज्ञात स्थान पर अपने आश्रम में शुरू हुआ था। 17 जुलाई से 2 अगस्त तक पंकजप्रभु महाराज ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिए। पंकजप्रभु अपने चैतन्य से अवचेतन को मथने में लगे हैं। वे और संतों की तरह प्रवचन नहीं देते। उन्हें जो भी पात्र व्यक्ति लगता है उसे वे मानसिक तरंगों के जरिए प्रवचन देते हैं। उनके पास ऐसी विशिष्ट सिद्धियां हैं, जिससे वे मानव मात्र के हृदय की बात जान लेते हैं और उनसे संवाद करने लगते हैं। उनका मन से मन का कनेक्शन जुड़ जाता है और वे अपनी बात रखते हैं। वे किसी प्रकार का दिखावा नहीं करते। उनका असली स्वरूप आज तक किसी ने नहीं देखा। उनके शिष्यों ने भी उन्हें आज तक देखा नहीं है। क्योंकि वे अपने सारे शिष्यों को मानसिक संदेश के जरिए ही ज्ञान का झरना निःसृत करते हैं। उनकी अंतिम बार जो तस्वीर हमें मिली थी उसी का हम बार-बार उपयोग कर रहे हैं क्योंकि स्वामीजी अपना परिचय जगत को फिलहाल देना नहीं चाहते। उनका कहना है कि जब उचित समय आएगा तब वे जगत को अपना स्वरूप दिखाएंगे। वे शिष्यों से घिरे नहीं रहते। वे साधना भी बिलकुल एकांत में करते हैं। वे क्या खाते हैं? क्या पीते हैं? किसी को नहीं पता। उनकी आयु कितनी है? उनका आश्रम कहां है? उनके गुरु कौन है? ऐसे कई सवाल हैं जो अभी तक

रहस्य बने हुए हैं। जो तस्वीर हम इस आलेख के साथ प्रकाशित कर रहे हैं और अब तक प्रकाशित करते आए हैं एक विश्वास है कि गुरुदेव का इस रूप में हमने दर्शन किया है। लेकिन हम दावे के साथ नहीं कह सकते हैं कि परम पूज्य पंकजप्रभु का यही स्वरूप हैं। बहरहाल गुरुदेव का हमसे मानसिक रूप से संपर्क जुड़ा है और वे जगत को जो प्रवचन देने जा रहे हैं उससे हूबहू रूबरू करवा रहे हैं। जैसा कि गुरुदेव ने कहा था कि वे चार महीने तक रोज एक शब्द को केंद्रित करते हुए प्रवचन देंगे। चूंकि गुरुदेव 3 अगस्त से 26 अगस्त तक 24 तीर्थंकरों की साधना में लीन थे इसलिए उनके प्रवचन नहीं हुए थे। उन्होंने 27 अगस्त को साधना शब्द पर प्रवचन दिए। अब उनके लिए मानसिक तरंगों से प्रवचन देना कठिन हो रहा है। ब्रह्मांड के सिस्टम में ऐसा व्यवधान आ गया है कि अब वे हमसे मानसिक तरंगों से लंबे समय तक संपर्क नहीं कर पाएंगे। इसलिए आज उन्होंने समय से पहले ही हमसे संपर्क किया और अंतिम प्रवचन दिया जो जीवन और मौत और अन्य तमाम महत्वपूर्ण रहस्यों पर है। उन्होंने कई फार्मूले बताए हैं जिनका मूल्यांकन आने वाला समय करेगा। स्वामीजी का कहना है कि अब वे अनिश्चितकाल के लिए मौन में जा रहे हैं और जब जरूरत होगी तब फिर से संपर्क करेंगे। आज उन्होंने बड़ी मुश्किल से हमसे मानसिक संपर्क किया और कुछ फार्मूले बताए। इन फार्मूलों पर विज्ञान क्या सोचता है यह हमें नहीं पता मगर जितने दिन भी स्वामीजी ने हमसे मानसिक रूप से संपर्क किया वह यात्रा यादगार रही। आज 28 अगस्त 2024 को स्वामी अंतिम प्रवचन के रूप में 'जिंदगी-मौत' शब्द पर अपने प्रवचन दे रहे हैं।)

गुरुदेव के आज अंतिम प्रवचन, वे बोल रहे हैं-

जिंदगी और मौत। कहने को दो शब्द हैं। मगर दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। इसलिए आज के प्रवचन में दोनों शब्दों पर एक साथ अपनी बात रखेंगे। हे मानव, जिंदगी और मौत को समझने में हमारे मनीषियों और हमारे ऋषि मुनियों ने जीवन खपा दिया। श्रीकृष्ण ने कहा था- जीवन मुझसे शुरू होता है और मुझमें ही समा जाता है। इस धरती पर मौत शाश्वत सत्य है। मृत्यु आनी तय है फिर भी हे मानव धरती पर पाप से लोग डरते नहीं हैं।

इस धरती पर जो आता है उसकी मृत्यु निश्चित है। पृथ्वी की आयु भी निश्चित है। देह की आयु भी निश्चित है। देह से जो परे है अनादि शक्ति है उसकी आयु की गणना अनंत होती है। उसे मात्रक में नहीं मापा जा सकता। लेकिन हम ब्रह्मांड की आयु भी निर्धारित कर सकते हैं। पृथ्वी की आयु भी निर्धारित की जा सकती है। आगे हम अध्यात्म और साइंस के कुछ फार्मूले बताएंगे जो हमने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से खोज निकाले हैं। विज्ञान इससे सहमत है या नहीं हम नहीं जानते यह विज्ञान पर ही छोड़

देते हैं। सबसे पहले जीवन और मौत को परिभाषित करते हैं।

जीवन क्या है? एक ज्योत। चेतना और अवचेतना नहीं। क्योंकि अवचेतना और बाद में चेतना ने ब्रह्मांड और मल्टी ब्रह्मांड को जन्म दिया। जीव, जीवन या कहे मनुष्य एक छोटी सी इकाई है। उसे जीव भी कहा जा सकता है। यानी जीव पैदा होता है तो उसका मरना भी तय है। सबसे पहले तो यह जानना जरूरी है कि जीव में जीवन कैसे आता है? यानी जीवन का फार्मूला क्या है? जीवन को हम अंग्रेजी में लाइफ कहते हैं। लाइफ यानी एल और जीवन का दूसरा अर्थ ज्योति है यानी प्रकाश है यानी लाइट है यानी वो भी एल। तो कह सकते हैं जीवन का सूत्र है एल। एल का अर्थ है लाइफ यानी लाइट। इसे हम आगे फार्मूलों में परिभाषित करेंगे। कुल मिलाकर कह सकते हैं जीवन के लिए एल जरूरी है। अब बात करते हैं मृत्यु की। मृत्यु यानी डेड यानी डी यानी अंधकार यानी डार्क यानी डी। यानी मृत्यु का सूत्र है डी। अब हमारे पास जीवन और मृत्यु यानी लाइट और अंधकार यानी एल और डी दो सूत्र हैं। आगे हम जीवन और मृत्यु यानी लाइट और डार्क के फार्मूले बताएंगे।

अब बात करते हैं पृथ्वी की आयु की। पृथ्वी की आयु कितनी होती है। पृथ्वी की आयु हमेशा घन में होती है। और यूनिवर्स यानी ब्रह्मांड और मल्टी ब्रह्मांड की आयु हमेशा घनमूल में होती है। हमारी पृथ्वी की आयु की गणना अगर हम करना चाहें तो उसकी गणना अलग-अलग कालखंडों को बांट कर भी करना चाहे तो वह घन में होगी। जैसे आदि मानव काल, पाषाण काल, विकास काल या जो भी कालखंड हम अपनी सुविधा अनुसार बनाना चाहें। उसी तरह हम देवताओं के अनुसार कालखंड बनाना चाहें तो उसके अनुसार भी विभाजन कर सकते हैं। हालांकि कालखंड का विभाजन काल्पनिक है। इसको केवल अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। ये सभी कालखंड घन में विभाजित होते हैं। जबकि ब्रह्मांड का कालखंड हमेशा घनमूल में होता है। अब बात करते हैं चेतना का। जिसे सी कहेंगे। और अवचेतना जिसे एनसी कहेंगे। चेतना हमेशा धनात्मक रूप से बढ़ती जाती है। और अवचेतना ऋणात्मक रूप से घटती जाती है। जब अवचेतना ऋणात्मक रूप से घटती जाती है तो एक समय में वह चेतना में यानी धनात्मक स्थिति में आ जाती है। यही इस सृष्टि और ब्रह्मांड के निर्माण होने का फार्मूला है और इस चराचर जगत में जो उथलफुथल निर्माण, सृजन, विघटन, बाढ़, सूखा, महामारी जो भी विकार आते हैं उसका यही फार्मूला है। यानी चेतना और अवचेतना के आधार पर इसका निर्धारण होता है। इस ब्रह्मांड और मल्टी ब्रह्मांड में चेतना और अवचेतना। यानी चेतना और अवचेतना दोनों स्थित हमारे यूनिवर्स और मल्टीयूनिवर्स

में मौजूद है। यूनिवर्स में जीवन भी होता है। और मृत्यु भी।

अब आते हैं जीवन और मौत के फार्मूलों पर। यानी एल और डी के फार्मूलों पर। एल को हम आगे जीवन के रूप में परिभाषित करेंगे और मृत्यु को डी के रूप में अभिव्यक्त करेंगे।

हे मानव जीवन और मृत्यु के निम्न फार्मूले हैं-

जीवन यानी लाइट यानी लाइट = L

मृत्यु यानी डेड यानी डार्क = D

L+L=L= पुनर्जन्म

D+D=L= पुनर्जन्म

D+L=D= मोक्ष

L-L=L= पुनर्जन्म

L/D=D बीमारी

D/D=L रोगमुक्त

DxL=D मौत

यानी लाइट को लाइट से जोड़ेंगे तो परिणाम लाइट यानी प्रकाश आएगा। यानी जीवन आएगा। इसी तरह अंधकार को अंधकार से जोड़ेंगे तो परिणाम प्रकाश आएगा यानी मृत्यु के बाद भी जीवन रहेगा। अब अगर हम अंधकार को प्रकाश से जोड़ेंगे तो परिणाम अंधकार आएगा। यानी आदमी का फिर जन्म नहीं होगा। उसे मोक्ष मिल जाएगा। इसी तरह प्रकाश में से प्रकाश घटाएंगे तो प्रकाश मिलेगा यानी फिर से जीवन होगा। कुल मिलाकर इस चराचर जगत में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मोक्ष प्राप्त करना है तो अंधकार और प्रकाश को जोड़ना पड़ेगा। यानी अंधकार यानी पापों के बाद पुण्यकर्म यानी प्रकाश को जोड़ना पड़ेगा। अगर प्रारंभ में अंधकार यानी पाप भी कर लिए मगर बाद में पुण्य का जोड़ मिल गया तो मोक्ष मिल जाएगा। ऐसे व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होगा। अगर प्रकाश में अंधकार का भाग देंगे तो बीमारी आएगी। और अगर अंधकार में अंधकार का भाग देंगे तो व्यक्ति रोगमुक्त हो जाएगा। इसी तरह अंधकार को प्रकाश से गुणा करेंगे तो मौत हो जाएगी।

अगर जन्म जन्मान्तर की व्याख्या करना चाहें तो हमें वर्गमूल निकालना पड़ेगा।

यानी पूर्ण प्रकाश का वर्गमूल निकालेंगे तो हमेशा प्रकाश आएगा। ऐसे व्यक्ति का बार-बार जन्म होता जाएगा। यदि हम अंधकार का वर्गमूल निकालेंगे तो अंततः प्रकाश आएगा। ऐसे व्यक्ति का कुछ अंतराल बाद पुनर्जन्म होता है। यानी बार-बार जन्म और कुछ अंतराल बाद जन्म का फार्मूला निकालना हो तो हमें प्रकाश और अंधकार का वर्गमूल निकालना पड़ेगा। अब बात करते हैं हमारी पृथ्वी की कालगणना की। पृथ्वी की कालगणना हमेशा घन में होती है। मानी लीजिए पृथ्वी के किसी कालखंड की गणना 343 अरब साल है। यानी 343 का आंकड़ा है। तो इसे $7 \times 7 \times 7 = 343$ करेंगे। सात यहां पर ऐसे कालखंड को इंगित करते हैं जहां विशेष घटनाएं घटित हुई हैं। इसी तरह अगर हम यूनिवर्स और मल्टी यूनिवर्स की कालखंड की गणना करेंगे तो उसे घनमूल में निकालना पड़ेगा। मान लीजिए किसी एक ब्रह्मांड की आयु 216 खरब ट्रिलियन साल है। तो इस 216 के आंकड़े को $2 \times 2 \times 2 \times 3 \times 3 \times 3 = 216$ के रूप में गणना करेंगे। यहां पर 2 और 3 के अंक ब्रह्मांड में छोटे-छोटे मिली ब्रह्मांड और बीच में धूमकेतु की आयु और ग्रहों की आयु होगी। इसी तरह की गणना मल्टी यूनिवर्स की आयु निर्धारित करेंगे तो घनमूल निकालना पड़ेगा। अब एक बात और महत्वपूर्ण बताना चाहेंगे। वो यह कि अगर किसी यूनिवर्स यानी किसी ग्रह पर पहुंचना चाहें तो उस दूरी को भी हमें घनमूल प्रकाश वर्ष में डिवाइड करनी पड़ेगी। एक ही गति से हम उस यूनिवर्स यानी ब्रह्मांड तक नहीं पहुंच सकते। हमें यूनिवर्स में पहुंचने के लिए कुल दूरी को घनमूल प्रकाश वर्ष में डिवाइड कर फिर पहुंचना होगा। अब हम बात करते हैं चेतना और अवचेतना यानी C और NC सी और एनसी से ही यूनिवर्स और मल्टीयूनिवर्स का निर्माण हुआ है। यहां यह बताना जरूरी है कि सी और एनसी प्रकाश और डार्क से भिन्न है।

NC/NC=CxCxCxCxC= ब्रह्मांड और मल्टी ब्रह्मांड की उत्पत्ति

हे मानव। अध्यात्म और साइंस को जब एक साथ करने की कोशिश करते हैं तो कुछ सूत्र हाथ लगते हैं। हालांकि अध्यात्म के सूत्र और विज्ञान के सूत्र कई बार मेल नहीं खाते हैं। मगर अध्यात्म की ताकत विज्ञान की ताकत से अनंत गुणा ज्यादा होती है। क्योंकि इतना तय है कि इस यूनिवर्स को चलाने वाली कोई शक्ति है। और वो शक्ति है स्वामी डम डम डीकानंद। जो इस समय कहां है कोई नहीं जानता। वो हमेशा अव्यक्त इसी इसी स्थिति में रहती है। श्रीकृष्ण सहित त्रिदेव और अन्य देव उनके सहायक है। इस यूनिवर्स में कहां क्या घटित हो रहा है इसे कोई नहीं जानता। मगर स्वामी डम डम डीकानंद जो इस यूनिवर्स और मल्टी यूनिवर्स के निर्माता है और हमेशा अव्यक्त स्थिति में रहते हुए भी व्यक्त होते रहते हैं। वे भी कहीं किसी जगह से इस यूनिवर्स और

मल्टीयूनिवर्स और संपूर्ण चराचर जगत का संचालन करते हैं। हे मानव। बात जीवन और मृत्यु की हो रही थी। तो आज हमने जीवन और मृत्यु के साथ कई जरूरी बातें जानी। ये सारी बातें हमने अपने आध्यात्मिक समर्पण से जानी हैं। ये समर्पण उस दिव्य शक्ति श्रीकृष्ण के प्रति हम नित्य करते हैं। श्रीकृष्ण ही इस समय हमें यह दिव्य ज्ञान दे रहे हैं।





श्री डी.के. पुरोहित की पुस्तक 'रहस्यमयी संत' अपने शीर्षक से ही पाठक के मन में जिज्ञासा, कौतूहल और आकर्षण उत्पन्न करती है। 'रहस्य' और 'संत'—ये दोनों शब्द भारतीय मानस में गहरे बसे हुए हैं। एक ओर संत परंपरा आस्था, साधना, करुणा और लोककल्याण से जुड़ी रही है, वहीं दूसरी ओर रहस्य का तत्व पाठक को अनदेखे, अनजाने और अदृश्य संसार की ओर खींचता है।

यह कृति केवल किसी संत या रहस्यमयी घटना का वर्णन मात्र नहीं लगती, बल्कि मनुष्य के विश्वास, जिज्ञासा और सत्य की खोज को भी स्पर्श करती प्रतीत होती है।

श्री पुरोहित लंबे समय तक पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं, इसलिए उनकी लेखनी में खोजी दृष्टि, सामाजिक अनुभव और यथार्थपरक अवलोकन स्वाभाविक रूप से दिखाई देता है। 'रहस्यमयी संत' जैसी पुस्तक में पत्रकार की तथ्यपरक दृष्टि और साहित्यकार की कल्पनाशीलता दोनों का मेल पाठक को एक विशिष्ट अनुभव दे सकता है।

के बी व्यास

सी ई ओ, लोटस ब्लूम पब्लिकेशंस

डी. के. पुरोहित



जन्म : 24 अप्रैल 1972, जैसलमेर
पिता : श्री बालकिशन पुरोहित
माता : श्रीमती लीला देवी पुरोहित
धर्मपत्नी : श्रीमती राखी पुरोहित
पुत्र : श्रेयस पुरोहित
शिक्षा : बी.कॉम
संप्रति : राइजिंग भास्कर डॉट कॉम में ग्रुप एडिटर
अनुभव : दैनिक भास्कर जोधपुर में 23 साल जर्नलिस्ट
राजनीति करंट मैगजीन में राजस्थान का ब्यूरो प्रमुख
हिन्दुस्तान का कई वर्षों तक जैसलमेर रिपोर्टर
शुक्रवार मैगजीन में कई वर्षों तक रिपोर्टर।

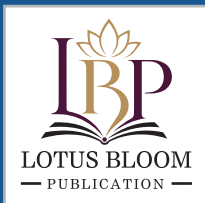
साहित्य : मैं रहूँ ना रहूँ (गीत संग्रह), मुट्ठी भर तावड़ो (राजस्थानी बाल कविता संग्रह)। आकाशवाणी से नाटक और कहानियों का प्रसारण। मधुमती, साहित्य अमृत, आउटलुक, हिन्दुस्तान सहित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का नियमित प्रकाशन। 700 से ज्यादा बाल कविताएं और 700 से ज्यादा गीत लिखे। पत्र-पत्रिकाओं में रेखांकन का प्रकाशन।

पुरस्कार : पत्रकारिता में जैसलमेर जिला प्रशासन से सम्मानित। कमलेश्वर साहित्य सम्मान।

प्रेरणा : धर्मपत्नी श्रीमती राखी पुरोहित की प्रेरणा से सृजन जारी।

संपर्क : 2 जी 27, मधुवन हाउसिंग बोर्ड, शिव मन्दिर के सामने वाली गली, जोधपुर-342005 (राजस्थान)

मोबाइल : 9783414079



लोटस ब्लूम पब्लिकेशन

4 स 21 प्रताप नगर, जोधपुर,
राजस्थान, पिन-342003, भारत
मोबाइल :+ 971505872314 (दुबई)
+ 917568333120(भारत)

ISBN: 978-81-688-0540-8



9 788168 805408

| email: lotusbloompublication@gmail.com |

₹ 399.00